मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

पहली बार : ३०००

चौदह आना

अक्तूबर, १९५०

निवेदन

आदरणीय श्री महादेवभाअीके मित्रों, प्रशंसकों और संबंधियों वगैराकी अैसी भावना थी कि अुनका चरित्र लिखा जाकर प्रकाशित होना चाहिये। नवजीवन संस्थाके संचालकोंका खयाल था कि अुनका चरित्र संस्थाको लिखवाकर प्रकाशित करना चाहिये। मेरी अपनी निजी भावना भी अिस मामलेमें पहलेसे ही गहरी थी। अिसलिअे सन् '४२ के आन्दोलनकी खलबली मिट जानेके बाद नवजीवन प्रकाशन मंदिरका काम फिरसे व्यवस्थित रूपमें शुरू होनेके साथ ही महादेवभाअीका चरित्र लिखनेमें अुपयोगी होनेवाली सामग्री अिकट्ठी करनेके लिअे अेक अपील नवजीवनकी तरफसे महादेवभाअीके मित्रों और अुनके सपर्कमें आनेवाले व्यक्तियोंमें घुमाअी गअी थी। अिसके सिवाय अुनके अपने रिश्तेदारोंसे अुनके बचपनकी, शिक्षाकालकी और अिसी तरहकी दूसरी जानकारी अिकट्ठी करनेकी कोशिश की गअी थी। अिस सारे प्रयत्नके परिणामस्वरूप नवजीवनके पास अच्छी खासी मात्रामें अुपयोगी सामग्री अिकट्ठी हो गअी थी।

चरित्र-लेखनका अनुभव अैसा है कि सिर्फ सामग्री जमा करके अुसे कालक्रमके अनुसार ठीक करके रख देनेसे ही चरित्र तैयार नहीं हो जाता। मिली हुअी तमाम सामग्रीका समभावसे और साथ ही अन्तरकी अुमंगसे अुपयोग करनेवाला चरित्रकार

मिलना चाहिये। अिसके लिअे कोशिश करने पर भी आज तक यह हो नहीं सका था। अन्तमें अनायास ही अैसा संजोग आ मिला कि महादेवभाअीके चरित्रके रूपमें काम आ सकने वाला अेक निबंध तैयार हो गया।

पिछले दो वर्षसे महादेवभाअीकी डायरीका संपादन श्री नरहरिभाअी कर रहे हैं। अुसके चौथे भागकी प्रस्तावनाके रूपमें जोड़नेके लिअे महादेवभाअीके चरित्रकी झाँकी करानेवाला लेख लिखनेका अुन्होंने विचार किया। अिसके लिअे अुन्होंने नवजीवनकी अिकट्ठी की हुअी सामग्रीमें से ज़रूरी सामग्री देखी और महादेवभाअी जबसे गांधीजीके साथ हुअे, तब तकके अुनके जीवनका मज़ेदार और साथ ही शिक्षाप्रद वर्णन तेअीस खंडोंमें लिख डाला। पूर्वचरितकी यह रचना देखनेके बाद मेरा खयाल हुआ कि डायरीके चौथे भागके साथ प्रस्तावनाके रूपमें जोड़नेके बजाय अिसे स्वतन्त्र पुस्तकके तौर पर प्रकाशित करना ज्यादा अच्छा है। श्री नरहरिभाअी अिस बातसे सहमत हो गये और अिस तरहसे गांधीजीके जीवन और साथ ही अुनके हर काममें अेकरूप हो जानेवाले भारतके अेक प्रतिभाशाली सेवक, स्वराज्यकी लड़ाअीके शहीद, गुजराती भाषाके परम अुपासक, अंग्रेज़ीके समर्थ लेखक, अंग्रेज़ी और गुजराती वृत्त-विवेचनमें अनोखी रीति आरम्भ करनेवाले पत्रकार, आदर्श पुत्र, आदर्श पति और वैसे ही वत्सल पिता और अिन सबसे अधिक अेक असाधारण विनम्र साधकके जीवन-निर्माणका निकटका परिचय गुजराती जनताको पूर्वचरितकी पुस्तकके रूपमें प्राप्त हो रहा है।

श्री महादेवभाओका व्यक्तित्व कओ पहलुओंवाला था। जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें अुनकी गहरी दिलचस्पी थी। गांधीजीकी अुन्होंने अनन्य निष्ठासे सेवा की थी और हिन्दुस्तानके अुनके पच्चीस सालके कार्यकालसे साथ वे अेकरूप हो गये थे। अिस तरह बेशक अुन्होंने स्वराज्यकी, हिन्दुस्तानकी और गुजरातकी असाधारण सेवा की। अिस समर्थ और साथ ही अखंड अुद्योगी साधकका विस्तृत चरित्र गुजरातकी भावी संतानोंके लिअे अत्यन्त शिक्षाप्रद और साथ ही प्रेरक साबित होनेवाला है। अिसलिअे मुझे आशा है कि अैसा चरित्र तैयार करनेकी लगन गुजरातके किसी न किसी भाषा-सेवकमें पैदा हुअे बिना नहीं रहेगी। अैसे अुत्साही चरित्रकारके लिअे यह पूर्वचरित और महादेवभाओके बारेमें लिखे गये अनेक लेख, अुनके अपने बेशुमार लेख, अुनकी डायरियाँ और अुनके जीवन संबंधी सूक्ष्म जानकारी, आदि कओ तरहकी सामग्री नवजीवन संस्थाके पास तैयार रखी है। अिस सारी विस्तृत सामग्रीका लगनके साथ अुपयोग करके अपनी लेखनीको सार्थक बनानेवाला अुत्साही महादेव-चरित्रकार गुजरातको मिल जाय, अिस आशाके साथ कुछ निजी जैसा मालूम होनेवाला यह निवेदन मैं समाप्त करता हूँ। साथ ही मेरे और महादेवभाओके अनेक मित्रों, संबंधियों और प्रशंसकोंकी अभिलाषा थोड़े बहुत अंशमें भी पूरी कर देनेके संयोग जुटा देनेमें सहायक होनेवाले सभी लोगोंका मैं आभार मानता हूँ।

नवजीवन, — जीवणजी डा० देसाओ
अहमदाबाद, ५-६-'५०

प्रस्तावना

महादेवभाअीके जीवनके पच्चीस पच्चीस वर्षके दो भाग स्वाभाविक रूपमें ही हो जाते हैं: अेक १८९२ से १९१७ तकका पूर्व भाग; और दूसरा, १९१७ से १९४२ तकका अुत्तर भाग। यहाँ मैंने पूर्व भागका ही चरित्र दिया है। अलबत्ता, महादेवभाअीके पिताजीके देहान्त तकका विवरण देनेमें अुत्तर भागकी शुरू-शुरूकी कुछ तफ़सील आ गअी है।

महादेवभाअीके चाचाके लड़के श्री छोटूभाअीसे भाअी चन्द्रशंकरने महादेवभाअीके पूर्व जीवनकी कुछ बातें लिख ली थीं। अुनका और श्री वैकुण्ठभाअीने अपने जो संस्मरण लिखकर भेजे हैं, अुनका अिस पुस्तकके लिखनेमें मैंने छूटसे अुपयोग किया है। अिस अवसर पर मैं अिन तीनों मित्रोंका ऋण स्वीकार करता हूँ।

५-६-'५०

नरहरि परीख

महादेवभाईका पूर्वचरित

१

मातापिता

महादेवभाओीका जन्म सन् १८९२ ओी० के जनवरी मासकी पहली तारीखको सूरत जिलेके ओलपाड़ तालुकेके सरस नामक गाँवमें हुआ था। पिताजी प्राथमिक पाठशालामें शिक्षकके तौर पर वहीं नौकरी करते थे। अुनका असल गाँव दिहेण था। वह भी ओलपाड़ तालुकेमें सूरतसे दस मील दूर है। महादेवके पहले तीन भाओी माताके दूध न आनेसे बचपनमें ही गुज़र गये थे। महादेव पेटमें आये, तब पिताजीने पहलेसे ही अिनकी माँको दवा वगै़रा देकर तन्दुरुस्ती कायम रखनेकी तजवीज़ की थी। अुनकी माँने अुस वक्त सरससे अेक आध मील दूर सिंहनाथ महादेवका जो मन्दिर था, अुसकी पूजा करनेका नियम ले रखा था और संकल्प कर रखा था कि लड़का होगा तो महादेव नाम रखूँगी और लड़की होगी तो पार्वती रखूँगी। राशी परसे भाओी महादेवका नाम 'ज' पर आया था, परन्तु अिस संकल्पके अनुसार माताने महादेव नाम रखा और वही कायम रहा।

महादेवका कुटुम्ब बिरादरीमें टीलवाके नामसे मशहूर था। बाप-दादा भक्त और तिलक-छापा करनेवाले थे, अिसलिअे टीलवा (तिलकवाले) कहलाते होंगे। कुटुम्बकी अेक शाखा

दिहेणसे ओलपाड़ जाकर रही थी और वहाँ अुसने ज़मीन और रुपया अच्छी तरह जुटा लिया। अिसलिअे बिरादरीमें यह शाखा ज्यादा कुलीन मानी जाती थी। देसाअीगिरीका बड़ा भाग अिनको मिला हुआ था। दिहेणवालोंको तो देसाअीगिरी नाम-मात्रकी मिली थी और वे बड़ी गरीब स्थितिमें रहे। महादेवके दादा सूरभाअी भगत गणपतिके भक्त थे। वे गणेश चतुर्थीके दिन गणपतिका बड़ा अुत्सव करते, जुलूस निकालते और भोज भी देते। यद्यपि अिनकी ग़रीबी अैसी थी कि सालमें कोअी-कोअी दिन अैसे भी जाते, जब घरमें खानेको कुछ भी नहीं होता। फिर भी गणपतिका अुत्सव करनेमें वे कभी न चूके। सूरभाअीके चार लड़के थे। अुनमेंसे बड़ा बचपनमें ही गुज़र गया था। बाकीके हरिभाअी, बापूभाअी और खण्डूभाअी तीनोंको छोटी अुमरमें ही छोड़कर सूरभाअी गुजर गये थे। दादीजी घरमें गाय रखती थीं। अुसका दूध-घी बेचकर अुन्होंने तीनों लड़कोंको गाँवकी पाठशालामें पढ़ाया। घरकी जो थोड़ी ज़मीन थी अुसके लिअे वे अेक बैल रखतीं और दूसरोंके बैलकी मददसे अुसमें खेती करतीं। परन्तु जब बैल मर गया तो अेक साल दोनों भाअियों — हरिभाअी और बापूभाअीने खुद हलमें जुतकर अुसे कास्त किया और अुसमें धान बोया। अितने पर भी, रुपया सस्ता होनेके कारण आज जैसी महँगाअी है, वैसी अुस समय नहीं थी और लोगोंमें भी खुद मेहनत करने और मितव्ययिताके सद्गुण सजीव थे। अिसलिअे जैसा जीवन-कलह आजकल पाया जाता है, वैसा अुस समय नहीं था। गरीब हालतके माने जानेवाले लोगोंको भी भरपेट अच्छी खुराक मिल जाती थी।

आजकल जैसी दूसरी अैश-आरामकी बातें नहीं थीं। जब बापूभाअीको गुजराती सातवीं पुस्तक पास करनेके बाद चार रुपयेकी नौकरी मिली, तब तो घरमें आनन्द ही आनन्द हो गया। बादमें अुन्हें बारह रुपयेकी पटवारीकी नौकरी मिली। पिताश्री हरिभाअी सातवीं पुस्तक पास करनेके बाद अहमदाबादके ट्रेनिंग कॉलेजमें छात्रके रूपमें भरती हुअे और सीनियर ट्रेंड हो गये। छोटे चाचा खंडूभाअीने राजपीपला रियासतमें सर्वेयरकी नौकरी ली। बादमें वे जूनागढ़ रियासतकी नौकरीमें चले गये और अन्त तक वहीं रहे।

पिताश्री हरिभाअीको सीनियर होनेके बाद तुकवाड़ा (तालुका पारड़ी) में नौकरी मिली, बादमें सरस (तालुका ओलपाड़) में, जहाँ महादेवका जन्म हुआ था। महादेवकी माँका नाम जमनाबहन था। ये दिहेण गाँवकी ही थीं। पीहरकी स्थिति ससुरालसे अच्छी कही जा सकती थी। वे बुद्धिमें और स्वभावमें बड़ी तेज थीं। सारा गाँव अुनका लिहाज रखता था। महादेवके शरीरका गठन पिताजी जैसा था। रूप माताजीका मिला था। महादेवको सात बरसका छोड़कर सन् १८९९ के जून मासमें लगभग ३२ वर्षकी अुमरमें माताजी गुजर गअीं। माता-पिता दोनों महादेवभाअीको बहुत लाड़से रखते थे और कोअी धमकाता तो माताजी अुससे लड़तीं और कहतीं कि बच्चोंको डरानेसे वे बिगड़ जाते हैं। महादेवभाअीने माताजीके और कोअी संस्मरण तो मुझसे नहीं कहे, परन्तु ये बातें अुन्होंने मेरे सामने बहुत बार कीं कि माताजी अुन्हें बहुत लाड़से पालती थीं और पिताजीको जो पन्द्रह रुपिया मासिक वेतन मिलता था,

अुसमें भी अुन्हें बादशाहकी तरह रखती थीं। महादेवको यह खास तौर पर याद रह गया था कि माताजी कअी बार हलुवा बनाकर अुन्हें खिलाती थीं।

पिताजी स्वभावसे बड़े सरल और सीधे थे। किसी भी मनुष्य पर विश्वास करनेमें अुन्हें देर नहीं लगती थी। अुनकी स्मरणशक्ति और बुद्धि बड़ी तीव्र थी और अक्षर मोतीके दाने जैसे थे। ट्रेनिंग कॉलेजमें जब वे पढ़ते थे, अुस समयके बारीक कागज पर सुन्दर अक्षरोंमें लिखे हुअे नोट बादके छात्र अपनी पढ़ाअीके लिअे ले जाते थे। अुनका और बापूभाअीका गणित बहुत ही अच्छा था। अुसमें भी बापूभाअी तो गणितमें अितने होशियार थे कि महादेव कहते थे कि अुन्हें अवसर मिला होता, तो वे सीनियर रेंग्लर हो सकते थे। अंग्रेजी कॉलेजोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थी और हाअीस्कूलके मास्टर छुट्टियोंमें गाँव आते, तब मुश्किल सवाल अुन्हें पूछने आते और वे हल करके दे देते। अेक बार घर पर कोअी भोज था। अुसके लिअे सूरतसे दो गाड़ियाँ भरकर सामान लाये थे। अुसकी सूची हरेक सामानकी कीमत और वजन या नगके साथ अुन्होंने घर आकर जबानी ही लिखाअी थी। हरिभाअी रातको सब लड़कोंको अिकट्ठा करके जबानी ही हिसाब-किताब और गणित सिखाते थे। शिक्षकके रूपमें अपने सारे कार्यकालके दरमियान अुन्होंने किसी दिन भी गणितकी पुस्तक हाथमें नहीं ली थी। तमाम रीतियाँ मौखिक ही सिखाते और नये-नये सवाल बनाकर जबानी ही लिखाते थे। महादेवको भी गणितकी निपुणता विरासतमें मिली थी। बहीखाता अुन्होंने कभी बाकायदा नहीं सीखा था,

परन्तु अुसकी बारीकीमें वे आसानीसे घुस सकते थे। बापूके साथ पिछले समयमें अुन्हें सहायक मिल गये थे, परन्तु बहुत वर्षों तक जब वे अकेले ही बापूका काम करते थे, तब सारे खर्चका और रास्तेमें मिले हुअे दानों और भेंटोंका पाअी-पाअीका हिसाब रखते थे।

पिताजीका गुजराती वाचन बहुत विशाल था। अच्छी-अच्छी सभी गुजराती पुस्तकें वे ध्यानसे पढ़ लेते। संस्कृत नहीं आती थी, परन्तु रामायण, महाभारत तथा गीता और अुपनिषद् टीकाओंके साथ अुन्होंने पढ़ लिये थे। भजन गानेका भी अुन्हें बहुत शौक था। तड़के ही अुठकर बिछौनेमें बैठे-बैठे भजन गाते रहते। शिक्षण-शास्त्रमें भी अुनकी बड़ी गहरी दिलचस्पी थी। वे आश्रममें आते तब हमारे साथ राष्ट्रीय शिक्षाकी चर्चा करते, हमारी कक्षाअें देखने आते, अुस विषय पर हमें सूचनाअें देते और हमारे साथ बातें करते। गँवअी-गाँवमें प्राथमिक पाठशालाके साधारण शिक्षकके रूपमें कामकी शुरुआत करके वे अहमदाबादके वीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेजके हेडमास्टर पदसे निवृत्त हुअे। अिस तरह पुरानी लकीर पर ही शिक्षकके रूपमें अुमर भर काम करने पर भी अुन्हें नअी दृष्टि समझने और स्वीकार करनेमें देर नहीं लगती थी। जिस समय बड़े-बड़े शिक्षा-शास्त्रियोंमें भी यह खयाल मौजूद था कि विद्यार्थियोंको मारा जाय तभी वे अच्छे बनेंगे और पढ़ेंगे, अुस वक्त भी वे कभी विद्यार्थियोंको नहीं मारते थे, बल्कि अपने प्रेमसे विद्यार्थियोंके दिल जीत लेते थे। सूरत जिलेके गाँवोंमें गाली देनेका रिवाज बहुत होने पर भी —आज भी है— वे कभी गाली नहीं देते थे। अितना ही नहीं,

अुसमें भी अुन्हें बादशाहकी तरह रखतीं थीं। महादेवको यह .खास तौर पर याद रह गया था कि माताजी कअी बार हलुवा बनाकर अुन्हें खिलाती थीं।

पिताजी स्वभावसे बड़े सरल और सीधे थे। किसी भी मनुष्य पर विश्वास करनेमें अुन्हें देर नहीं लगती थी। अुनकी स्मरणशक्ति और बुद्धि बड़ी तीव्र थी और अक्षर मोतीके दाने जैसे थे। ट्रेनिंग कॉलेजमें जब वे पढ़ते थे, अुस समयके बारीक कागज पर सुन्दर अक्षरोंमें लिखे हुअे नोट बादके छात्र अपनी पढ़ाअीके लिअे ले जाते थे। अुनका और बापूभाअीका गणित बहुत ही अच्छा था। अुसमें भी बापूभाअी तो गणितमें अितने होशियार थे कि महादेव कहते थे कि अुन्हें अवसर मिला होता, तो वे सीनियर रेंगलर हो सकते थे। अंग्रेजी कॉलेजोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थी और हाअीस्कूलके मास्टर छुट्टियोंमें गाँव आते, तब मुश्किल सवाल अुन्हें पूछने आते और वे हल करके दे देते। अेक बार घर पर कोअी भोज था। अुसके लिअे सूरतसे दो गाड़ियाँ भरकर सामान लाये थे। अुसकी सूची हरेक सामानकी कीमत और वजन या नगके साथ अुन्होंने घर आकर जबानी ही लिखाअी थी। हरिभाअी रातको सब लड़कोंको अिकट्ठा करके जबानी ही हिसाब-किताब और गणित सिखाते थे। शिक्षकके रूपमें अपने सारे कार्यकालके दरमियान अुन्होंने किसी दिन भी गणितकी पुस्तक हाथमें नहीं ली थी। तमाम रीतियाँ मौखिक ही सिखाते और नये-नये सवाल बनाकर जबानी ही लिखाते थे। महादेवको भी गणितकी निपुणता विरासतमें मिली थी। बहीखाता अुन्होंने कभी बाकायदा नहीं सीखा था,

परन्तु अुसकी बारीकीमें वे आसानीसे घुस सकते थे। बापूके साथ पिछले समयमें अुन्हें सहायक मिल गये थे, परन्तु बहुत वर्षों तक जब वे अकेले ही बापूका काम करते थे, तब सारे खर्चेका और रास्तेमें मिले हुअे दानों और भेंटोंका पाअी-पाअीका हिसाब रखते थे।

पिताजीका गुजराती वाचन बहुत विशाल था। अच्छी-अच्छी सभी गुजराती पुस्तकें वे लगनसे पढ़ लेते। संस्कृत नहीं आती थी, परन्तु रामायण, महाभारत तथा गीता और अुपनिषद् टीकाओंके साथ अुन्होंने पढ़ लिये थे। भजन गानेका भी अुन्हें बहुत शौक था। तड़के ही अुठकर बिछौनेमें बैठे-बैठे भजन गाते रहते। शिक्षण-शास्त्रमें भी अुनकी बड़ी गहरी दिलचस्पी थी। वे आश्रममें आते तब हमारे साथ राष्ट्रीय शिक्षाकी चर्चा करते, हमारी कक्षाओं देखने आते, अुस विषय पर हमें सूचनाओं देते और हमारे साथ बातें करते। गँवअी-गाँवमें प्राथमिक पाठशालाके साधारण शिक्षकके रूपमें कामकी शुरुआत करके वे अहमदाबादके वीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेजके हेडमास्टर पदसे निवृत्त हुअे। अिस तरह पुरानी लकीर पर ही शिक्षकके रूपमें अुमर भर काम करने पर भी अुन्हें नअी दृष्टि समझने और स्वीकार करनेमें देर नहीं लगती थी। जिस समय बड़े-बड़े शिक्षा-शास्त्रियोंमें भी यह खयाल मौजूद था कि विद्यार्थियोंको मारा जाय तभी वे अच्छे बनेंगे और पढ़ेंगे, अुस वक्त भी वे कभी विद्यार्थियोंको नहीं मारते थे, बल्कि अपने प्रेमसे विद्यार्थियोंके दिल जीत लेते थे। सूरत जिलेके गाँवोंमें गाली देनेका रिवाज बहुत होने पर भी — आज भी है — वे कभी गाली नहीं देते थे। अितना ही नहीं,

मिलना चाहिये। अिसके लिअे कोशिश करने पर भी आज तक यह हो नहीं सका था। अन्तमें अनायास ही अैसा संजोग आ मिला कि महादेवभाअीके चरित्रके रूपमें काम आ सकने वाला अेक निबंध तैयार हो गया।

पिछले दो वर्षसे महादेवभाअीकी डायरीका संपादन श्री नरहरिभाअी कर रहे हैं। अुसके चौथे भागकी प्रस्तावनाके रूपमें जोड़नेके लिअे महादेवभाअीके चरित्रकी झाँकी करानेवाला लेख लिखनेका अुन्होंने विचार किया। अिसके लिअे अुन्होंने नवजीवनकी अिकट्ठी की हुअी सामग्रीमें से ज़रूरी सामग्री देखी और महादेवभाअी जबसे गांधीजीके साथ हुअे, तब तकके अुनके जीवनका मज़ेदार और साथ ही शिक्षाप्रद वर्णन तेअीस खंडोंमें लिख डाला। पूर्वचरितकी यह रचना देखनेके बाद मेरा खयाल हुआ कि डायरीके चौथे भागके साथ प्रस्तावनाके रूपमें जोड़नेके बजाय अिसे स्वतन्त्र पुस्तकके तौर पर प्रकाशित करना ज्यादा अच्छा है। श्री नरहरिभाअी अिस बातसे सहमत हो गये और अिस तरहसे गांधीजीके जीवन और साथ ही अुनके हर काममें अेकरूप हो जानेवाले भारतके अेक प्रतिभाशाली सेवक, स्वराज्यकी लड़ाअीके शहीद, गुजराती भाषाके परम अुपासक, अंग्रेज़ीके समर्थ लेखक, अंग्रेज़ी और गुजराती वृत्त-विवेचनमें अनोखी रीति आरम्भ करनेवाले पत्रकार, आदर्श पुत्र, आदर्श पति और वैसे ही वत्सल पिता और अिन सबसे अधिक अेक असाधारण विनम्र साधकके जीवन-निर्माणका निकटका चय गुजराती जनताको पूर्वचरितकी पुस्तकके रूपमें प्राप्त है।

श्री महादेवभाओीका व्यक्तित्व कओी पहलुओंवाला था। जीवनके अनेक क्षेत्रोंमें अुनकी सजीव दिलचस्पी थी। गांधीजीकी अुन्होंने अनन्य निष्ठासे सेवा की थी और हिन्दुस्तानके अुनके पच्चीस सालके कार्यकालके साथ वे ओेकरूप हो गये थे। अिस तरह बेशक अुन्होंने स्वराज्यकी, हिन्दुस्तानकी और गुजरातकी असाधारण सेवा की। अिस समर्थ और साथ ही अखंड अुद्योगी साधकका विस्तृत चरित्र गुजरातकी भावी संतानोंके लिओे अत्यन्त शिक्षाप्रद और साथ ही प्रेरक साबित होनेवाला है। अिसलिओे मुझे आशा है कि ओेसा चरित्र तैयार करनेकी लगन गुजरातके किसी न किसी भाषा-सेवकमें पैदा हुओे बिना नहीं रहेगी। ओेसे अुत्साही चरित्रकारके लिओे यह पूर्वचरित और महादेवभाओीके बारेमें लिखे गये अनेक लेख, अुनके अपने बेशुमार लेख, अुनकी डायरियाँ और अुनके जीवन संबंधी सूक्ष्म जानकारी, आदि कओी तरहकी सामग्री नवजीवन संस्थाके पास तैयार रखी है। अिस सारी विस्तृत सामग्रीका ध्यानके साथ दृपयोग करके अपनी लेखनीको सार्थक बनानेवाला अुत्साही महादेव-चरित्रकार गुजरातको मिल जाय, अिस आशाके साथ कुछ निजी जैसा मालूम होनेवाला यह निवेदन मैं समाप्त करता हूँ। साथ ही मेरे और महादेवभाओीके अनेक मित्रों, संबंधियों और प्रशंसकोंकी अभिलाषा थोड़े बहुत अंशमें भी पूरी कर देनेके संतोष दूआ देनेमें सहायक होनेवाले सभी लोगोंका मैं आभार मानता हूँ।

नवजीवन,
अहमदाबाद, ५-६-'५०

जीवणजी डा० देसाओी

प्रस्तावना

महादेवभाअीके जीवनके पच्चीस पच्चीस वर्षके दो भाग स्वाभाविक रूपमें ही हो जाते हैं: अेक १८९२ से १९१७ तकका पूर्व भाग; और दूसरा, १९१७ से १९४२ तकका अुत्तर भाग। यहाँ मैंने पूर्व भागका ही चरित्र दिया है। अलबत्ता, महादेवभाअीके पिताजीके देहान्त तकका विवरण देनेमें अुत्तर भागकी शुरू-शुरूकी कुछ तफ़सील आ गअी है।

महादेवभाअीके चाचाके लड़के श्री छोटूभाअीसे भाअी चन्द्रशंकरने महादेवभाअीके पूर्व जीवनकी कुछ बातें लिख ली थीं। अुनका और श्री वैकुण्ठभाअीने अपने जो संस्मरण लिखकर भेजे हैं, अुनका अिस पुस्तकके लिखनेमें मैंने छूटसे अुपयोग किया है। अिस अवसर पर मैं अिन तीनों मित्रोंका ऋण स्वीकार करता हूँ।

५-६-'५०

नरहरि परीख

महादेवभाईका पूर्वचरित

दिहेणसे ओलपाड़ जाकर रही थी और वहाँ अुसने ज़मीन और रुपया अच्छी तरह जुटा लिया। अिसलिअे बिरादरीमें यह शाखा ज्यादा कुलीन मानी जाती थी। देसाअीगिरीका बड़ा भाग अिनको मिला हुआ था। दिहेणवालोंको तो देसाअीगिरी नाम-मात्रकी मिली थी और वे बड़ी गरीब स्थितिमें रहे। महादेवके दादा सूरभाअी भगत गणपतिके भक्त थे। वे गणेश चतुर्थीके दिन गणपतिका बड़ा अुत्सव करते, जुलूस निकालते और भोज भी देते। यद्यपि अिनकी ग़रीबी अैसी थी कि सालमें कोअी-कोअी दिन अैसे भी जाते, जब घरमें खानेको कुछ भी नहीं होता। फिर भी गणपतिका अुत्सव करनेमें वे कभी न चूके। सूरभाअीके चार लड़के थे। अुनमेंसे बड़ा बचपनमें ही गुज़र गया था। बाकीके हरिभाअी, बापूभाअी और खण्डूभाअी तीनोंको छोटी अुमरमें ही छोड़कर सूरभाअी गुजर गये थे। दादीजी घरमें गाय रखती थीं। अुसका दूध-घी बेचकर अुन्होंने तीनों लड़कोंको गाँवकी पाठशालामें पढ़ाया। घरकी जो थोड़ी ज़मीन थी अुसके लिअे वे अेक बैल रखतीं और दूसरोंके बैलकी मददसे अुसमें खेती करतीं। परन्तु जब बैल मर गया तो अेक साल दोनों भाअियों — हरिभाअी और बापूभाअीने खुद हलमें जुतकर अुसे काश्त किया और अुसमें धान बोया। अितने पर भी, रुपया सस्ता होनेके कारण आज जैसी महँगाअी है, वैसी अुस समय नहीं थी और लोगोंमें भी खुद मेहनत करने और मितव्ययिताके सद्गुण सजीव थे। अिसलिअे जैसा जीवन-कलह आजकल पाया जाता है, वैसा अुस समय नहीं था। गरीब हालतके माने जानेवाले लोगोंको भी भरपेट अच्छी खुराक मिल जाती थी।

आजकल जैसी दूसरी अैश-आरामकी बातें नहीं थीं। जब बापूभाअीको गुजराती सातवीं पुस्तक पास करनेके बाद चार रुपयेकी नौकरी मिली, तब तो घरमें आनन्द ही आनन्द हो गया। बादमें अुन्हें बारह रुपयेकी पटवारीकी नौकरी मिली। पिताश्री हरिभाअी सातवीं पुस्तक पास करनेके बाद अहमदाबादके ट्रेनिंग कॉलेजमें छात्रके रूपमें भरती हुअे और सीनियर ट्रेंड हो गये। छोटे चाचा मंछूभाअीने राजपीपला रियासतमें सर्वेयरकी नौकरी ली। बादमें वे जूनागढ़ रियासतकी नौकरीमें चले गये और अन्त तक वहीं रहे।

पिताश्री हरिभाअीको सीनियर होनेके बाद सुरवाड़ा (ताल्लुका पारडी) में नौकरी मिली, बादमें सरस (ताल्लुका ओलपाड़) में, जहाँ महादेवका जन्म हुआ था। महादेवकी माँका नाम जमनाबहन था। ये दिहेण गाँवकी ही थीं। पीहरकी स्थिति ससुरालसे अच्छी कही जा सकती थी। वे बुद्धिमें और स्वभावमें बड़ी तेज थीं। सारा गाँव अुनका लिहाज रखता था। महादेवके शरीरका गठन पिताजी जैसा था। रूप माताजीका मिला था। महादेवको सात बरसका छोड़कर सन् १८९९ के जून मासमें लगभग ३२ वर्षकी अुमरमें माताजी गुजर गअीं। माता-पिता दोनों महादेवभाअीको बहुत लाड़से रखते थे और कोअी धमकाता तो माताजी अुससे लड़तीं और कहतीं कि बच्चोंको डरानेसे वे बिगड़ जाते हैं। महादेवभाअीने माताजीके और कोअी संस्मरण तो मुझसे नहीं कहे, परन्तु ये बातें अुन्होंने मेरे सामने बहुत बार कीं कि माताजी अुन्हें बहुत लाड़से पालती थीं और पिताजीको जो पन्द्रह रुपिया मासिक वेतन मिलता था,

अुसमें भी अुन्हें बादशाहकी तरह रखती थीं। महादेवको यह .खास तौर पर याद रह गया था कि मानाजी कअी बार हलुवा बनाकर अुन्हें खिलाती थीं।

पिताजी स्वभावसे बड़े सरल और सीधे थे। किसी भी मनुष्य पर विश्वास करनेमें अुन्हें देर नहीं लगती थी। अुनकी स्मरणशक्ति और बुद्धि बड़ी तीव्र थी और अक्षर मोतीके दाने जैसे थे। ट्रेनिंग कॉलेजमें जब वे पढ़ते थे, अुस समयके बारीक कागज पर सुन्दर अक्षरोंमें लिखे हुअे नोट बादके छात्र अपनी पढ़ाअीके लिअे ले जाते थे। अुनका और बापूभाअीका गणित बहुत ही अच्छा था। अुसमें भी बापूभाअी तो गणितमें अितने होशियार थे कि महादेव कहते थे कि अुन्हें अवसर मिला होता, तो वे सीनियर रेंगलर हो सकते थे। अंग्रेजी कॉलेजोंमें पढ़नेवाले विद्यार्थी और हाअीस्कूलके मास्टर छुट्टियोंमें गाँव आते, तब मुश्किल सवाल अुन्हें पूछने आते और वे हल करके दे देते। अेक बार घर पर कोअी भोज था। अुसके लिअे सूरतसे दो गाड़ियाँ भरकर सामान लाये थे। अुसकी सूची हरेक सामानकी कीमत और वजन या नगके साथ अुन्होंने घर आकर जबानी ही लिखाअी थी। हरिभाअी रातको सब लड़कोंको अिकट्ठा करके जबानी ही हिसाब-किताब और गणित सिखाते थे। शिक्षकके रूपमें अपने सारे कार्यकालके दरमियान अुन्होंने किसी दिन भी गणितकी पुस्तक हाथमें नहीं ली थी। तमाम रीतियाँ मौखिक ही सिखाते और नये-नये सवाल बनाकर जबानी ही लिखाते थे। महादेवको भी गणितकी निपुणता विरासतमें मिली थी। बहीखाता अुन्होंने कभी बाकायदा नहीं सीखा था,

परन्तु अुसकी बारीकीमें वे आसानीसे घुस सकते थे। बापूके साथ पिछले समयमें अुन्हें सहायक मिल गये थे, परन्तु बहुत वर्षों तक जब वे अकेले ही बापूका काम करते थे, तब सारे खर्चका और रास्तेमें मिले हुअे दानों और भेंटोंका पाअी-पाअीका हिसाब रखते थे।

पिताजीका गुजराती वाचन बहुत विशाल था। अच्छी-अच्छी सभी गुजराती पुस्तकें वे ध्यानसे पढ़ लेते। संस्कृत नहीं आती थी, परन्तु रामायण, महाभारत तथा गीता और अुपनिषद् टीकाओंके साथ अुन्होंने पढ़ लिये थे। भजन गानेका भी अुन्हे बहुत शौक था। तड़के ही अुठकर बिछौनेमें बैठे-बैठे भजन गाते रहते। शिक्षण-शास्त्रमें भी अुनकी बड़ी गहरी दिलचस्पी थी। वे आश्रममें आते तब हमारे साथ राष्ट्रीय शिक्षाकी चर्चा करते, हमारी कक्षाअें देखने आते, अुस विषय पर हमें सूचनाअें देते और हमारे साथ बातें करते। गँवअी-गाँवमें प्राथमिक पाठशालाके साधारण शिक्षकके रूपमें कामकी शुरुआत करके वे अहमदाबादके वीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेजके हेडमास्टर पदसे निवृत्त हुअे। अिस तरह पुरानी लकीर पर ही शिक्षकके रूपमें अुमर भर काम करने पर भी अुन्हें नअी दृष्टि समझने और स्वीकार करनेमें देर नहीं लगती थी। जिस समय बड़े-बड़े शिक्षा-शास्त्रियोंमें भी यह खयाल मौजूद था कि विद्यार्थियोंको मारा जाय तभी वे अच्छे बनेंगे और पढ़ेंगे, अुस वक्त भी वे कभी विद्यार्थियोंको नहीं मारते थे, बल्कि अपने प्रेमसे विद्यार्थियोंके दिल जीत लेते थे। सूरत जिलेके गाँवोंमें गाली देनेका रिवाज बहुत होने पर भी — आज भी है — वे कभी गाली नहीं देते थे। अितना ही नहीं,

बल्कि अुनकी मौजूदगीमें और कोअी गाली देता, तो अुस पर वे बड़े बिगड़ते थे। जिस-जिस गाँवमें शिक्षक होकर गये, अुन सारे गाँवों पर अुन्होंने बहुत अच्छा असर डाला था और अुनका प्रेम संपादन किया था। साथ ही वे अितने स्वतंत्र प्रकृतिके और स्वाभिमानी थे कि अिन्स्पेक्टरोंको भी अुनके साथ अदबका बर्ताव करना पड़ता था। अहमदाबादमें हुअी अेक घटना मुझे अच्छी तरह याद रह गअी है। छुट्टियोंमें ट्रेनिंग कॉलेजकी विद्यार्थिनियोंका अेक दस-बारह दिनका छोटासा प्रवास वहाँकी अेंग्लो-अिंडियन लेडी सुपरिटेंडेंटने तय किया था। जानेके पहले दिन अुसके किसी मित्रने अुसे मिलने बुला लिया। अिसलिअे अुसने हरिभाअीको चिट्ठी लिखकर सूचना दी कि विद्यार्थिनियोंके साथ कल प्रवासमें आपको जाना है। वे भिन्ना गये। तुरंत ही लेडी सुपरिटेंडेंटको जवाब दिया कि विद्यार्थिनियोंके साथ प्रवासमें जानेका काम मेरा नहीं है। मैं अिस अुम्रमें अैसी भाग-दौड़ नहीं कर सकता। अितना ही नहीं, बल्कि आपका साथ जाना ही शोभा देता है। यह आपका फर्ज़ है। वह बेचारी क्षुब्ध हो गअी और जानेके लिअे कहने पर खेद प्रकट किया। अिस प्रकार किसी भी प्रसंग पर जहाँ वे जाते, वहाँ अुनके स्वाभिमानीपन और संस्कारिताका प्रभाव पड़े बिना न रहता। अुनका चमकता हुआ चेहरा और प्रेमभरी आँखें आज मन:चक्षुके सामने खड़ी हो जाती हैं।

गरीब परन्तु संस्कारी और बुद्धिमान पिताके होशियार लड़केकी शिक्षा जिस ढंगसे होती है, अुस ढंगसे महादेवकी शिक्षा हुअी। माताजी छोटी अुम्रमें गुजर गअी थीं, अिसलिअे दादीजी अुनकी देखभाल करती थीं। गुजरातीकी पाँच पुस्तकें (हमारे समयमें गुजराती पाँच पूरी किये बाद अंग्रेज़ीमें जा सकते थे) पिताके पास जिस गाँवमें अुनकी नौकरी होती, अुस गाँवमें पढ़े। बादमें यह विचार करनेका अवसर आया कि अंग्रेज़ी कहाँ पढ़ें। अुस समय सारे ओलपाड़ ताल्लुकेमें अेक भी अंग्रेज़ी स्कूल नहीं था। नज़दीकसे नज़दीकका अंग्रेज़ी स्कूल सूरतमें ही था। वहाँ पिताजीके परमस्नेही श्री चन्दूलाल घेलाभाअी डॉक्टर शाहपोरमें रहते थे। अुनके घर पर महादेवको रखा जा सकता था। परन्तु अितने छोटे लड़केको सूरत जैसे शहरमें छोड़नेका पिताका जी नहीं हुआ। (अिन चन्दूलाल डॉक्टरका, जिन्हें महादेवके साथ मैं भी डॉक्टर काका कहता था, महादेवके प्रति अितना प्रेम और ममत्व था कि सन् १९२० में जब महादेवको आश्रममें मोतीझरा निकला, तब सूरतसे आश्रममें आकर वे डेढ़ेक महीना रहे थे और दवा देनेके अलावा खुद सेवा-शुश्रूषा भी करते थे।)

दिहेणमें हुआ संस्कार-सिंचन

अिसी बीच दिहेणमें गाँवके ही अेक निवासी नॉन मैट्रिक श्री मणिशंकर नामके औदीच ब्राह्मणने अंग्रेज़ी पाठशाला खोली।

अपने ही गाँवमें स्कूलकी सुविधा हो गअी, तो महादेवको वहीं सन् १९०१ में अंग्रेजी पढ़ने बैठा दिया। अुस समय महादेवको ९ बरस पूरे होकर दसवाँ चल रहा था। ये शिक्षक बहुत मेहनती और कर्तव्यनिष्ठ परन्तु क्रोधी थे। जरा-जरासी बातमें गुस्सा हो जाते थे। शरारती और चंचल विद्यार्थियोंको पीलूकी छड़ी मँगवाकर मारने लगते, तो छड़ी खतम होने पर ही छोड़ते। पाँच-छः लड़के तो, जिनमें महादेवके चाचाके लड़के छोटूभाअी भी थे, पीलूकी छड़ीकी भी परवाह नहीं करते थे; अिसलिअे अुनके तो सिर पकड़कर दीवारसे टकराते और दीवारके साथ नाक रगड़वाते। फिर भी ये मास्टर कितने सरल और प्रेमी थे, अिसका अेक अुदाहरण देता हूँ। नाथू नामक अपने अेक भानजेको पढ़नेके लिअे अुन्होंने अपने घर पर रखा था। कितनी ही छड़ियाँ मारने पर भी अुसकी आँखसे आँसूकी बूँद नहीं गिरती थी और मुँह भी नहीं अुतरता था। दीवारके साथ टकरानेके प्रयोग करके मास्टर थक जाते तो चिल्लाते: "पढ़ लिया, पढ़ लिया! तेरा बाप मन्दिरमें बरसी-चंदन घिस-घिस कर मर गया और तू क्या पढ़ेगा!" थोड़े वर्ष बाद प्लेग फैल गया और अुसमें यह भानजा चल बसा। अुस वक्त अिस मास्टरने ज़मीन पर लोटकर छोटे बच्चेकी तरह विलाप किया: "अरे मेरे नाथू! मैंने तुझे कितना मारा था! मुझे क्या पता था कि तू अिस तरह मर जायगा!" अुनके कोअी संतान नहीं थी। घरमें स्त्री पर बिगड़ते, तब भी अैसा ही नाटक करते, परन्तु दो घड़ी बाद दिलमें कुछ न रखते। महादेव तो मास्टरकी यह मारपीट देखकर ही काँपते थे, यद्यपि अुन्हें अिस मास्टरकी मार खानेका कभी मौका नहीं पड़ा था।

यह मास्टर अंग्रेजीके तीन दर्जे तक तीनों कक्षाअें साथ-[illegible]
चलाते थे। महादेव पहले दर्जेमें थे, तब अपना पाठ तो अु[illegible]
आता ही था, परन्तु अुसके अलावा दूसरे और तीसरे दर्जेके पा[illegible]
चलते हुअे सुनते, तो अुन परसे दूसरे और तीसरे दर्जेके पाठ[illegible]
अुन्हें अुन कक्षाओंके विद्यार्थियोंसे भी अच्छे आते थे। अिसलिअे
शिक्षक अुन पर बहुत प्रसन्न रहते। बादमें जब महादेवभाअीको
अंग्रेजी भाषा और साहित्यके विद्वानकी हैसियतसे प्रसिद्धि मिली,
तब वे अिस बात पर बड़ा गर्व करते कि अुन्होंने महादेवको
अंग्रेजी पढ़ाना शुरू किया था। महादेव भी अुनके प्रति हमेशा
कृतज्ञताका भाव रखते थे। अपनी कोअी भी पुस्तक अुन्हें भेंट
स्वरूप भेजनेमें नहीं चूकते थे। अपनी संपादन की हुअी
'अर्जुनवाणी' भेंटमें भेजी, तो अुसमें लिखा था : 'आँग्ल-भाषाके
आद्य गुरुको सप्रणाम भेंट'। अुत्तरावस्थामें श्री मणिशंकरभाअी
रांदेर रहने चले गये थे। महादेवका सूरत जाना होता,
तब अक्सर रांदेर जाकर अुनसे मिल आते। यह स्कूल श्री
मणिशंकरभाअीने लगभग ३० साल चलाया, अिसलिअे अिस
स्कूलको और अुसके मास्टरको देखनेका लाभ मुझे भी मिला
था। अेक बार मैं दिहेण गया और मास्टरको खबर लगी
कि महादेवका अेक दोस्त अहमदाबादसे आया है, तो अुन्होंने
अंग्रेजीका वर्ग बड़े चावसे लिया। कुछ अंग्रेजी शब्दोंकी
व्युत्पत्तियाँ, जो महादेवसे ही जानी होंगी, विद्यार्थियोंको समझाने
लगे और धातुओंसे रूढ़ अर्थ किस तरह निकलते हैं, सो
विद्यार्थियोंको अच्छे ढंगसे सिखाया। अुस समय स्कूलमें विद्यार्थियोंकी
संख्या घट गअी थी और तीनों दर्जे छुट-अकेले नहीं चल[illegible]

सकते थे, अिसलिअे अेक ही वर्गको तीन साल तक पढ़ाते और पहले दर्जेमें भर्ती किये हुअे विद्यार्थियोंके तीसरा दर्जा पास कर लेने पर नये विद्यार्थियोंको पहले दर्जेमें लेते थे। १ रुपिया महीना फीस लेते थे। ३०से ३५ विद्यार्थियोंका अुनका वर्ग रहता था। अिस फीसकी आमदनीसे अुनका गुजर होता था। गाँवके बहुतसे लड़के अुनके ही कारण अंग्रेजी पढ़ पाये थे।

रातको भोजनके बाद कक्षाके विद्यार्थियोंको पढ़नेके लिअे घर बुलाते। घण्टेक भर धर्मकी बातें करते, संध्या रटवाते और नत्थूराम शर्माके किये हुअे अुसके अर्थ समझाते और अुसके बाद पाठ समझाते। यह अुनका क्रम था।

मोहल्लेमें अेक जीवणराम वैद्य नामके सज्जन रहते थे। अुनके बच्चे अिन्हें दाजी कहते थे। अिसलिअे गाँवके सभी बच्चे अुन्हें दाजी कहते थे। ये वैद्य कुछ विद्वानोंके सम्पर्कमें आये हुअे थे और लड़कोंको धर्मकी तरफ मोड़नेका अुन्हें शौक था। वे गाँवके बच्चोंको अिकट्ठा करके अुपनिषदोंकी नचिकेता, अुपमन्यु और अुद्दालक वगैराकी बातें जबानी सुनाते।

अिसके सिवाय चौमासेमें झड़ी लगती, तब खेतमें काम पर जाया नहीं जाता। अुस समय बूढ़े लोग हस्तलिखित रामायण, महाभारत या भागवत पढ़ते। चौमासा पूरा होने पर कथावाचक लोग आते और महाभारतमें से कथायें सुनाते; और रामलीलावाले आकर रामायणके नाटक द्वारा लोगोंको रामकथाका रस लगाते।

गाँवमें अेक सूरभाअी शंकरजी नामके बिना डिग्रीवाले डॉक्टर थे। अुन्हें संगीतका शौक था। अुनके पास महादेव संगीत सीखने जाते थे और थोड़ेसे राग अुन्होंने सीख भी लिये थे।

महादेवको सात बरसकी अुम्रमें जनेअू दिया गया था। अुस समय अुनकी माँ जिन्दा थीं। चाचाके दो लड़कोंको भी, जो महादेवसे जरा बड़े थे, साथ ही जनेअू दिया गया था। अुन मणिशंकर मास्टरने ही गायत्री मंत्र रटवाया था। मणिशंकरजीके अेक भाअी अंकलेश्वरमें मास्टर थे। वे संस्कृत अच्छी जानते थे। गरमीकी छुट्टियोंमें जब वे दिहेण आते, तब रातको लड़कोंको लेकर बैठते और कवि कालिदासके काव्योंमें से श्लोक लेकर समझाते तथा संस्कृत साहित्यकी बातें कहते। अिस प्रकार दिहेणमें डेढ़ेक बरसमें महादेवने तीन अंग्रेजी पुस्तकें पूरी कीं। अिस बीचमें धर्म और साहित्यके संस्कारका अुनको अच्छा सिंचन मिला।

जूनागढ़के अनुभव

अिसके बाद यह विचार हुआ कि आगे अंग्रेजी पढ़नेका क्या किया जाय। छोटे चाचा जूनागढ़में थे, वहाँ भेजना तय हुआ। बड़े चाचा बापूभाअी ध्वार्डी नामके गाँवमें पटवारी थे। वहाँसे दाँडी बंदरगाह अेक मील था। दाँडी और घोघाके बीच नावकी रोजाना पैसेन्जर सर्विस थी। अुसका ठेकेदार परिचित था। वह किराया नहीं लेगा, अिसलिअे घोघा तक मुफ्त जाना हो सकता था। अतः नावमें ही घोघा जाना तय किया। चाचाके लड़के छोटूभाअी वगैराको भी साथ ही भेजा। घासलेटकी रोशनीमें पढ़नेसे आँखें बिगड़ जायेंगी, यह समझकर घरसे अरंडीके तेलका अेक डब्बा भरकर दे दिया। समुद्रमें कै या बेचैनी न हो, अिसके लिअे खानेको सोंठ और गुड़की गोलियाँ बना दीं। और रास्तेके दो दिनके लिअे खाना बाँध दिया। दो-पहरको भोजन करके दिहेणसे रवाना हुअे।

१९०२ का आखिरी भाग या १९०३ की शुरुआत होगी। चाची, चाचाके दो लड़के, महादेव और राँदेरके अेक सज्जनकी, जो जूनागढ़में सर्वेयर थे, गृहिणी और लड़की, अितने आदमी थे। तीन बजेके करीब दाँडी पहुँचे। दाँडीसे नाव शामको चली। आम तौर पर नाव दाँडीसे बारह घण्टेमें घोघा पहुँचती थी। परन्तु रास्तेमें अनुकूल हवा न चली, अिसलिअे दूसरे दिन सवेरे पहुँचनेके बजाय नाव शामको घोघा पहुँची। घरसे पीनेके पानीका घड़ा भर लिया था, परन्तु नावमें चढ़ते समय घड़ा फूट गया और माँझियोंका पानी पीयें तो भ्रष्ट हो जायें, अिसलिअे ठेठ घोघा पहुँचकर ही सबने पानी पीया। घोघामें रातको धर्मशालामें सो रहे। सवेरे ताँगे करके वहाँसे बारह मील दूर भावनगर पहुँचे। भावनगरमें पहली ही बार हाथी देखा। अिससे हम सब लड़के खूब खुश हुअे थे, अैसा महादेव कहते थे। हरगोविन्दभाअी, जिन्हें दक्षिणामूर्ति संस्थाने बड़े भैयाके नामसे मशहूर किया है, भावनगरमें स्टेशन मास्टर थे। ये हरगोविन्दभाअी, रामनारायण पाठकके पिता विश्वनाथभाअी और जूनागढ़वाले खंडूभाअी चाचा, ये सब नत्थूराम शर्माके शिष्य होनेके कारण गुरुभाअी थे। हरगोविन्दभाअीने भावनगरमें अिनका स्वागत किया और अेक छोटा डब्बा रिज़र्व करके रातकी गाड़ीमें बिठला दिया। धोला और जेतलसर जंकशनों पर गाड़ी बदलकर दूसरे दिन दो बजे जूनागढ़ पहुँचे।

दिहेणवाले मास्टरने सादा कागज पर सर्टिफिकेट लिख दिया था कि अितना पढ़े हैं। अिसलिअे परीक्षा लेकर जूनागढ़ हाअीस्कूलमें चौथीमें बैठा दिये गये। चाची जरा सख्त थीं।

तीनों लड़कोंको सवेरे पाँच बजे अुठातीं। चाचा नत्थूराम शर्माके
शिष्य थे, अिसलिअे नित्यकर्मसे निपटकर, नहा-धोकर, पहला काम
संध्या करनेका रहता"। फिर कुंड पर जाकर अपने-अपने कपड़े
धो लाना, घर आकर दाल चावल बीन देना और बादमें
पढ़नेके लिअे बैठना। महादेवभाअीने कभी कपड़े धोये नहीं
थे और पानीमें घुसे नहीं थे। कुंडकी सीढ़ियों पर अुतरनेमें भी
डर लगता था। नीचे अुतरनेमें अितने घबराते थे कि बैठे-बैठे
सीढ़ियोंसे अुतरते थे। अिसलिअे छोटूभाअी अिन्हें अूपर ही
बिठाये रखते और खुद कपड़े धो देते। चाचीको अिसका
पता लगा तो नाराज हुअीं कि खुद कपड़े क्यों नहीं धोता।
फिर तो छोटूभाअीने कुंडमें डुबकी लगाना शुरू कर दिया।
महादेव रोते-रोते घर जाकर कहते हैं: 'छोटू कुअेंमें गिर पड़ा है
और डूब जायगा।' चाची दौड़ती हुअी कुअें पर पहुँची तो
वहाँ छोटूभाअीको तैरता देखकर बोलीं: "मुअेको तैरना आता
दीखता है।" बात चाचाके पास गअी, तो अुन्होंने लड़कोंको
कुंड पर कपड़े धोनेके लिअे भेजनेका कार्यक्रम बन्द कर दिया।
अुन्होंने तय किया कि चाची कुअें पर कपड़े धोये और लड़के
बारी-बारीसे पानी खींच दें। महादेवने कभी पानी नहीं खींचा
था। बारी आती तो हाथ लालचट हो जाते और मुँह रुआँसा
हो जाता। अिसलिअे छोटूभाअीने अुन्हें पानी खींचनेसे छुट्टी
दिलवा दी और यह तय हुआ कि दाल-चावल वे अकेले बीनें।
वहाँके कॉलेजके अहातेमें अेक आम था। अुसकी कच्ची केरी
तोड़कर लड़के खा जाते थे। अेक दिन छोटूभाअी अूपर चढ़े
हुअे थे। वे तोड़-तोड़कर केरी डालते और महादेव और दूसरे

भाअी नीचे खड़े-खड़े खाते। अितनेमें रखवाला आ गया। अुसने नीचे खड़े हुअे अिन दोनोंको पकड़ लिया। छोटूभाअीको पकड़ने आम पर चढ़ा, तो वह कूदकर भाग गये। अुन दोनोंको हेड मास्टरके सामने पेश किया। अुन्होंने दोनोंका चार-चार आने जुर्माना किया। मंछूभाअी चाचा जुर्माना माफ करानेके लिअे हेड मास्टरके पास गये। परन्तु अुन्होंने कहा: "मैं जानता हूँ ये लड़के शरारती नहीं हैं, मगर पकड़े गये हैं अिसलिअे मुझे नियमकी खातिर जुर्माना करना ही पड़ेगा"। जूनागढ़में अेक बरस रहे। अुस सारे सालमें हररोज संध्या, अेकादशी और दूसरे व्रतके दिनों पर लाजमी अुपवास, हर पखवाड़े अरण्डीके तेलका जुलाब, यह कार्यक्रम नियमित चला। नत्थूराम शर्मा जूनागढ़ आये हों, तब अुनके दर्शनके लिअे जाना होता। वे पूछते: "क्यों, दोनों समयकी संध्या करते हो?" अिस प्रकार जूनागढ़में थोड़े कड़े अनुशासनका अनुभव हुआ।

३

सूरत हाओीस्कूलमें

अितनेमें सिपाहीजीकी बदली अडाजण गाँवमें हो गअी। वह ताप्तीके अुस पार सूरतसे कुछ अढ़ाअी मील दूर था। अिसलिअे अडाजणमें रहकर सूरत हाअीस्कूलमें जा सकते हैं, यह सोचकर महादेव और अुनके चाचाके दोनों लड़कों यानी तीनों भाअियोंको चौथी पूरी होनेके बाद जूनागढ़से बुलवा लिया। यहाँ १९०३ के अन्तमें महादेव अंग्रेजीकी पाँचवीं कक्षामें भर्ती हुअे। श्री जीवणलाल दीवान गणित सिखाते और रोज पहला समय अुनका रहता। रोज अडाजण गाँवसे आना पड़ता और जाड़ेके दिन थे, अिसलिअे कक्षामें पहुँचनेमें पन्द्रह-बीस मिनटकी देर हो जाती। अिसके लिअे दीवान मास्टर अिन्हें बैंच पर खड़ा करते। महादेव चुपचाप खड़े रहते। परन्तु दीवान मास्टरने थोड़े ही दिनोंमें देख लिया कि लड़का बहुत सीधा है और पढ़नेमें तो बड़ा ही होशियार है, अिसलिअे आठ दस दिनमें ही बैंच पर खड़ा रखना बन्द कर दिया। महादेव बहुत बार कहा करते थे कि दीवान मास्टर भूमिति बहुत अच्छी पढ़ाते थे। वह अब तक याद है। नवम्बर १९०६ में पन्द्रह बरस भी पूरे न होने पाये थे कि वे सूरत हाअीस्कूलसे मेट्रिक पास हो गये।

अडाजणके जीवनका आनन्दमय पहलू

अडाजण गाँवके तीन वर्षके निवासकालमें अच्छे-बुरे अनेक अनुभव हुअे। रोज अडाजणसे सूरत जाना-आना पड़ता

था, अिसलिअे खेतोंमें घूमनेको खूब मिला। जाते वक्त तो सीधे स्कूल जाते, मगर लौटते समय खेतोंमें सैर करते-करते घर आते। अडाजण सूरतके पास होनेके कारण वहाँ चावल और जुवारके खेतोंमें लोग बिना पानी पिलाये सागभाजी पैदा कर लेते थे। अुसमें खास तौर पर सूरती सेमकी फलियाँ होती थीं। साथ ही नदीकी रेतका लाभ भी अुन्हें मिलता था; अुसमें बैंगन, मिर्च और फूट वगैरा फल होते थे। प्रसिद्ध राँदेरी बेरके पेड़ोंके झुंडके झुंड रास्तेमें आते। घरसे पुड़ियामें नमक ले जाते और ककड़ी और फूट नमकके साथ खाते-खाते और घूमते-घामते देरसे घर पहुँचते। अप्रैलके महीनेमें सुबहका स्कूल लगता तब बेरका मौसम होता। स्कूल जाते समय बेर बीनकर ले जाते, सो शहरके अपने यार-दोस्तोंको बाँट देते और लौटते समय बेर खाते-खाते साढ़े बारह अेक बजे घर पहुँचते। सेमकी फलियोंके मौसममें गट्ठड़ की गट्ठड़ फलियाँ सूरत बिकने जातीं। महादेव वगैरा भाअी किसानोंको फलियाँ बीननेमें कभी-कभी मदद देते थे। जब बीनने जाते तब दस सेर फली अुन्हें मिलती।

ताप्तीके पुल पर अुस समय टोलकी चौकी थी। जाने-आनेकी खाली आदमीसे अेक पाअी और पोटली वालेसे दो पाअी ली जाती थीं। स्कूल जानेवालोंको और सरकारी नौकरोंको टोलका ठेकेदार मुफ्त जाने देता था। परन्तु रविवारके दिन या मेलेमें ये लोग सूरत जाते तब टोलवाला टोकता। छोटूभाअी तो पहलेसे ही शरारती थे। वे अुससे कहते: "छुट्टीके दिन स्कूल नहीं बुलाया, अिसकी तुझे क्या खबर? हमारी पाअी लेकर तेरा ठेका पूरा हो जायगा?" वहाँसे दिहेण सात-आठ

मील पड़ता था। वहाँ कभी-कभी पैदल जाते। सूरतके पुलसे रांदेर तकके तांगेवाला दो पैसे लेता। मगर ये दो पैसे ये कभी खर्च नहीं करते थे। यह विचार करते कि दो पैसेका मावा या चना लेकर खायेंगे। अेक बार मोहल्लेमें पटेलके लड़केको मोतीझरा हुआ। महादेवकी अिस लड़केसे दोस्ती थी। अिसलिअे महादेव अुसे देखने जाते और शाहपोरवाले डॉ० चन्दूलाल (डॉ० काका) की दवा दी जाती। अेक दिन रात को देरसे अुसकी तबीयत ज्यादा बिगड़ गअी। महादेव अुसे देखने गये। आकर छोटूभाअीसे कहने लगे: "डॉ० काकाको बुलाकर लाना चाहिये, परन्तु अिस समय रातके बारह बजे जाये कौन! मैं पिताजीसे पूछूँ, तू जायगा?" छोटूभाअीने कहा: "रास्तेमें बड़के आगे भूत है, अिसलिअे अिस समय कोअी जा-आ नहीं सकता। मगर पटेल अपनी घोड़ी दे, तो घोड़ीको सरपट ले जाअूँ और अेक साँसमें सूरत चला जाअूँ।" महादेवने पिताजीसे बात की और छोटूभाअीको घोड़ी दिलवाअी। छोटूभाअी डॉक्टर को बुला लाये। अुन्होंने दवा दी और अुस लड़केको आराम हो गया। महादेव कहने लगे: "कैसा अच्छा हुआ! हमें क्या खर्च करना पड़ा!"

१९०४ में सूरतमें — गुजरातमें लगभग सभी जगह — प्लेग फैला। अिसलिअे स्कूल बन्द हो गया था। दिहेणमें भी प्लेग फैला हुआ था। बापूभाअी चाचा हजीराके पास डामका नामके गाँवमें पटवारी थे, अिसलिअे सब लड़के दो महीने वहाँ रहने चले गये। अेक बार वहाँ रामलीला आअी और पाँच-छः दिन चली। महादेव, छोटूभाअी वगैरा रोज देखने जाते। ये लड़के

अंग्रेजी स्कूलमें पढ़नेवाले थे, अिसलिअे गाँवके कुछ कोली लोगोंने शराब-ताड़ीके विरुद्ध अुनके भाषण रखे। महादेवने कहा: "मैं तो परदेके पीछे खड़ा रह कर भाषण दूँगा। सबके सामने खड़ा रह कर बोलनेमें तो मुझे शरम आती है।" बादमें अिसी तरह महादेवका भाषण हुआ। छोटूभाअी तो सामने खड़े रह कर ही बोले थे। लोगोंको ये भाषण पसन्द आये।

अेक बार अडाजणके पटेलका लड़का कहने लगा: "यह महादेव गोरा-गोरा है। अिसे कोट, पतलून और टोप पहना दें, तो सचमुच साहब जैसा लगेगा। साथ ही अिसे अंग्रेज़ी भी खूब बोलना आता है। खजूरके पेड़ोंमें ताड़ीका मंडप है, वहाँ जाकर वहाँके पारसीको छकायें। मैं पटेल बन जाअूँगा, (छोटूभाअीसे) तुम कारकून हो जाना और महादेव साहब बन जायगा।" फिर तो महादेवको सजाकर साहब बनाया, हाथमें बढ़िया छड़ी दी और ताड़ीके मंडप पर गये। साहब आ रहे हैं, यह जानकर मंडपवाला घबराया। पानी मिली हुअी ताड़ी होगी, अुसे अुसने फेंक दिया। पटेलने साहबको मंडप बताया। साहब तो फटाफट अंग्रेज़ीमें बोलते और छोटूभाअी सब कुछ गुजरातीमें पूछते। अिस प्रकार पँचेक मिनट होता रहा। अितनेमें साहबके सिरमें खुजली आ जानेके कारण टोप अुठाना पड़ा। अुसमेंसे चोटी बाहर निकल आअी। सबको ख़याल हुआ कि भेद खुल जायगा और मंडपवाले पारसीकी मार खानी पड़ेगी। छोटूभाअीने हिम्मत रख कर कहा: "साहब विलायतके नहीं, मद्रासकी तरफके हैं। अभी-अभी ताज़ा पास होकर आये हैं।'

असा कह-कर सब रुके बिना झटपट वहाँसे चम्पत हुअे। मगर स्कूल जानेका रोज़का रास्ता अिस मडपके पाससे था, अिसलिअे महादेव कहने लगे: "अब अिस रास्ते नहीं जाना है, हमें यह पारसी मारेगा।", थोड़े दिन तक बड़ी सड़कके रास्ते चक्कर खाकर जानेका निश्चय किया।

अडाजणके बुरे अनुभव

अिस तरह अडाजणके दिन आनन्दमें बीत रहे थे। अलबत्ता, अुसके अच्छे पहलूके साथ-साथ थोड़ा बुरा पहलू भी था। गाँवमें कहीं कहीं वातावरण अत्यन्त असंस्कारी और मलिन था। अुसके थोड़ेसे छींटे अुड़े बिना न रहे। ज़मीन बहुत अुपजाअू थी और लोग शहरमें सागभाजी और दूध बेचते थे, अिसलिअे दो पैसे कमाते भी थे। मगर अिस धनके साथ शहरकी निकटताके कारण शहरकी बुराअियाँ भी गाँवमें आ गअीं। कोअी-कोअी लड़का तो शहरमें जाकर बिगड़ आता और अुसकी असी बातें करता, मानो कोअी बड़ा पराक्रम कर आया हो। अेकके होते दूसरी स्त्रीको रख लेना, स्त्रीको घरसे निकाल देना वगैरा सब तरहकी बातें भी सुननेको मिलती थीं। भुट्टोंके मौसममें सूरतके सैलानी लोग भुट्टे खाने आते। वे भी साथमें शहरकी कुछ न कुछ गंदगी लाते। ये सब बातें महादेव अुस वक्त पूरी तरह समझते नहीं थे। मगर अुनका असर कोमल मन पर पड़े बिना नहीं रहता था। अेक बार तो अेक लड़केने महादेवको रातके समय किसी लड़कीके पास ले जानेका अिन्तज़ाम किया। गर्मीके दिन थे, अिसलिअे मोहल्लेमें खाटें बिछाकर सब लोग सो जाते थे। वह लड़का महादेवको बुलाने आया, मगर रातको अुठकर

जानेकीमहादेवको हिम्मत न हुआी। मुझे तो नींद आ रही है, मैं नहीं जाअूँगा, यह कह कर महादेवने अुस लड़केके साथ जानेसे अिन्कार कर दिया। अिस तरह साहसके अभावमें बुराअीसे बच गये। अुसके लगभग बाअीस वर्ष बाद सन् १९२८ में बारडोली-चौरासी तालुकेकी ज़मीनकी लगान-जाँच-समितिके सामने किसानोंका मामला पेश करनेके लिअे महादेव और मैं जब साथ-साथ घूमते थे और हमें अडाजण गाँव भी जाना पड़ा था, तब अुस समयकी यह और दूसरी कुछ बातें दुःखके साथ याद करके महादेवने कहा था: "अैसी गंदगीके बीच रहकर शुद्ध रह पाया, सो अिसीलिअे कि मेरे दिन सीधे थे और अीश्वरकी मुझ पर बड़ी कृपा थी।"

४

विवाह

महादेवका विवाह सन् १९०५ में हुआ था, जब वे अंग्रेजीकी छठी कक्षामें पढ़ते थे। महादेवभाअीसे दुर्गाबहन अेक-आध साल छोटी हैं। अुनका पीहर नवसारीके पास कालियावाड़ीमें है। अुनके पिता खंडूभाअी लल्लूभाअी देसाअी शिक्षा-विभागमें डिप्टी अिंस्पेक्टर थे। महादेवका कुटुम्ब कुलीन तो माना जाता था, मगर हालत गरीब थी। खंडूभाअी ठहरे शिक्षा-विभागवाले, अिसलिअे स्कूलमें जाकर जाँच की कि लड़का कैसा है। सब शिक्षकोंने कहा कि लड़का बहुत होशियार और सुन्दर है। दुर्गाबहन तो बादमें मोहित होनेवाली थीं, परन्तु अुनके पिताजी महादेवभाअीको देखकर ही मोहित हो गये और आर्थिक स्थितिका कोअी विचार

किये बिना यह न्याय स्वीकार करके अुन्होंने निश्चय पक्का कर डाला कि 'वसे घर बनता है'। खंडूभाओ श्रेय:साधक अधिकारी वर्गके संस्थापक नृसिंहाचार्यके शिष्य थे और अुनका कुटुम्ब भी भगत कहलाता था। अलबत्ता, वे सच्चे अर्थमें भक्त थे। दुर्गाबहनकी स्कूलकी पढ़ाओ गुजराती छ: पुस्तक तक हुओ थी, परन्तु छुटपनमें ही श्रेय:साधक वर्गकी पुस्तकें और दूसरे भजन भी अुन्होंने बहुत पढ़े थे। हम आगे चलकर देखेंगे कि महादेवभाओमें भी भक्तिके संस्कार गहरे जमे हुओ थे। अिस प्रकार अनायास ही कोओ चुनाव किये बगैर सुयोग्य जोड़ा मिल गया।

दुर्गाबहन कहती हैं कि शादी करके सूरतसे दिहेण जाते समय रथमें हमारे साथ दो भाभियाँ बैठी हुओ थीं। महादेव बोलने और हँसी-मजाक करनेमें तो पहलेसे ही तेज थे, अिस-लिओ अुन्होंने रास्ते भर भाभियोंके साथ दिल्लगी की थी। यह सुनकर दुर्गाबहनको खयाल होता कि अैसी बातें क्यों करते हैं! भाभियाँ कहने लगीं: "शादी नहीं करनी थी, तो कैसे कर ली! मंडपमें से अुठकर भाग जानेवाले थे, लेकिन बिना कुछ कहे-सुने तुमने तो फेरे ले लिओ!" महादेवभाओ बोले: "अगर मुझे बहू पसन्द न आती तो मैं शादी न करता। यह तो मुझे बहुत पसन्द आओ, अिसलिओ क्यों ना कहता या अुठकर चला जाता!" अैसे विनोदोंके सिवाय रास्ते भर भाभियोंसे तरह-तरहकी दिल्लगी भी करते रहे। दुर्गाबहन श्रेय:साधक वर्गके कट्टर वातावरणमें पली थीं, अिसलिओ अैसे निर्दोष किन्तु ग्रामीण मालूम होनेवाले विनोदमें अुन्हें असंस्कारिता और असभ्यता लगी। फिर जब रथ घरके सामने

पहुँचा और अुतरनेको कहा गया, तब मिट्टीका कमरा देखकर पहले तो अुन्हें यह खयाल हुआ कि यह घर अपना होगा ही नहीं, यह तो किसी दूबला या कोलीका झोंपड़ा होगा। यह पहला असर हुआ। फिर तो जिस ढंगसे तमाम ससुरालवालोंने अिनके साथ बर्ताव किया और घरके संस्कारका भी अुन्हें अनुभव हुआ, अुससे यह असर तुरन्त मिट गया।

५

महादेव मेट्रिक क्लासमें थे, तभी पिताजीकी बदली बलसाड़ हो गअी। मगर आखिरी सालमें लड़कोंको स्कूल न बदलवानेके विचारसे अडाजणका घर कायम रखा। अिस प्रकार सूरतके हाअीस्कूलसे ही सन् १९०६ के अन्तमें महादेव मेट्रिक हुअे। यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि स्कूलमें अुनका नम्बर पहला रहता और मेट्रिककी परीक्षामें अपने हाअीस्कूलके विद्यार्थियोंमें वे पहला नम्बर आये। परीक्षा देने बम्बअी जाना पड़ा था। महादेवकी अुम्र बहुत छोटी थी, अिसलिअे पिताजी अुन्हें बम्बअी छोड़ने गये थे। बम्बअीमें अपने रिश्तेके अेक बहनोअीके यहाँ ग्रांट रोड पर ठहरे थे। पिताजीकी नौकरी थी, अिसलिअे वे तो अुन्हें छोड़कर तुरन्त लौट आये। महादेव परीक्षाके मंडपसे घर आते हुअे रास्ता भूल गये और सड़क पर खड़े-खड़े रोने लगे। अन्तमें पुलिसने अुनके बताये हुअे पते पर अुन्हें घर पहुँचाया। महादेव बहुत बार कहते थे कि छोटी अुम्रमें मेट्रिक पास होनेमें कोअी बड़ा गुण तो है ही नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकासकी दृष्टिसे वह वांछनीय भी नहीं है। मैं भी अिसी साल मेट्रिक पास हुआ

था। हम पास हुअे अुसके दूसरे ही सालसे सोलह वर्ष पूरे किये बिना मेट्रिककी परीक्षामें न बैठ सकनेका नियम हो गया था।

कॉलेजके होस्टलमें

जनवरी सन् १९०७ में वे अेलफिन्स्टन कॉलेजमें भरती हुअे। पिताजीको अुस वक्त ४० रुपया मासिक वेतन मिलता था, अिसलिअे घरके खर्चसे तो बम्बअीमें रहकर पढ़ सकनेकी स्थिति नहीं थी। गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंगमें फ्री बोर्डरके तौर पर भर्ती होनेकी अर्ज़ी दी। अुसमें जगह मिलनेकी पूरी आशा थी। परन्तु जवाब मिलनेमें दसेक दिनकी देर हो गअी। अितने समय अेलफिन्स्टन कॉलेजके होस्टलमें रहे। होस्टलके पहले दिनका वर्णन करते हुअे महादेव कहते थे कि वहाँके लड़कोंकी साहबी, बात-बातमें नौकरोंको हुक्म देने और रुपया खर्च कर डालनेकी आदत, रसोअीघरमें तरह-तरहकी बानगियाँ, दो-दो साग, दूध पूरीकी ज्याल और खानेसे भी ज्यादा बेशुमार बिगाड़, यह सब देख कर मैं तो दंग रह गया। पहले दिन तो मुँहमें कौर ही न गया। अैसे खर्चके रुपयेका बोझ पिताजी पर डाला ही कैसे जाय! पिताजी घर पर क्या खाते हैं और किस ढंगसे रहते हैं और मैं अैसी मौज करूँ! यद्यपि यह भी यकीन था कि पिताजी किसी बातको नामंजूर नहीं करेंगे। परन्तु यह सोचकर तो अुनकी स्थितिका खयाल और भी ज्यादा आता था कि पिताजी अिन्कार करनेवाले नहीं थे और ज़मीन बेचकर भी पढ़ानेवाले थे। पहली रात सारी रो-रो कर बीती। गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंगकी आशा थी, अिसीलिअे जी कड़ा करके वहाँ ठहरे और दस दिन दुःखमें मुश्किलसे बिताये।

गरीबीका अनुभव

अितनेमें बोर्डिंगमें प्रवेश मिल गया। अुसीके साथ कॉलेजकी अेक छात्रवृत्ति भी मिल गअी। अिसलिअे पिताजी पर जरा भी बोझ डालनेकी बात नहीं रही। लगभग अैसी ही परेशानी अिन्टर पास करनेके बाद अनुभव हुअी थी। गो० ते० बोर्डिंगमें रहना, खाना, कपड़े और कॉलेजकी लगभग आधी फीस (बम्बअीमें जिस कॉलेजकी कमसे कम फीस होती, अुतनी बोर्डिंगकी तरफसे मिलती। विद्यार्थीको भारी फीसवाले कॉलेजमें जाना होता, तो अधिक फीस अुसे खुद देनी पड़ती) — अितनी चीज़ें मिलती थीं। परन्तु पुस्तकों, ट्राम, रेलवे और नाश्ते वगैराका जो दूसरा फुटकर खर्च होता, वह छात्रवृत्तिमें से निकाल लेते। अिण्टरकी परीक्षामें छात्रवृत्ति मिलनेके लिअे जितने नम्बर चाहिये अुनसे अेक नम्बर कम आया, अिसलिअे अिस पसोपेशमें पड़े कि पढ़ाअी जारी रखी जाय या नहीं। पिताजीको खबर नहीं दी थी, क्योंकि वे तो किसी भी कीमत पर पढ़ाअी जारी रखनेका आग्रह करनेवाले थे। पहले वर्षसे ही श्री वैकुण्ठभाअी लल्लूभाअी महेता महादेवभाअीके सहपाठी थे और दोनोंमें अच्छी मित्रता हो गअी थी। वे महादेवसे अूपरके नंबरमें पास हुअे थे, अिसलिअे अुन्हें छात्रवृत्ति मिलती थी। परन्तु महादेवकी परेशानीकी खबर मिलते ही अुन्होंने अपने पिताजीसे अिजाजत लेकर, जो अुन्होंने सहर्ष दी थी, खुद महादेवको और कॉलेजमें दूसरे किसीको भी बताये बगैर महादेवभाअीके हकमें अपनी छात्रवृत्ति छोड़ दी। सर लल्लूभाअी, जिन्हें अुनके लड़कोंकी तरह महादेवभाअी भी लल्लूकाका कहते थे, महादेवभाअी पर वात्सल्य भाव रखते

और अुनका सारा परिवार महादेवभाअीको कुटुम्बी-जन ही मानता था।

गर्भश्रीमन्त स्वभाव

गरीबीका अैसा अनुभव होने पर कुछ आदमियोंके दिलमें थोड़ी-बहुत कटुता आ जाती है, धनका महत्त्व अुन्हें अधिक मालूम होता है और धनकी लालसा भी रहा करती है। परन्तु अिस प्रकारकी कोअी भी वृत्ति महादेवके हृदयमें कभी प्रवेश नहीं पा सकी। गोवर्धनरामने गर्भश्रीमन्तका अेक खास अर्थ 'सरस्वतीचन्द्र' में किया है: जो धनकी लालसा न करे और आर्थिक न्यूनताके कारण जिसका मन जरा भी अुद्वेग न पाये। अिस अर्थमें वे स्वभावसे ही गर्भश्रीमन्त थे। कॉलेजमें थे अुस समय महादेवभाअीके व्यक्तित्वकी श्री वैकुण्ठभाअी पर क्या छाप पड़ी थी, अुसका वर्णन करते हुअे वे लिखते हैं:

"कॉलेजमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंका सम्बन्ध जैसे मीठा होता है, वैसे कडुवेपनका अनुभव भी होता है। चार वर्ष बम्बअीके अेलफिन्स्टन कॉलेजमें साथ-साथ बिताये। अुस अर्सेमें अेक भी कड़ा या कठोर शब्द अुनसे सुना हो अैसा याद नहीं आता।

"गांभीर्य शुरूसे ही अुनका मुख्य लक्षण था। मैं यह नहीं कहता कि विद्यार्थियोंके जीवनमें जो विनोद होता है, अुससे वे रहित थे। परन्तु अध्यापकों या सहपाठियोंकी निन्दा या खेल-कूदकी लत मैंने अुनमें नहीं देखी। जब मिलने या बात करनेका प्रसंग आता, तब पढ़ाअी या देशके जीवनकी ही बात करनेकी अुत्सुकता अुनमें होती थी। वार्तालापका शौक अुनमें पहलेसे ही था, परन्तु अुसमें प्रवीणता तो ज्यों-ज्यों अुनके व्यक्तित्वका विकास होता गया, त्यों-त्यों बढ़ती गअी।"

६

खेल-कूदका शौक नहीं

यहाँ महादेवके जीवनकी अेक खास हकीकत लिख दूँ। वैकुंठभाअीने लिखा है कि खेल-कूदकी लत मैंने अुनमें नहीं देखी थी। लत तो क्या, अेक भी खेलका — बैठे या मैदानीका — अुन्हें शौक नहीं था और आता भी नहीं था। अैसा शायद ही कोअी आदमी मिल सके जिसने ताश न खेली हो, मगर अिन्होंने कभी ताश नहीं खेली थी। दौड़ने-कूदनेके या क्रिकेट और अैसे ही दूसरे कसरती खेल भी अुन्होंने नहीं खेले थे। मैच या स्पोर्ट्स देखने जानेकी भी अुनके जीमें कभी नहीं आती थी। अहमदाबादमें आम तौर पर तमाम वकील गुजरात क्लबके मेंबर होते हैं और वहाँ ताश, शतरंज, बिलियर्ड और टैनिस वगैरा खेल खेलते हैं। महादेव वकालतके लिअे अहमदाबादमें साल भरसे ज्यादा रहे होंगे, परन्तु गुजरात क्लबके सदस्य नहीं बने। अिसके बजाय भद्रके पास जो हीमाभाअी अिन्स्टिट्यूट है, अुसके सदस्य बने। अुसके पुस्तकालयमें पुराने विचारकी पुस्तकें अधिक थीं। अुसका वार्षिक बजट भी छोटा-सा था। अिस पर भी महादेवने सदस्य बननेके बाद अच्छी-अच्छी पुस्तकोंकी सिफारिश करके मँगवाअीं। वे अहमदाबादमें रहे, अुस अर्सेमें मैंने भी क्लबमें जाना बहुत कम कर दिया था। कोर्टसे हम हीमाभाअी अिन्स्टिट्यूटमें जाते और वहाँसे घूमने जाते।

साबरमती नदीमें चौमासेमें बाढ़ अुतर जानेके बाद जब पानी ज्यादा होता और साफ हो जाता, तब तैरनेमें बड़ा मज़ा

आता। अेक चौमासेमें तो बापूजी भी नियमित रूपसे तैरने आते थे। परन्तु महादेवने तैरना सीखनेका भी प्रयत्न कभी नहीं किया।

सिर्फ चलनेकी कसरत

रोज़ 'नवजीवन'में और प्रान्तीय समितिमें पैदल जाते-आते, तब मैंने अुनसे बहुत आग्रह किया कि तुम साअिकिल सीख लो, मैं तुम्हें चार दिनमें सिखा दूँगा। परन्तु सिर्फ अेक ही दिन सीखने आये और थोड़ी-सी चोट लग गअी, अिसलिअे दूसरे दिनसे बंद कर दिया। कहने लगे कि कभी किसी अटपटी जगह चोट लग जाय और लम्बे समय तक रुक जाना पड़े, तो अैसी जोखम अुठानेसे पैदल चलना ही अच्छा है। अिसमें व्यायाम भी हो जाता है। चलनेका अुन्हें खासा शौक था। किसी तरहका बाकायदा व्यायाम नहीं किया था, अिसलिअे अुनका शरीर गठा हुआ नहीं था, परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि वह कमा हुआ नहीं था। अहमदाबादमें जब 'नवजीवन' पानकोरके नाके पर और सारंगपुर दरवाजे पर था, तब आश्रमसे बहुत बार वहाँ जाना-आना होता था। अुनकी चाल तेज थी। फी घंटे चार मील तककी गतिसे वे चल सकते थे। सन् १९१८की फौजी भरतीके समय लम्बी कूचका अभ्यास करनेके लिअे वे नड़ियादके हिन्दू अनाथाश्रमसे, जहाँ वे रहते थे, सवेरे जल्दी अुठकर हर रोज नौ मील जाते और नौ मील आते। अिस प्रकार १८ मील चलते और बादमें दिन भर बापूके तमाम काम करते। बापूजी वर्धा मगनवाड़ीसे सेवाग्राम रहने गये, तब पहले तो अुनका विचार वहाँ अकेले ही रहनेका

था। अिसलिअे महादेवभाअी मगनवाड़ीमें ही रहे। वहाँसे लगभग १२ बजे साढ़े पाँच मील सेवाग्राम जाते और शामको लौटते। कभी-कभी कोअी खास काम होता, तब तो दो बार और वह भी दोपहरकी गर्मीमें जाना-आना पड़ता। अैसे दिनोंमें तो ग्यारह के बजाय बाअीस मील पड़ जाता। संभव है अुनकी तंदुरुस्ती बिगड़ने और खूनका दबाव बढ़ने वगैरामें यह चीज़ कारण बनी हो, क्योंकि अुनका शरीर धूप सहन नहीं कर सकता था।

नाजुक होने पर भी मज़बूत

अितना चलने पर भी सवेरे और रातको अुनके लिखने-पढ़ने और कातनेके काममें कमी नहीं होती थी। अुनका मुख्य व्यायाम चलना ही था और अिस व्यायाम द्वारा वे अपना शरीर अच्छी तरह तंदुरुस्त रखते थे। महादेवभाअी दिखनेमें कोमल और नाजुक लगते थे। परन्तु बापूजीके साथ कअी बार सतत प्रवासमें मज़दूरोंसे लगाकर लिखाअीका और बापूजीके दूत बननेका शरीर और मन पर काफ़ी दबाव डालनेवाला काम करते हुअे भी महादेव हमेशा टिके रहते, जब कि दूसरे मज़बूत दिखाअी देनेवाले मनुष्य बीमार पड़ जाते और अुनकी हिम्मत टूट जाती। अिसमें चलनेकी आदतके सिवाय खानेमें संयम और हमेशा कुछ कम खानेकी आदत ही मुख्य कारण थे। बापूजीके साथके सफरमें हरअेक स्टेशन पर अुनके दलके लिअे ढेरों खाना आता था। अुससे बचनेके लिअे बरसोंसे अुन्होंने दिनमें तीन बार खानेका नियम ले रखा था और अुसका पालन किया था। तीन बार खानेका मतलब यह था कि अुसके सिवाय चाय-दूध

ही नहीं, बल्कि मुँहमें अिलायचीका दाना भी न डाला जाय और भूलसे पड़ जाय, तो मुसे अेक बार गिन लिया जाय। गोकुलदास तेजपाल बोडिंगमें पुरूके और रोटियाँ बहुत अच्छी नहीं बनती थीं और अगर लड़के बदहजमीसे बीमार हो जाते थे। परन्तु महादेव कॉलेजके चार बरसमें कभी बीमार नहीं पड़े। अिसका मुख्य कारण अुनकी खूब चबानेकी और पेट खाली रखकर थाली परसे अुठ जानेकी आदत थी। पेट तन जाय अितना खाये हुअे मैंने अुन्हें कभी नहीं देखा और कैसा ही भोजन क्यों न हो, भोजनके नशेसे शरीरमें छाया हुआ आलस भी नहीं देखा। कोमल और नाजुक दिखाओ देने पर भी, मजबूत और सहनशील दिखाओ देनेवाले शरीरोंकी अपेक्षा अुन्होंने अपने शरीरसे हमेशा बहुत ज्यादा काम लिया था।

खेलोंका शौक अुन्हें नहीं था, फिर भी वे अच्छी तरह समझते और मानते थे कि यह शिक्षाका बहुत अुपयोगी अंग है और जीवन-विकासमें अुसका बड़ा महत्त्व है। अिसलिअे वे अपने लड़के नारायणको और दूसरे बच्चोंको अलग-अलग तरहके खेल खेलनेका बहुत प्रोत्साहन देते थे। किसी खेलमें नारायण प्रवीणता दिखाता, तो अुससे बहुत खुश होते। अेक बार शिमलेमें आरामके लिअे वे अेक महीना रहे थे। तब नारायणको बैडमिन्टन खेलना सिखानेके लिअे खुद अुसके साथ खेलते। अुनके लिअे तो खेलनेका यह प्रयोग पहला और आखिरी ही था। नारायणको अुत्तम तैरना आये, अुत्तम साअिकिल आये, अिसके लिअे भी वे बहुत चिन्ता रखते थे; और जब वह किसी भी खेल या काममें दक्षता दिखाता, तब बड़े प्रसन्न होते थे।

७

खेलदिली और विनोदवृत्ति

यद्यपि अुन्हें खेल नहीं आते थे और खेलोंका शौक भी नहीं था, तो भी जिसे खेलदिली (स्पोर्ट्समेनशिप) कहते हैं, वह अुनमें पूरी तरह थी। किसीके दोष देखनेकी तो अुनमें आदत ही न थी। दूसरेके गुण देखने और अुन गुणोंको ग्रहण करनेके लिअे वे हमेशा तैयार रहते थे। निकम्मी बातोंमें या दूसरोंकी निन्दा करनेमें वे कभी अपना अेक मिनट भी खराब नहीं होने देते थे। अिस अर्थमें वे गम्भीर प्रकृतिके कहला सकते थे। परन्तु अुनका स्वभाव अितना विनोदी था और कितने ही महत्त्वका काम करते समय भी अुसमें अनायास और सहज ढंगसे अिस तरहसे विनोद मिला देनेकी अुनमें कला थी कि कोअी भारी काम हो रहा हो, तब भी मानो विनोद हो रहा है, अैसा आनन्द और अुत्साहका वातावरण वे अपने आसपास बना देते थे।

आश्रममें शुरूके दिनोंमें हमारे मोहल्लेमें काकासाहब, किशोरलालभाअी, महादेवभाअी, छगनलाल गांधी, पंडित खरे का और मेरा मकान सब अेक कतारमें थे। कितना ही काम हो, परन्तु हमारे यहाँ संगीत — शास्त्रीय और सादा दोनों — साहित्य चर्चा, कलाविवेचन और वार्ता-विनोदका वातावरण बना रहता था और अुसमें हास्यके हमेशा फव्वारे जैसे छूटते रहते थे। जिसने बापूजीको प्रत्यक्ष न देखा हो और केवल अुनके आदर्शोंके बारेमें ही सुना हो — क्योंकि बापूजीके पास भी भारी कामोंमें और गंभीर

अवसरों पर भी हास्य-विनोद चलता ही रहता था — वह अगर हमारे मोहल्लेमें आकर देखता, तो उसे शंका होती कि ये सब बातें आश्रम-जीवनके साथ सुसंगत हैं या नहीं! आश्रमके दूसरे भागमें रहनेवाली अेक बहन, जिनके पति शान्त स्वभावके और कम बोलनेवाले थे, अकसर अपने पतिसे कहतीं कि तुम दिन भर काम-काम करते रहते हो, मगर अुस मोहल्लेमें रहनेवाले सब लोग क्या काम नहीं करते! परन्तु हम वहाँ जाते हैं तब वह मोहल्ला कैसा 'गोकुलपुरी' जैसा लगता है! अगर हमारा मोहल्ला अिस अुपमाके योग्य बना हो तो अुसमें महादेवका बहुत बडा हिस्सा था। जो विनोद न कर सके या न समझ सके, या रसास्वादन न कर सके, चीज़को अिशारेसे न समझ जाय, अैसोंके लिअे महादेव 'ठोठ', 'जड़' तथा 'बुद्धू' शब्द काममें लेते थे। जो अुनके साथ काम करनेमें काफ़ी होशियारी न दिखायें, निकम्मी बातें बापूजीके पास ले जाकर अुनका सिर पचायें या बापूकी सूचनायें और योजनायें अच्छी तरह समझे बिना तथा अुन पर अमल किस तरह होगा और अुनके परिणाम क्या होंगे, अिन सब बातोंका विचार किये बिना अिनमें झटपट हाँ भर दें, अैसे लोग भी अुनके अिन विशेषणोंके पात्र थे। प्रो० ब० क० ठाकोरने अेक जगह आलोचना की है कि महादेव देसाअी जैसे व्युत्पन्न लेखक भी सुन्दर और अद्भुत जैसे अत्यन्त प्रशंसावाचक विशेषण हर कहीं अिस्तेमाल करके अुन्हें सस्ते बना डालते हैं और अुन शब्दोंकी क़ीमत घटाते हैं। यह आलोचना अिन 'ठोठ' वग़ैरा शब्दोंके लिअे भी लागू हो सकती है। ये निन्दावाचक विशेषण अैसे लोगोंके लिअे जो अितनी निन्दाके पात्र न हों, और

अैसे प्रसंगो पर भी जहाँ अितनी निन्दा करनेकी ज़रूरत न हो, वे काममें लेते थे। अितना सही है कि विशेष रूपसे गुणग्राही होनेके कारण महादेवभाअी जब ज़रूरतसे ज्यादा तारीफ करते, तब दिलके सच्चे भावसे करते और निन्दा करनेकी तो अुनकी आदत ही नहीं थी, अिसलिअे अुनके विशेषण बहुत हल्के भावसे विनोदमें और वह भी मुख्यत: निकटके मित्रोंके लिअे ही काममें लाये जाते थे।

८

अध्ययनशीलता

यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि कॉलेजमें अपने अध्यापकों और होशियार साथियोंमें वे बहुत प्रिय हो गये थे। अुनके सहपाठियोंमें अुनका विशेष सम्बन्ध श्री वैकुण्ठभाअीके अतिरिक्त 'बॉम्बे क्रॉनिकल' वाले श्री ब्रेलवी और अुसमें कला विवेचनके स्तंभ लिखनेवाले श्री के० अेच० वकीलके साथ था। यह सम्बन्ध जिन्दगी भर कायम रहा।

वे जूनियर बी० अे०के क्लासमें थे, तब अुन्होंने कॉलेज मेगज़ीनके लिअे अंग्रेजीमें अेक कविता लिखी थी। अिस पर अंग्रेजीके अध्यापकने अुन्हें बुलाकर कहा था कि तुम्हारी कविता अच्छी है, परन्तु तुम्हें अंग्रेजी या दूसरी भाषामें अिस अुम्रमें कविता न लिखनेकी मेरी सलाह है। खूब पढ़ो, बड़े-बड़े कवियोंके अुत्तम काव्योंका परिशीलन करो और बादमें लिखनेकी अुमंग पैदा हो तो लिखना। यह सलाह अुन्होंने तुरन्त ही मान ली।

परिस्थितिका अच्छी तरह निरीक्षण और गहरा अध्ययन किये बिना हमारे नवयुवक वृत्त-विवेचन या पत्रकारितामें पड़ जाते हैं। अिस बारेमें तो महादेवभाअी अकसर अपना दुःख प्रगट किया करते थे। अध्ययनके बिना लिखने लग जानेसे प्रामाणिकता कायम नहीं रहती और विचार स्थिर व परिपक्व होनेसे पहिले लिखना शुरू कर देनेसे खुदकी प्रगति रुक जाती है और निकम्मा और हीन प्रकारका साहित्य बढ़ जाता है। अैसी चेतावनी वे अुगते हुअे लेखकोंको बार-बार देते थे।

विविध विषयोंमें दिलचस्पी

पढ़नेका शौक तो अुन्हें पहलेसे ही था। कॉलेजके विषयोंकी पाठ्यपुस्तकोंके अलावा हर विषय संबंधी और दूसरा भी बहुतसा साहित्य वे पढ़ते थे। दूसरोंको अुनके शौकका विषय साहित्य लगता था, क्योंकि गुजराती, अंग्रेजी और संस्कृतके सिवाय बंगला, हिन्दी और मराठी साहित्यका अुनका अध्ययन विशाल था। जब विद्यार्थी थे तब भी काव्य, नाटक और अुपन्यास बहुत पढ़ते थे; फिर भी बी० अे० में अैच्छिक विषयके तौर पर अुन्होंने दर्शन-शास्त्र लिया था। अिसमें भी औचित्य था, क्योंकि अिस विषयमें भी अुनकी गहरी दिलचस्पी थी। अेक बार अिस प्रश्नके अुत्तरमें कि तुम्हें कैसी पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता है, अुन्होंने कहा था कि व्यक्ति तथा समाजके जीवनके प्रश्नोंकी छानबीन करनेवाले हर तरहके साहित्यका मुझे शौक है। हमने देख लिया कि ठेठ बाल्यावस्थासे अुन पर धार्मिक भावनाओंका सिंचन हुआ था। अुसके कारण अुनकी जन्मजात धार्मिक वृत्तिको पोषण मिला था। अुन्होंने अैच्छिक विषय दर्शन-शास्त्र लिया

था, अिस बारेमें श्री वैकुण्ठभाअी कहते हैं : "आरम्भसे ही भाअी महादेवमें धार्मिक वृत्ति थी। तत्त्वज्ञानके अभ्याससे वह जाग्रत हुअी हो, अैसा माननेके लिअे कारण नहीं है। परन्तु अिस विषयके गहरे अध्ययनके कारण अुनकी धार्मिक भावनायें दृढ़ हुअीं, अिसमें सन्देह नहीं। अलग-अलग देशोंके तत्त्वज्ञानके शास्त्र पढ़ने और समझनेका जो अवसर अुन्हें कॉलेजके अध्ययनके समय मिला, अुसका पूरा असर अुनके जीवन पर हुआ और अुसका लाभ अुन्होंने जनताको पहुँचाया।" पूर्व और पश्चिमके धर्म, तत्त्वज्ञान और काव्यके ग्रंथोंका अुनका अध्ययन कितना विशाल और गहरा था, अिसकी कल्पना अुस विद्वत्तापूर्ण प्रस्तावनासे होती है, जो अुन्होंने गांधीजीके 'अनासक्तियोग' के अंग्रेजी अनुवादके लिअे 'माय सब्मिशन' (मेरा निवेदन) नामसे लिखी है।

९

अेक संतपुरुषका समागम

जब वे कॉलेजमें थे, तब गोधराके अेक भगतजीका समागम हुआ था, जो भगतजीके देहान्त तक जारी रहा। अुन्होंने अिनके जीवनको भक्तिरससे परिप्लावित कर दिया था, यह कहनेमें अतिशयोक्ति नहीं है। जब महादेव मेट्रिक क्लासमें थे, तभी पिताजीकी बदली वलसाड़ हो गअी थी, यह कहा जा चुका है। वलसाड़में गोधराके ये भगतजी — पुरुषोत्तम सेवकराम — आया करते थे। ये जवान थे तब अिन्हें किसी अवधूतकी सेवा

घरनेकी सूझी और अुसकी कृपासे अिनकी दृष्टि बदल गअी। ये पागलकी तरह भटकने लगे। अनेक तीर्थोंमें खूब पर्यटन किया और बड़े लम्बे तीर्थाटनके बाद शान्त होकर घरमें ही अपना बाप-दादेका कुम्हारका धंधा करने लगे। छोटे-छोटे सुहावने बरतन बनानेका अिनका धंधा अच्छा चलता था। धंधेसे बचा हुआ सारा समय ये भजनमें बिताते थे। अुनका गुजराती भाषाका ज्ञान मामूली लिखने-पढ़ने तक ही था। संस्कृत तो ज़रा भी नहीं आती थी। गीता या अुपनिषद् अुन्होंने गुजरातीमें भी नहीं पढ़े थे। हमारे सन्तोंके भजन ही अुनकी गीता और अुपनिषद् थे। अपने धंधेमें और भजनकी धुनमें वे दिन व्यतीत कर रहे थे कि अुनके पास जानेवाले गोधराके किसी आदमी द्वारा बाहरके लोगोंको पता चला कि यह भूले हुओंको रास्ता बतानेवाला कोअी संत है। अिससे अुनकी शान्ति भंग हुअी होगी या नहीं, यह तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु गुजरातके बहुतसे आदमियोंको शान्ति देनेका काम शायद अीश्वरने ही अुन पर डाला था। अनेक विद्वानों, तत्त्ववेत्ताओं और भक्तोंकी सेवा करनेवाले स्वर्गीय सेठ वसनजी खीमजीको अुनका पता चला और अुन्होंने अिनसे बर्तन बनानेका धंधा छुड़वाकर मनुष्योंको बनानेका धंधा स्वीकार करवाया।

महादेवभाअी लिखते हैं: "मेरा अिस संत पुरुषके साथ अपने पिता द्वारा परिचय हुआ था। जब मैं कॉलेजमें पढ़ता था, अुस समय स्वामी विवेकानन्दकी पुस्तकोंका और अुनके द्वारा रामकृष्ण परमहंसका कुछ परिचय मुझे हुआ था। अुस परमहंसकी प्रतिमूर्ति मुझे अिस पुरुषमें देखनेको मिली।

अुस परमहंसके वचनोंका रहस्य अिस संत पुरुषके वचनोंसे मेरी समझमें आया है ।"

पिताजी वलसाड़में थे, तब ये भगतजी अुनके अेक मित्रके यहाँ प्रसंगोपात्त बलसाड़ आते और पन्द्रह-बीस दिन ठहरते। मण्डली अिकट्ठी होती और अुसमें भजन गाये जाते । छुट्टियोंमें महादेव बलसाड़ गये हों और भगतजी वहाँ आये हुअे हों, तब महादेव भी अिस मण्डलीमें मिल जाते । भगतजी अुनसे भजन गवाते । बम्बअीमें सेठ वसनजी खीमजीके यहाँ भगतजी आते तब भगतजीसे मिलने महादेव अुनके यहाँ वसनजी पार्क–दादर जाते । १९१२ में अेक बार अपने भाअी छोटूभाअीके साथ महादेव भगतजीसे मिलने अुनके घर गोधरा गये थे । अिसका वर्णन छोटूभाअी अिस प्रकार करते हैं: "रातको दस बजे स्टेशन पर अुतरे । भगतजी सामने मिले। महादेव कहने लगे: 'बापजी तो सामने मिल गये ।' हमको घर ले जाकर भगतजी बोले : 'सन्त आये हैं।' दूसरे दिन तालावमें नहानेके बाद धोतियाँ भी जिद करके भगतजीने धो डालीं। अितना ही नहीं, परन्तु घर लौटते हुअे हमें अुठाने भी नहीं दीं । कहने लगे: 'संतकी सेवा करनेका लाभ कहीं बार-बार मिलता है?' फिर भजन होने लगे । भजन हो चुकनेके बाद महादेव कहने लगे : 'मेरा तो पराधीनताका अवतार है । पढ़ा तो वह भी लोगोंके रुपयेसे । लोग परमार्थ करते हैं और मैं अुसका लाभ अुठाता हूँ ।' भगतजी बोले : 'यह सन्ताप करनेकी बात नहीं है । नाटक देखने जाते हो न? कोअी राजा बनकर आता है, कोअी सिपाही बनकर आता है। परन्तु अुन्हें अपना अभिनय ही करना

होता है। राजा भी जानता है कि मैं नट हूँ। भूल हुआी और पीछे रह गया, तो मैनेजरका कोड़ा पड़ता है। अिसी तरह दुनियामें प्रभुने हमें अभिनय करनेके लिअे भेजा है। जिसे जो काम दिया हो, अुसे अच्छी तरह करना चाहिये। और कोअी विचार नहीं करने चाहियें। किसी भी जगह पर हों, तो भी यही मानना चाहिये कि हमें नाटक खेलनेके लिअे ही भेजा गया है। मालिक तो अीश्वर है। जो काम अुसने सौंपा है सो हमें करना है। अिसलिअे अैसे विचार नहीं करने चाहियें।' भगतजीने आग्रह करके अेक दिन ज्यादा ठहरा लिया। जाते समय स्टेशन पर छोड़ने आये और महादेवके हाथमें विद्यार्थीके दो रुपये यह कहकर रखे कि, 'तुम बच्चोंको, सन्तकी साक्षी हाथ वापस भेजा जा सकता है!' सारी यात्रामें महादेव कहते रहे: 'संत तो अिसका नाम है। दो दिनमें अिनकी हालतमें कोअी परिवर्तन देखा? हम कैसे ही विचार करके जायँ, परन्तु अिनके पास पहुँचते ही कैसे तद्रूप और शान्त हो जाते हैं! कितने नम्र हैं। छोटेसे छोटा काम भी खुद करते हैं और सेवाभाव कितना है! हमें कुछ भी करने दिया? सीखनेकी यही बात है।'" अिन भगतजीका देहान्त १९२६ में हुआ, तब हुनके बारेमें 'नवजीवन' (वर्ष ८, अंक ११, ता० १४-११-१९२६) में 'अेक संतका देह त्याग' नामका लेख महादेवने लिखा था। अुसमें वे लिखते हैं: "आम तौर पर गूढ़ मालूम होनेवाली वस्तु समझानेका अुनका तरीका अजीब था। अुन्हें अक्षरज्ञान तो बहुत नहीं था, अिसलिअे सब बातें प्राकृत. ढंगसे ही समझाते। . . . गीताका सिद्धान्त क्या? अिस तरह खुद ही

अुस परमहंसके वचनोंका रहस्य अिस संत पुरुषके वचनोंसे मेरी समझमें आया है।"

पिताजी वलसाड़में थे, तब ये भगतजी अुनके अेक मित्रके यहाँ प्रसंगोपात्त वलसाड़ आते और पन्द्रह-बीस दिन ठहरते। मण्डली अिकट्ठी होती और अुसमें भजन गाये जाते। छुट्टियोंमें महादेव वलसाड़ गये हों और भगतजी वहाँ आये हुअे हों, तब महादेव भी अिस मण्डलीमें मिल जाते। भगतजी अुनसे भजन गवाते। वम्बअीमें सेठ वसनजी खीमजीके यहाँ भगतजी आते तब भगतजीसे मिलने महादेव अुनके यहाँ वसनजी पार्क–दादर जाते। १९१२ में अेक वार अपने भाअी छोटूभाअीके साथ महादेव भगतजीसे मिलने अुनके घर गोधरा गये थे। अिसका वर्णन छोटूभाअी अिस प्रकार करते हैं: "रातको दस बजे स्टेशन पर अुतरे। भगतजी सामने मिले। महादेव कहने लगे: 'बापजी तो सामने मिल गये।' हमको घर ले जाकर भगतजी वोले: 'सन्त आये हैं।' दूसरे दिन तालावमें नहानेके बाद धोतियाँ भी जिद करके भगतजीने धो डालीं। अितना ही नहीं, परन्तु घर लौटते हुअे हमें अुठाने भी नहीं दीं। कहने लगे: 'संतकी सेवा करनेका लाभ कहीं बार-बार मिलता है?' फिर भजन होने लगे। भजन हो चुकनेके बाद महादेव कहने लगे: 'मेरा तो पराधीनताका अवतार है। पढ़ा तो वह भी लोगोंके रुपयेसे। लोग परमार्थ करते हैं और मैं अुसका लाभ अुठाता हूँ।' भगतजी वोले: 'यह सन्ताप करनेकी बात नहीं है। नाटक देखने जाते हो न? कोअी राजा बनकर आता है, कोअी सिपाही बनकर आता है। परन्तु अुन्हें अपना अभिनय ही करना

होता है। सबको भी लगता है कि वे नट हैं। भूल हुअी और परदे गिर गया, तो अिसका पछतावा करना पड़ता है। अिसी तरह दुनियामें प्रभुने हमें अभिनय करनेके लिअे भेजा है। जिसे जो काम दिया हो, अुसे अच्छी तरह करना चाहिये। और कोअी विचार नहीं करने चाहिये। किसी भी जगह पर हो, तो भी यही मानना चाहिये कि हमें नाटक खेलनेके लिअे ही भेजा गया है। मालिक तो अंदर है। जो काम अुसने दिया है वो हमें करना है। अिसलिअे ऐसे विचार नहीं करने चाहिये।' भगतजीने आग्रह करके अेक दिन ज्यादा ठहरा लिया। जाते समय स्टेशन पर छोड़ने आये और महादेवके हाथमें विद्यार्थियों को रुपये यह कहकर गये कि, 'तुम बच्चोंको, मजदूरोंके मारफत हाथ खर्च भेजा जा सकता है!' सारी यात्रामें महादेव कहते रहे: 'यह तो अिसका नाम है। दो दिनमें अिनकी हालतमें कोअी परिवर्तन देखा' हम ऐसे ही विचार करके जाये, परन्तु अिनके पास पहुँचने ही कैसे स्वरूप और शान्त हो जाते हैं! कितने नम्र हैं। छोटेसे छोटा काम भी खुद करते हैं और सेवाभाव कितना है! हमें कुछ भी करने दिया? सीखनेकी यही बात है।'" अिन भगतजीका देहान्त १९२६ में हुआ, तब अुनके बारेमें 'नवजीवन' (वर्ष ८, अंक ११, ता० १४-११-१९२६) में 'अेक संतका देह त्याग' नामका लेख महादेवने लिखा था। अुसमें वे लिखते हैं: "आम तौर पर गूढ़ मालूम होनेवाली वस्तु समझानेका अुनका तरीका अजीब था। अुन्हें अक्षरज्ञान तो बहुत नहीं था, अिसलिअे सब बातें प्राकृत ढंगसे ही समझाते। . . . गीताका सिद्धान्त क्या? अिस तरह खुद ही

सवाल पूछकर कहते, 'देखो तो, गीताका रटन करो तो गीता–गीता–तागी–तागी अिस तरह समझा जाता है न! जिसने देह-बुद्धि त्यागी है, अुसने गीताको जाना . . . ।' अेक बार अेक समर्थ पंडितको मोक्षका अर्थ समझाते हुअे अुन्होंने चौंका दिया था। 'मोक्षमें दो शब्द हैं—मोह और क्षय। मोहका क्षय, यही मोक्ष है।'" परन्तु मुख्यत: वे भजनों द्वारा ही अुपदेश करते थे। अुसमें खूबी यह रहती थी कि मिलने आनेवाले आदमीकी जैसी जिज्ञासा होती या जैसे अुपदेशकी अुसे ज़रूरत होती, वैसा भजन अनायास ही अुनके मुखमें से निकलता। वे ठोक-ठोक कर कहते कि अहंकार और देहाध्याससे बचनेका साधन नम्रता और सेवा है।

नमे सो तो साहेबको भाये रे भाअी,
नमे सोअी नर भारी है रे।
नारद नमे और आअी गरीबी,
तो दिलकी मिटी सारी चोरी रे भाअी।
धीवर गुरु ने दिया मंत्र प्यारे,
मिटी लाख चौरासीकी फेरी रे भाअी।

फिर कहते:

अूँचा अूँचा सब चले, नीचा चले न कोय
नीचा नीचा जो चले सबसे अूँचा होय।
राम रस अैसा है मेरे भाअी!
ध्रुव पीया, प्रल्हाद पीया, पीया पीपा ओ रोहीदास
पीय कबीरा छक रहे, और फिर पीवनकी आस।
राम रस अैसा है मेरे भाअी!

महादेव लिखते हैं: "यह रामरस वाला भजन गाते समय अुनमें जो मस्ती और नशा मैंने देखा, वह शायद ही और कहीं देखा हो।" लगभग १५ वर्ष तक महादेवको अिन भगतजीका समय-समय पर सत्संग करनेका सौभाग्य मिला था।

१०

भोले शंभु

महादेवके जीवनमें औसी भगवद्‌भक्ति और सन्त समागमकी तमन्ना होनेके साथ-साथ अेक प्रकारका जो भोलापन था, अुसका भी जिक्र यहाँ करना चाहिये। शुरूमें महादेव 'भोले शंभु' के नामसे लिखते और सचमुच ही वे भोले शंभु थे। यों तो दुर्गाबहन भी भोली हैं, परन्तु अिन्हें भी महादेवभाअी अधिक भोले लगते थे। हम हाअीस्कूल और कॉलेजमें पढ़ते थे, अुन दिनों मोहम्मद छैल नामका जादूगर प्रसिद्ध था। अेक दिन रेलगाड़ीमें महादेवसे अुसकी भेंट हो गअी। अुसने अेक मुसाफिरकी अँगूठी देखनेको ली और गाड़ीकी खिड़कीमें से बाहर फेंक दी। वह तो रोने लगा। अिस पर पासके अेक और आदमीसे मोहम्मद छैलने कहा: "देख, अपनी जेबमें हाथ डाल तो?" अुसने जेबमें हाथ डाला तो धूलमें सनी हुअी अँगूठी अुसके हाथमें आअी। अिसी पर महादेवभाअी मोहम्मद छैल पर मुग्ध हो गये! अुस वक्त अेक "हिन्दू स्पिरीच्युल मैगज़ीन" निकलता था। अुसमें अध्यात्मवादके लेखोंके साथ भूतोंकी बातें, प्रत्यक्ष भूतसे मिलनेके प्रसंग और दूसरे चमत्कारोंकी

सवाल पूछकर कहते, 'देखो तो, गीताका रटन करो तो गीता–गीता–तागी–तागी अिस तरह समझा जाता है न! जिसने देह-बुद्धि त्यागी है, अुसने गीताको जाना . . . ।' अेक बार अेक समर्थ पंडितको मोक्षका अर्थ समझाते हुअे अुन्होंने चौंका दिया था। 'मोक्षमें दो शब्द हैं — मोह और क्षय। मोहका क्षय, यही मोक्ष है।'" परन्तु मुख्यतः वे भजनों द्वारा ही अुपदेश करते थे। अुसमें खूबी यह रहती थी कि मिलने आनेवाले आदमीकी जैसी जिज्ञासा होती या जैसे अुपदेशकी अुसे ज़रूरत होती, वैसा भजन अनायास ही अुनके मुखमें से निकलता। वे ठोक-ठोक कर कहते कि अहंकार और देहाध्याससे बचनेका साधन नम्रता और सेवा है।

नमे सो तो साहेबको भाये रे भाअी,
नमे सोअी नर भारी है रे।
नारद नमे और आअी गरीबी,
तो दिलकी मिटी सारी चोरी रे भाअी।
धीवर गुरु ने दिया मंत्र प्यारे,
मिटी लाख चौरासीकी फेरी रे भाअी।

फिर कहते :

अूँचा अूँचा सब चले, नीचा चले न कोय
नीचा नीचा जो चले सबसे अूँचा होय।
राम रस अैसा है मेरे भाअी!
ध्रुव पीया, प्रल्हाद पीया, पीया पीपा औ रोहीदास
पीय कबीरा छक रहे, और फिर पीवनकी आस।
राम रस अैसा है मेरे भाअी!

महादेव लिखते हैं : "यह रामरस वाला भजन गाते समय अुनमें जो मस्ती और नशा मैंने देखा, वह शायद ही और कहीं देखा हो।" लगभग १५ वर्ष तक महादेवको अिन भगतजीका समय-समय पर सत्संग करनेका सौभाग्य मिला था।

१०

भोले शंभु

महादेवके जीवनमें जैसी भगवद्भक्ति और सन्त समागमकी नमशा होनेके साथ-साथ अेक प्रकारका जो भोलापन था, अुसका भी जिक्र यहाँ करना चाहिये। शुरूमें महादेव 'भोले शंभु' के नामसे लिखते और सचमुच ही वे भोले शंभु थे। यों तो दुर्गाबहन भी भोली हैं, परन्तु अिन्हें भी महादेवभाअी अधिक भोले लगते थे। हम हाअीस्कूल और कॉलेजमें पढ़ते थे, अुन दिनों मोहम्मद छैल नामका जादूगर प्रसिद्ध था। अेक दिन रेलगाड़ीमें महादेवसे अुसकी भेंट हो गअी। अुसने अेक मुसाफिरकी अँगूठी देखनेको ली और गाड़ीकी खिड़कीमें से बाहर फेंक दी। वह तो रोने लगा। अिस पर पासके अेक और आदमीसे मोहम्मद छैलने कहा : "देख, अपनी जेबमें हाथ डाल तो!" अुसने जेबमें हाथ डाला तो धूलमें सनी हुअी अँगूठी अुसके हाथमें आअी। अिसी पर महादेवभाअी मोहम्मद छैल पर मुग्ध हो गये! अुस वक्त अेक "हिन्दू स्पिरीच्युल मैगज़ीन" निकलता था। अुसमें अध्यात्मवादके लेखोंके साथ भूतोंकी बातें, प्रत्यक्ष भूतसे मिलनेके प्रसंग और दूसरे चमत्कारोंकी

बातें आती थीं। अैसी बातों पर महादेव श्रद्धा ही नहीं बताते थे, बल्कि अुन्होंने तो यह मासिक कलकत्तेसे मँगाना भी शुरू कर दिया। अुसमें अेक बार विज्ञापन आया कि अपने दोनों हाथोंके पंजोंकी छाप लगाकर भेजो और अुसके साथ जन्मकी तिथि, स्थान और समय लिखकर भेजो, तो तुम्हारी जिन्दगीका सारा हाल लिखकर भेज देंगे। महादेवने सब कुछ भेजा और २ रुपये २ आनेकी वी० पी० आ पहुँची। मज़ा यह कि महादेवको यह भी गजब मालूम हुआ और कहने लगे कि ज्यादासे ज्यादा साथमें रहनेवाला आदमी भी अितनी बातें नहीं बता सकता।

अुन दिनों अेक राणे नामक आदमी जुहूमें रहता था। वह कुदरतमें मिलनेवाली वस्तुओंको यों ही काट-छाँटकर बड़े कलामय ढंगसे सजाता था। अुसने अपनी मेहनतसे अपने सारे छोटेसे बंगलेकी और अुसके आसपासके बगीचेकी रचना और सजावट कुदरती रूपमें मिलनेवाली वस्तुओं द्वारा सुन्दर कलामय ढंगसे की थी। हम विद्यार्थी खास तौरसे अुसे देखने जाते। वह हर गुरुवारको मुलाकात देता और हाथकी रेखाअें, ललाट और चेहरा देखकर भूत और भविष्य बताता था। अुसका बंगला और बगीचा सचमुच देखने लायक थे और अुन्हें देखने जानेका जीमें आना स्वाभाविक था। परन्तु महादेव तो दो-तीन बार अपना भविष्य पूछनेके लिअे भी अुससे मिल आये थे। जब महादेव छोटे थे, तब त्रिकालदर्शी आअिनेमें भी अुन्हें गजबकी बातें दिखाअी देती थीं! अैसी चीज़ों पर श्रद्धा रखने पर भी अितना अच्छा हुआ कि अुन्होंने अपने जीवनका कार्यक्रम अैसे किसी आधार पर नहीं बनाया। अेक बार शिमलामें (सन्

१९३८ में) महादेवभाअी अपने लड़के नारायणके साथ घूमने जा रहे थे। रास्तेमें कोअी वैरागी जैसा आदमी कुछ विचित्र ढंगसे अनिमेष दृष्टिसे देखनेकी और अिसी तरहकी दूसरी हरकतें कर रहा था। महादेव तो ठहरकर अुसका निरीक्षण करने लगे। नारायण आगे चलनेका आग्रह करने लगा। महादेवभाअी कहने लगे: "वह साधू कोअी चमत्कारी होना चाहिये। वह त्राटक करता दीखता है। हमें अुससे मिलना चाहिये।" नारायण बोला: "काका, आपको तो हर किसी पर श्रद्धा हो जाती है। हमें वहाँ नहीं जाना है।" यह कहकर वह अुन्हें खींचकर आगे ले गया। अन्तमें महादेवने और किसीके द्वारा अुसकी जाँच कराअी और वह कोअी धूर्त निकला। कोअी सिद्धिकी और चमत्कारकी, चमत्कारी दवाके प्रयोगोंकी या मंत्र-तंत्रकी बात करता, तो अुसमें भी महादेवभाअी विश्वास कर लेते। अुनमें कभी अपना निजी स्वार्थ साधनेकी वृत्ति थी ही नहीं, अिसलिअे अैसी चीज़ोंमें फँस जानेसे बच गये और कोअी बुरा परिणाम नहीं निकला।

११

१९१० में बी० अे० पास होनेके बाद अेम० अे० की पढ़ाअी करनेका विचार हुआ। अुन्हें संस्कृत लेकर शांकर भाष्यका पक्का अध्ययन करना था, परन्तु अुस साल रामानुज भाष्य चलनेवाला होनेके कारण अुन्होंने अेम० अे० का विचार ही छोड़ दिया और अेल-अेल० बी० का विचार किया। पिता पर तो भार स्वरूप बनना ही नहीं था, अिसलिअे अुन्होंने

नौकरी करते हुअे पढ़नेका विचार रखा। ओरियन्टल ट्रांस्लेटरके दफ्तरमें ६० रु. महीनेकी नौकरी मिली। परेलमें कमरा लेकर दुर्गाबहनके साथ रहना शुरू किया। रामनारायण वि० पाठक और गिजूभाअी बधेका अुनके पड़ोसी थे। अुनके साथ अच्छी मित्रता हो गअी।

अेक कड़ी परीक्षा

आखिरी अेल-अेल० बी० की परीक्षाके समय अेक कड़वा अनुभव हुआ। 'अिक्वीटी' (नैतिक न्याय) के विषयका अुनका अध्ययन और विषयोंके मुकाबलेमें ज्यादा पक्का था। फिर भी दूसरे दिन अुसी विषयमें जल्दी अुठ आये। मित्रोंने सोचा कि आशाके अनुसार नहीं लिखा जायगा अैसा लगा होगा, अिस-लिअे घबराकर अुठ गये होंगे। यद्यपि जितना आता था, अुतना लिखा होता तो भी पास तो हो जाते। घर आकर ज़ोर ज़ोरसे रोने लगे। अुनके बड़े भाअी छोटूभाअीने अपने स्वभावके अनुसार आश्वासन दिया: "गुजराती पाठशालाके लड़केकी तरह रोने क्या बैठा है? शरम नहीं आती, लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे? परीक्षा दुबारा सही। घरसे रुपया तो मँगाना नहीं पड़ता, कौन कहनेवाला है?" मगर जल्दी अुठ आनेका और रोनेका कारण दूसरा ही था। दुर्गाबहन अिस वक्त बम्बअीमें नहीं थीं। महादेव अपने कमरेमें रातको बड़ी देर तक लेटे-लेटे पढ़ रहे थे। चालमें रहनेवाली अेक बहन, जो अुन पर मोहित हो गअी होगी, यह अेकान्त देखकर अुनके कमरेमें आअी और अेकदम अुनके बिस्तर पर लेट गअी। अैसा कह सकते हैं कि अुसने महादेव पर बाकायदा हमला ही करना शुरू कर

दिया। महादेव घबरा गये और ठंडे हो गये। दुर्गाबहनके प्रति वफ़ादारी और पाप भीरू प्रकृतिके कारण महादेवके लिअे अैसा व्यवहार शारीरिक रूपमें ही असम्भव था। थोड़ी देरमें स्वस्थ होनेके बाद अुन्होंने अुस बहनको समझाया। अुसे अपने घरमें सम्मान कराया और झटपट चले जानेको कहा। परन्तु बादमें महादेवको सारी रात नींद नहीं आअी। दूसरे दिन भी खूब अस्वस्थ रहे और परीक्षा भवनमें तो सब कुछ चक्रकी तरह फिरता ही दिखाअी दिया। अिसलिअे कुछ लिखे बिना अुठ आये। यह बात दुर्गाबहनके सिवाय और किसीसे अुन्होंने नहीं कही थी। दूसरे साल अेल-अेल० बी० की परीक्षाके समय जब हम साथ रहते थे, तब अेक बार छोटे-छोटे हम अपने अिस तरहके अनुभवोंकी बात कर रहे थे, तब अुन्होंने मुझसे यह बात कही थी।

हमारा सम्बन्ध कैसे हुआ

महादेव और मैं सन् १९१३ में साथ-साथ अेल-अेल० बी० पास हुअे थे। अुनके साथ पहले तो मेरी अप्रत्यक्ष दोस्ती हुअी थी। अिन्टर पास होनेके बाद मेरे अेक बहुत घनिष्ट मित्र मनुभाअी मेहता सेण्ट जेवियर्स कॉलेजमें पढ़ने अहमदाबादसे बम्बअी गये और वे भी गोकुलदास तेजपाल बोर्डिंगमें रहते थे। वहाँ अुनकी महादेवके साथ गाढ़ मैत्री हो गअी। मैं तो अहमदाबादमें गुजरात कॉलेजमें ही था। मित्रके मित्रकी हैसियतसे महादेवके साथ मेरा पत्र-व्यवहार शुरू हुआ। हम प्रत्यक्ष मिले सन् १९११ के अन्तमें, जब सम्राट पंचम जॉर्ज भारत आये थे और अुनका स्वागत करनेके लिअे अपॉलो बन्दर पर विशाल अेम्फिथियेटर बनाया गया था।

अुस थियेटरमें जानेके लिअे मेरा पास भी भाअी महादेवने ही ला दिया था। अिसके बाद मैं अेल-अेल० बी० की पढ़ाअीके लिअे बम्बअी गया। अेक बीमा कम्पनीमें नौकरी करता और कमरा लेकर शांताक्रूजमें रहता। महादेव परेलमें रहते थे। हम यदा-कदा लॉ कॉलेजमें और घर जाते समय लोकल ट्रेनमें मिलते। फाअिनल अेल-अेल० बी० के आखिरी सत्रमें हम बहुतसे विद्यार्थी ग्रांट रोड स्टेशनके पास पार्वती मेन्शनमें, जो अुस वक्त नया बना था, रहने चले गये थे। आखिरी सत्रमें पढ़नेकी खातिर मैंने नौकरी छोड़ दी थी, परन्तु कमरा रख छोड़ा था और अकेला ही रहता था। महादेवने तो कमरा भी छोड़ दिया था। मनुभाअी सहकुटुम्ब पार्वती मेन्शनमें रहते थे। हम दोनों अुनके यहाँ खाते थे। अुस समय महादेव और मैं बहुत ही घनिष्ट सम्पर्कमें आये और हमारा सम्बन्ध सगे भाअीसे भी अधिक हो गया।

कसौटीके दूसरे प्रसंग

अुन्होंने अपनी सब बातें बापूजीसे कही थीं। अुनमें अेल-अेल० बी० की परीक्षाके समयकी यह कसौटीकी बात भी कही होगी। आगे चलकर अैसे चार अनुभव महादेवको हुअे थे — दो हिन्दुस्तानी बहनोंके साथ और दो युरोपियन बहनोंके साथ। हिन्दुस्तानी बहनोंके साथ जरा गहरे पानीमें अुतर गये थे, परन्तु शरीरकी शुद्धि कायम रख सके थे। मनका ज्यादा हुआ मैल वे पश्चात्तापके आँसुओं द्वारा धो डालनेमें समर्थ हुअे थे, अैसी मेरी आत्मा गवाही दे रही है। युरोपियन बहनोंके साथके प्रसंगोंमें तो वे अुनसे ही पूरा फासला रख सके थे। अुन

चारों बहनोंको अुन्होंने सन्मार्ग पर लाया। अिस बारेमें किशोरलालभाआीने बहुत सुन्दर भाषामें लिखा है, अिसलिअे अुन्हींके शब्द अुद्धृत करता हूँ :

"महादेवभाआीके सौजन्य, दाक्षिण्य, साहित्य-संगीत-कला वगैरामें निपुणता, कोमल भावनाओंसे भरा हुआ स्नेहके वश हो जानेवाला स्वभाव, हृष्टपुष्ट और मनोहर तारुण्य — अिन सब कारणोंसे अिन्हें अेकसे अधिक बार बहुत नाजुक परिस्थितिका सामना करना पड़ा। आम तौर पर स्त्रियाँ आक्रमणशील नहीं होतीं। परन्तु अैसा लगता है कि कभी-कभी जीवनसे असन्तुष्ट, दुःखी और किसीके हाथमें फँस चुकी बहनें समभावी और समर्थ पुरुषका आश्रय ढूँढ़नेमें आक्रमणशील भी हो जाती हैं। महादेवभाआीको दो चार बार अैसा अनुभव हुआ। हनुमान जैसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्यका वे दावा नहीं कर सकते थे, परन्तु अुनकी वफादारीकी भावना हनुमानसे कम नहीं थी; और वफादारी केवल स्वामीके प्रति ही नहीं, पत्नीके प्रति भी अुतनी ही तीव्र थी। अिस वफादारीने अुन्हें बचाये रखा और अुन्होंने बड़ी लगनके साथ अिन बहनोंको सीधे मार्ग पर लाया, अूँचे चढ़नेमें मदद दी और साथ-साथ अपने चरित्रकी भी रक्षा की।

"हनुमानके नैष्ठिक ब्रह्मचर्यका अुन्हें सौभाग्य नहीं मिला, परन्तु पर-स्त्रीके मोहसे बचनेमें सफल होनेका चारित्र्य अुन्होंने सिद्ध किया। अिसमें अुन्हें बहुत मुसीबत, मानसिक क्लेश और परितापका भी अनुभव करना पड़ा। अिन अनुभवोंसे अुनकी स्वाभाविक नम्रतामें और वृद्धि हुआी।"

ओरियन्टल ट्रांस्लेटरकी आफिसमें शिक्षा

अेल-अेल० बी० की पढ़ाअीके दिनोंमें अुन्होंने ओरियन्टल ट्रांस्लेटरके दफ्तरमें नौकरी की। अुसमें मिली हुअी तालीम अुनकी भावी कारगुजारीमें बहुत अुपयोगी सिद्ध हुअी। अखबारों और पुस्तकोंमें जिस भागका सरकारकी दृष्टिसे आपत्तिजनक मालूम होना संभव हो, अुसका अंग्रेज़ी अनुवाद करके अूपरके अधिकारीके पास निर्णयके लिअे पेश करना अिनका काम था। साथ ही अैसे अक्षरशः अनुवादके सिवाय सारे लेखका और कभी-कभी सारी पुस्तकका सारांश भी अुन्हें अंग्रेज़ीमें देना होता था। बापूजीका पत्र-व्यवहार सम्हालने और अुनके साप्ताहिक चलानेमें मदद करनेमें, अेक भाषासे दूसरी भाषामें जल्दी ही किन्तु ठीक व सुन्दर अनुवाद करनेका अुनका जो अभ्यास था और लंबे पत्रों और लेखोंमें से मुख्य-मुख्य मुद्दे छाँटकर अुन्हें प्रामाणिक रूपमें पेश करनेकी अुनकी जो खूबी थी, अुसकी बुनियाद अिस दफ्तरमें अुन्होंने ढाओ-तीन वर्ष जो काम किया, अुसके दरमियान रखी गअी थी, यह हम ज़रूर समझ सकते हैं।

जब दफ्तरमें दूसरे लोग सारे समय कामोंमें लगे रहते, तब महादेव अपने जिम्मे आये हुअे कामको थोड़े ही समयमें पूरा कर डालते और कभी-कभी दूसरोंको मदद देते या अपना निजी अध्ययन करते। अुस समयके ओरियन्टल ट्रांस्लेटर मि० हसनुद्दीन फारूकीका अुन्होंने खास तौर पर प्रेम संपादन

हो रही थी, महादेवकी मुलाकात हो गअी। महादेवने अिन लोगोंके साथ साफ बात कर ली कि मेरा मुख्य अुद्देश्य जलवायु परिवर्तन है, अिसलिअे लड़केको निश्चित किये हुअे समय पर पढ़ा देनेके सिवाय बाकीका सारा समय मेरा अपना रहेगा; आप अपने व्यापार-धंधे सम्बन्धी या दूसरे कोअी काम मुझे सौंप नहीं सकेंगे। अिस शर्तका पालन कड़ाअीके साथ करना हो तो मैं साथ चलूँ। कहनेकी ज़रूरत नहीं कि अिस शर्तके पालनका सवाल ही पैदा नहीं हुआ। महादेवने सारे परिवारका दिल जीत लिया और लड़का तो अुन पर मोहित ही हो गया।

मॉर्लेकी 'ऑन कॉम्प्रोमाअिज़'का अनुवाद

ओरियन्टल ट्रांस्लेटरके दफ्तरमें जब काम करते थे, तब बहुत करके सन् १९१३ में बम्बअीकी गुजरात फार्बस सभाकी तरफसे लार्ड मॉर्लेकी 'ऑन कॉम्प्रोमाअिज़' पुस्तकका अनुवाद करनेके लिअे १००० रु. का पुरस्कार घोषित किया गया था। महादेव अिस स्पर्धामें शरीक हुअे और तीन-चार पन्नोंका अनुवाद नमूनेके तौर पर परीक्षकोंके पास भेज दिया। अिस स्पर्धामें साहित्यके क्षेत्रमें प्रसिद्ध और विद्वान माने जानेवाले कुछ व्यक्ति भी थे। फिर भी परीक्षकोंने महादेवका नमूनेका अनुवाद पास किया और अुन्हें यह काम सौंपा गया। साहित्यके क्षेत्रमें बिलकुल अपरिचित अेक नये ग्रेज्युअेटको, दूसरे सुपरिचित व्यक्तियोंके स्पर्धामें होते हुअे भी, अेक गहन मानी जानेवाली पुस्तकके अनुवादके लिअे पसन्द किया गया, अिससे बहुतोंको आश्चर्य हुआ था। अुसके बाद सन् १९१४ में सूरतमें साहित्य परिषद हुअी थी। अुसमें हम गये थे। हम जब घूमते होते तब महादेवकी

तरफ अुंगली करके कुछ हंस कहते कि, "'मोर्लेमाफिक' वाला महादेव हमेशाकी देखभाल यह है।" यह हमें सुनायी दिया था। जब अहमदाबादमें वकालतके लिये रहे थे, तब अुन्होंने यह अनुवाद पूरा कर दिया था। परन्तु आश्रममें आनेके बाद पूरा ही खूब सुधार लिया था। अुसके आरम्भके कुछ प्रकरण सुधारनेमें काका साहबने भी काफी मदद दी थी। सन् १९२५में 'सत्याग्रहकी मर्यादा' के नामसे यह पुस्तक नवजीवनकी तरफसे प्रकाशित हुआी है।

१३

अहमदाबादमें वकालत

१९१२के आखिरमें अेल-अेल० बी० पास हुअे। अुस साल कोअी भी प्रथम श्रेणीमें नहीं आया था। जिस 'अिक्विटी' के पर्चेमें महादेव गत वर्ष छूट कर चले गये थे अुसमें अिस वर्ष पहले नंबर आये। परीक्षा-समारम्भ हो जानेके बाद क्या करें, अिसका विचार कर ही रहे थे कि अितनेमें पिताजीकी बदली अहमदाबाद वीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेजमें हेडमास्टरके रूपमें हो गअी। अिसलिअे अहमदाबादमें वकालत करें, तो घरखर्चका सवाल रहता ही नहीं था। मैं भी अुन दिनों अहमदाबाद सीखता था। अिसलिअे अंतमें जून १९१४ में नौकरीसे अिस्तीफा देकर वे अहमदाबाद आ गये और अहमदाबाद डिस्ट्रिक्ट कोर्टकी सनद ले ली। कुल मिलाकर मुश्किलसे डेढ़ वर्ष वे अहमदाबाद रहे होंगे। वकीलकी हैसियतसे अुनके हाथमें अेक ही मामला आया

१४
सहयोग समितियोंके अिंस्पेक्टर

अितनेमें पिताजीके निवृत्त होनेकी तारीख नज़दीक आने लगी। पिताजीके निवृत्त होनेके बाद सिर्फ अपनी वकालत पर अहमदाबादका घरखर्च भारी पड़ जायगा, अिस विचारसे महादेव बड़े पसोपेशमें पड़ गये। वैकुण्ठभाअी महेता बम्बअीके सेन्ट्रल कोऑपरेटिव बैंकमें काम करते थे। सहयोग आन्दोलनका यह आरम्भ काल था। अिस बैंकको देहातकी सहयोग समितियोंको रुपया अुधार देना होता था। अिसलिअे यह देखनेके लिअे कि अिन समितियोंका कारबार अच्छी तरह चलता है या नहीं, बैंकको अपना अेक अिन्स्पेक्टर रखनेकी ज़रूरत थी। अिसलिअे अुन्होंने महादेवको यह काम सुझाया। महादेवने अिस कामको स्वीकार किया और गुजरात और महाराष्ट्रकी सहयोग समितियोंके निरीक्षणका काम अुन्हें सौंपा गया। अुनके कामके बारेमें वैकुण्ठभाअी लिखते हैं: "जैसे और काम वे अच्छी तरह करके दिखाते, अुसी तरह अिस कामको भी किया था। जिन समितियोंको वे देखने जाते — फिर वे गुजरातमें हों या महाराष्ट्रमें — अुन समितियोंके कार्यकर्ताओं और सदस्योंके साथ बहुत मीठा सम्बन्ध बनाकर आते। समितियोंकी परिस्थिति और अुनके सदस्योंकी ज़रूरतों वगैराके मामलेमें अुनके निवेदन जानकारी और मूल्यवान सूचनाओंसे भरे हुअे ही नहीं होते थे, बल्कि शैली और भाषाकी दृष्टिसे मनन करने योग्य भी बन जाते थे।

"अुनके कार्यकालमें अेक घटना हुअी, जिसका अुल्लेख करने योग्य है। खेड़ा जिलेमें अेक सहयोग समितिको देखनेके बाद

महादेव भाअीने अेक खास सिफारिश की थी और अुस पर अमल करनेके लिअे सीधी बैंकको भेज दी थी। सीधी भेजनेका कारण यह था कि सरकारके सहयोग विभागकी तरफसे अुस क्षेत्रमें अवैतनिक प्रचारककी हैसियतसे जो भाअी काम करते थे, अुन्होंने समितिकी कर्जकी अर्जी बिना किसी ठोस कारणके रोक रखी थी। परन्तु महादेवने सारा हाल सीधा बैंकको भेज दिया, अिसलिअे अुन भाअीको लगा कि अुनकी अवहेलना हुअी। प्रचलित रूढ़िके अनुसार यह सिफारिश अुनके मारफत होनी चाहिये थी, अैसी शिकायत अुन्होंने सहयोग विभागके रजिस्ट्रारसे की और बताया कि अिस तरह कारबार होगा तो तंत्रमें गैर-जिम्मेदारी घुस जायगी। असलमें अुस प्रचारकको रुपया अुधार नहीं देना था और कानूनके अनुसार अुसकी कोअी जिम्मेदारी नहीं थी। फिर भी सहयोग विभागके अुच्च अधिकारीने बैंकको हिदायत दी कि वह महादेवभाअीको ताकीद कर दे कि वे प्रचलित रूढ़िके अनुसार काम करें और जो सिफारिश महादेवभाअीने की थी, अुसे जाँचके लिअे अवैतनिक प्रचारकके पास भेज दे। जवाब तलब होने पर महादेवभाअीने अैसा तर्कपूर्ण और सचोट अुत्तर दिया कि अुसे पढ़नेके बाद सरकारी रजिस्ट्रार अपनी हिदायतके बारेमें कुछ भी आग्रह नहीं रख सके। अुलटे अुन्हें मानना पड़ा कि सीधा पत्र-व्यवहार करके महादेवने समितिकी असुविधा दूर करके अुसकी सेवा की थी।

"नअी संस्थामें सच्चाअी, निर्भयता और सेवाभावकी यह छाप महादेवने डाली। अुसके लिअे बैंकके अुस समयके संचालककी हैसियतसे मैं अुनका सदाके लिअे ऋणी रहूँगा।

"बैंकके साथके अिस सम्बन्धके कारण महादेवभाअीका गाँवके सामाजिक और आर्थिक प्रश्नोंसे पहली ही वार परिचय हुआ।

सुन्दर अक्षर, सुन्दर भाषा और मोहक शैली

"अेक और बातका असर, जो मेरी स्मृति पर रह गया है, यह है कि अुनके सरकारी निवेदनोंमें भी साहित्यिक शैलीकी छाप रहती थी। और अुनके सुन्दर अक्षर* हमारे दफ्तरमें

* चम्पारनके सत्याग्रहके दिनोंमें बिहारके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरने वापूजीसे कहा था कि आपके पास अैसे सुन्दर और कलामय अक्षर लिखनेवाला जो आदमी है, अुस पर तो मैं मुग्ध हो जाता हूँ। अिस पर वापूजीने कहा था कि लेफ्टिनेण्ट गवर्नरके पास, मुझे तुम्हें भेजना होगा, तब तुम्हारे अक्षरोंका ही परिचय दूँगा। वाअिसरॉय लार्ड चेम्सफोर्डका प्राअिवेट सेक्रेटरी सर जॉन मेफी भी महादेवके अक्षरों पर मोहित हो गया था और अुनके साथ अुसकी गहरी मित्रता होनेमें शुरूका कारण अुनके अक्षर ही थे। अुसने अेक वार महादेवसे कहा था कि वाअिसरॉयके स्टाफमें अेक भी आदमी अैसे अक्षर लिखनेवाला नहीं है। वाअिसरॉयको भी तुम्हारे अक्षरोंसे अीर्ष्या होती है।

वापूजीने जब विहारके लेफ्टिनेण्ट गवर्नरकी वा[illegible] तब महादेवने कहा: "यों[illegible] के अक्षर भी सुन्दर [illegible] सर्विस कान्फरेन्सके [illegible] भाषण [illegible] मैंने कहा, तब अ[illegible] रेने अितने [illegible] लिख दिया है, अु[illegible] किया हुआ [illegible]"
वापूजीने क[illegible] अक्षर [illegible]
मुझे पसन्द [illegible]
महादेवने जब [illegible] के [illegible]
तब वापूजीने [illegible] अ[illegible]
सकते हैं, परन्तु

सबका मन हर लेते थे। अुन्हें सफरमें बड़ी दिक्कतें अुठानी पड़ती थीं, फिर भी अुनके निजी पत्रोंमें किसानोंके लिअे गहरी भावना और ग्रामजीवनके प्रति स्वाभाविक प्रेम दिखाअी देता था। मैं नहीं कह सकता कि महादेवभाअी कवि अधिक थे या दार्शनिक, परन्तु अुनके पत्रोंमें आनेवाले वर्णनोंमें आज तक सुप्त रहा कवि स्पष्ट दिखाअी देता था। कॉलेजमें मैं अुन्हें अच्छा अध्ययन करनेवाले और पढ़नेका प्रचुर रस रखनेवालेके रूपमें जानता था। परन्तु अिस समयके अपने परिचयमें मैं यह देख सका कि अुनमें प्रथम पंक्तिकी साहित्यिक कला है। अुनका गुजराती और अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान प्रभुत्व था।"

अेक बार काका साहबने पूछा था कि तुम्हें मराठी अितनी बढ़िया कैसे आती है? तब महादेवने कहा था कि मैंने सहयोग समितियोंके अिन्स्पेक्टरके तौर पर बैलगाड़ियोंमें बैठकर महाराष्ट्रमें खूब सफर किया है। साथके महाराष्ट्रियोंकी थैलीके पान खाते-खाते मैं मराठी सीख गया। मैंने महाराष्ट्री ग्रामवासियोंके साथ खूब बातें की हैं।

अर्जुन भगतके भजनोंका सम्पादन

अेक बार वे अंकलेश्वर ताल्लुकेके धड़खोल गाँवमें गये थे। अुस गाँवमें अेक अर्जुन भगत हो गया है। अुसके भजन लोगोंसे सुने। महादेवको ये भजन बहुत भक्तिभाववाले मालूम हुअे। भगतके लड़कोंसे भजनोंकी हाथसे लिखी हुअी पुस्तक ले ली। लड़कोंने कहा कि हमारे पास साधन न होनेसे हमने नहीं छपवाये। महादेवने अिन भजनोंको सम्पादित करके नवजीवनकी तरफ़से 'अर्जुनवाणी' नामसे सन् १९२५ में छपवाया।

अुस समयकी सहयोग समितियोंकी कमजोरियाँ भी महादेवने बैंकके सामने अच्छी तरह प्रकट की थीं। बहुतसे साहूकार सहयोग समितियोंके सदस्य बन जाते और कर्ज़ न लौटा सकनेवाले अपने कर्जदारोंको समितिसे रुपया अुधार दिलवाकर अपना कर्ज़ वसूल कर लेते थे। अेक समितिके मन्त्रीने तो समितिका रुपया अुड़ा भी लिया था। महादेवने धमकाकर अुससे रुपया जमा करवा दिया। महादेवको अिन्स्पेक्टरकी हैसियतसे अलग-अलग गाँवोंमें घूमना होता था। अिसके लिअे वे साथमें अेक आदमी रखते और अपना भोजन बना लेनेका सारा सामान रखते थे। किसी जहग धर्मशाला या अिसी तरहके सार्वजनिक स्थानमें ठहरना संभव न होता, तभी वे समितिके मन्त्रीके यहाँ रहते थे। तदनुसार अेक मंत्रीके यहाँ महादेव रातको सो रहे। अुनका हृदयद्रावक वर्णन अेक दिन मेरे सामने किया। वह मंत्री शराबमें चूर होकर घर आया और सारी रात स्त्रीको परेशान करता रहा। घरमें अेक अनजान आदमी सोये हुअे थे, अिसलिअे अुस स्त्रीने अपनी सिसकियाँ दबानेका बहुत प्रयत्न किया, परन्तु महादेवने सुन लीं। अुनके जीमें तो आया कि अुठकर अुसे ठीक करूँ। परन्तु अितनी अधिक रात गये पति-पत्नीके झगड़ेमें पड़ना ठीक न लगा। अुसके बारेमें भी महादेवने बड़ी कड़ी रिपोर्ट की थी। महादेवकी ये रिपोर्टें सरकारी रजिस्ट्रारको ज़रूरतसे ज्यादा कड़ी लगती थीं। अुनका खयाल था कि सहयोग आन्दोलन मुश्किलसे तो शुरू होता है। अिस पर अितनी कड़ाअी रखी जायगी, तो समितियोंकी संख्या बढ़ाअी नहीं जा सकेगी। महादेवभाअीके हृदयने अिस निरीक्षणोंके

विरुद्ध विद्रोह किया। साथ ही सख्त प्रयाससे भी वे अूब गये थे, अिसलिअे यह नौकरी छोड़ दी।

होमरूल लीगके साथ सम्बन्ध

अुस समय महला विश्वयुद्ध पूरे जोरसे चल रहा था और भारतसे अधिकसे अधिक सहायता लेनेकी अिंग्लैंडको गरज थी। तत्कालीन भारत मंत्री मि० मोन्टेग्यूने अेक भाषण दिया, जिसमें बताया कि लड़ाअी बन्द हो जानेके बाद हिन्दुस्तानको तुरन्त हमें स्वराज्य दे देना चाहिये, हिन्दुस्तानका मौजूदा शासन-तन्त्र जड़ और काष्ठवत् बन गया है, वगैरा। अिस भाषणका भारतीय राजनीतिज्ञोंके मन पर बडा भारी असर हुआ था। बम्बअी होमरूल लीगने श्री वेलवीके मारफत महादेवभाअीसे अिस भाषणका अनुवाद करवा कर छपवाया। यह अनुवाद अितना बढ़िया हुआ था कि श्री शंकरलाल बैंकरको लगा कि महादेवको होमरूल लीगमें ही रख लिया जाय। श्री जमनादास द्वारकादास अुस वक्त बम्बअीके अेक प्रमुख नेता माने जाते थे। अुन्होंने महादेवसे अपने सेक्रेटरीके रूपमें रहनेका आग्रह करना शुरू किया। वैकुण्ठभाअी तो अिन्हें छोड़नेको तैयार ही नहीं थे। अुन्होंने कहा: "तुम भले ही अिन्स्पेक्टरके तौर पर काम न करो, परंतु मैं तुम्हें हमारे बैंककी हैदराबाद (दक्षिण) शाखाके मैनेजरकी जगह देनेकी व्यवस्था कर दूँगा।" अभी-अभी हम देखेंगे कि अिनमेंसे अेक भी काममें महादेवका जी नहीं लगता था। अुनका भावी अुन्हें बापूकी तरफ खींच रहा था। फिर भी वे पन्द्रह दिन श्री जमनादास द्वारकादासके सेक्रेटरी रहे। श्री जमनादास महीच

ज़िला राजनैतिक परिषदके अध्यक्ष बने थे। अुनका भाषण महादेवने तैयार कर दिया था। यह अेक ही काम अुन्होंने अुनके सेक्रेटरीकी हैसियतसे किया था।

१५

बापूजीके साथका पहला प्रसंग

अब अिस मुद्देको लें कि वे बापूजीके सम्पर्कमें कैसे आये। अप्रैल १९१५ में बापूजीने अहमदाबाद आकर कोचरबके पास भाड़ेके बंगलेमें आश्रमकी शुरुआत की। थोड़े समय बाद अुन्होंने आश्रमके अुद्देश्यों और नियमोंका अेक मसौदा प्रकाशित किया और आश्रमके नाम और नियमावलिके बारेमें सारे देशमें से मित्रोंकी राय और आलोचना माँगी। अिस मसौदेकी कुछ नकलें गुजरात क्लबकी मेज पर भी आअी थीं। अिनमें से अेक लेकर हमने पढ़ी और अुस पर आलोचना लिख भेजनेका विचार किया। पहले तो हम दोनोंने स्वतंत्र रूपसे लिखा और बादमें हमारे दोनोंके लेखमें से अेक सम्मिलित पत्र तैयार किया और बापूजीको भेज दिया। हमने प्रार्थना की थी कि अुसका लिखित अुत्तर देनेका कष्ट न करके ठीक मालूम हो, तो रूबरू बुला लें। अुस पत्रकी नकल तो अिस समय मेरे नहीं है, परन्तु लाज़िमी ब्रह्मचर्यसे अनेक दोष पैदा होनेकी है और हाथके अुद्योगोंका ही आग्रह रखनेसे दे . प्रगति रुक जानेका डर है, अिस तरहकी आले अपना पुस्तक-पांडित्य हमने अुँड़ेला था। पाँच

जवाब नहीं आया, अिसलिअे हमने मान लिया कि गांधीजीको हमारा पत्र महत्त्वका प्रतीत नहीं हुआ होगा।

अिस अरसेमें अहमदाबादके प्रेमाभाअी हॉलमें अेक सार्वजनिक सभामें बापूजी भाषण करने आये। वहाँसे बापूजी आश्रम लौट रहे थे। हम अुनके पीछे-पीछे चले। अुनकी चाल तेज़ थी, अिसलिअे लगभग दौड़कर हम अेलिसब्रिज पर अुन्हें पकड़ पाये और अपने पत्रकी बात कही। अुन्होंने कहा: "हाँ, दो जनोंके हस्ताक्षरोंवाला अेक पत्र आया तो है। वे दो तुम्हीं हो! मैं तुम्हें बुलवानेवाला ही था। दूसरे प्रान्तोंसे बहुतसे अच्छे-अच्छे पत्र आये हैं। सर गुरुदास बनर्जीका पत्र तो बहुत ही अच्छा है। गुजरातसे थोड़े ही पत्र आये हैं। अुनमें तुम्हारा मुझे ठीक लगा है। तुम्हें मैं ज़रूर वक्त दूँगा। तुम्हें अभी समय हो तो मेरे साथ आश्रममें चलो। हम बातें करेंगे।"

प्रथम दीक्षा

हम तो खुश होकर अुनके साथ चलने लगे। बापूजीने हमसे पूछा: "क्या करते हो?" "वकालत" यह जवाब दिया। अिस पर पूछा: "तुम्हारे पास ताजा 'अिन्डियन अियर बुक' है? मुझे अुसमें से कुछ देख लेना है।" मैंने कहा: "मेरे पास पिछले सालकी है। परन्तु ताजा जुटाकर आपके पास भेज दूँगा।" अिस पर कहने लगे: "अैसे कैसे वकील हो! मैं जब हजामत करता था, तब सारा सामान नयेसे नये ढंगका रखता था।"

आश्रममें पहुँचनेके बाद हमारा पत्र निकाला। अुसमें से पढ़ते गये और विवेचन करते गये। लगभग डेढ़ घण्टे तक अपने आदर्श और विचारसरणी समझाअी। हम बीचमें कहीं कहीं दलील करते, मगर हमें अधिकतर सुनना ही था। अिस डेढ़ घण्टेकी वाग्धाराका हम दोनोंके चित्त पर गहरा असर हुआ। लगभग दस बजे हम आश्रमसे रवाना हुअे। बादलोंकी रात थी। झरमर झरमर छींटे पड़ रहे थे। हम दोनों कुछ भी बोले बिना साथ-साथ चल रहे थे। हाँ, विचार तो हम दोनोंके दिलमें अेक ही चल रहे थे। अेलिसब्रिज पर आने पर महादेव बोले: "नरहरि मेरे तो जीमें आती है कि अिस पुरुषके चरणोंमें बैठ जाअूँ।" मैंने जवाब दिया: "अैसा कर सकें तो हमारे धन्य भाग्य। परन्तु अभी तो कोअी निर्णय हो नहीं सकता।" फिर हम शान्त हो गये और कुछ भी बोले बिना ही अपने-अपने घर पहुँचे। यह थी हमारी पहली दीक्षा, आश्रममें सम्मिलित होनेके संकल्पका प्रथम अुदय।

सन् १९१६में लॉर्ड मॉर्लेके 'ऑन कॉम्प्रोमाअिज़' का अनुवाद महादेवने लगभग पूरा कर डाला था। अुसे छपवानेसे पहिले लॉर्ड मॉर्लेकी मंजूरी लेनी चाहिये। स्वीकृति लेनेके पत्रका मसविदा महादेवने तैयार किया और मुझसे बोले: "लॉर्ड मॉर्ले जैसे आदमीको पत्र लिखनेके लिअे हम अंग्रेजोंके रीति-रिवाज और शिष्टाचारके जानकार किसी ताजा अिंग्लैंड जाकर आनेवाले व्यक्तिको यह पत्र दिखा दें तो अच्छा होगा।" मैंने कहा: "और किसीको दिखानेकी अपेक्षा गांधी साहबको (हम अुस समय अुन्हें गांधी साहब कहते थे) पास ही क्यों

न जायें?" हम पत्र लेकर आश्रममें गये । महादेवने 'कॉम्प्रोमाअिज़' के अनुवादके सम्बन्धमें सारा हाल कह कर वह पत्र बापूजीको दिखाया । पत्र पढ़कर वे ज़रा दुःखके साथ बोले: "अंग्रेज हमें खुशामदी और स्वराज्यके लिअे अयोग्य बताते हैं, सो क्या यों ही बताते हैं? असे पत्रमें तुम मॉर्लेकी विद्वत्ता और तत्ववेत्तापनके अितने गुणगान करो, यह असगत है। और अुन्हें पत्र लिखते हुअे तुम्हारी कलम और हाथ काँपे क्यों? तुम्हें तो अेक कामकाजी पत्र लिखना है । अुसमें अितना-सा आ जाय कि 'फोर्ब्स सभा' ने अिस कामके लिअे तुम्हारा चुनाव किस तरह किया और तुमने बहुत ध्यानपूर्वक अनुवाद किया है । असा पत्र तो दस-पन्द्रह लकीरोंका होना चाहिये । अिससे लम्बा पत्र लिखोगे, तो लार्ड मॉर्ले अुसे पढ़ेंगे भी नहीं । तुम चाहो तो मैं तुम्हें पत्र लिखा दूँ । लिखो।"

स्वभाषाकी अुपासनाकी दीक्षा

अुस दिन गुजराती भाषा और साहित्य सम्बन्धी विषयों पर हमारी काफी बातें हुआीं। अिन बातोंमें कभी-कभी जोशमें आकर महादेव काफी अंग्रेज़ी शब्द और वाक्य भी बोल जाते थे । सब कुछ सुन लेनेके बाद जरा अुपहासके साथ मुस्कराते हुअे बापूजीने महादेवसे कहा: "अपनी माँके सामने असा सब बोलो, तो माँ जानेगी कि लड़का बहुत पढ़ा हुआ है, परन्तु बेचारी कुछ समझेगी नहीं।" अिसके बाद अिस पर विवेचन हुआ कि हम पढ़े-लिखे लोग गुजराती भाषाके प्रति लापरवाह रहकर कितने अपराधी बने हैं । गुजराती भाषाकी अुपासना करनेकी यह दूसरी दीक्षा हमें मिली और हम बापूजीके प्रशंसक

बन गये। परन्तु स्वर्गीय मोहनलाल पंडया और स्वर्गीय दयालजीभाअी तो गांधीजीके पीछे पागल हो गये थे, यह कहा जा सकता है। पंडयाजी मेरे और दयालजीभाअी महादेवके अेक तरहसे बुजुर्ग थे। हम दोनोंको बापूजीकी तरफ खींचनेमें अिन दो बुजुर्गोंका भी हाथ था, यह मुझे स्वीकार करना चाहिये।

फिर तो महादेवभाअी सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंककी तरफसे सहयोग समितियोंके अिस्पेक्टर हो गये। अुनके पिताजी निवृत्त हो गये, अिसलिअे महादेवका अहमदाबाद आना कम होने लगा। हाँ, मैं अक्सर आश्रममें जाता था। और महादेव जब अहमदाबाद आते, तब हम दोनों जाते थे। अिस अर्सेमें महादेवका अेक छोटाभाअी ठाकोर गुजर गया। अुसकी स्मृतिमें अपनी नअी नौकरीसे बचाये हुअे ५०० रुपये महादेवने बापूजीको भेंट किये।

१६

गिरमिट प्रथा रद्द करानेका आन्दोलन

मेरा आश्रममें जाना बढ़ता गया। अफ्रीका और फीजी वगैरा अुपनिवेशोंमें भारतीय मज़दूरोंको पाँच वर्षकी शर्त पर गोरे ज़मींदारोंकी विशाल खेतियों पर मज़दूरी करनेके लिअे ले जानेकी प्रथा थी। यह प्रथा 'अेग्रीमेन्ट' शब्दके अपभ्रंश परसे 'गिरमिट' के नामसे मशहूर थी। अुसे बन्द करानेका प्रस्ताव मॉर्ले-मिण्टो सुधारोंके अनुसार नअी बनी हुअी दिल्लीकी धारासभामें गोखलेजीने सन् १९१२ में पेश किया था। परन्तु सरकारने अुस पर कोअी अमल नहीं किया था।

बन गये। परन्तु स्वर्गीय मोहनलाल पंड्या और स्वर्गीय दयालजीभाअी तो गांधीजीके पीछे पागल हो गये थे, यह कहा जा सकता है। पंड्याजी मेरे और दयालजीभाअी महादेवके अेक तरहसे बुजुर्ग थे। हम दोनोंको बापूजीकी तरफ खींचनेमें अिन दो बुजुर्गोंका भी हाथ था, यह मुझे स्वीकार करना चाहिये।

फिर तो महादेवभाअी सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंककी तरफसे सहयोग समितियोंके अिंस्पेक्टर हो गये। अुनके पिताजी निवृत्त हो गये, अिसलिअे महादेवका अहमदाबाद आना कम होने लगा। हाँ, मैं अक्सर आश्रममें जाता था। और महादेव जब अहमदाबाद आते, तब हम दोनों जाते थे। अिस अर्सेमें महादेवका अेक छोटाभाअी ठाकोर गुजर गया। अुसकी स्मृतिमें अपनी नअी नौकरीसे बचाये हुअे ५०० रुपये महादेवने बापूजीको भेंट किये।

१६

गिरमिट प्रथा रद्द करानेका आन्दोलन

मेरा आश्रममें जाना बढ़ता गया। अफ्रीका और फीजी वगैरा अुपनिवेशोंमें भारतीय मज़दूरोंको पाँच वर्षकी शर्त पर गोरे ज़मींदारोंकी विशाल खेतियों पर मज़दूरी करनेके लिअे ले जानेकी प्रथा थी। यह प्रथा 'अेग्रीमेन्ट' शब्दके अपभ्रंश परसे 'गिरमिट' के नामसे मशहूर थी। अुसे बन्द करानेका प्रस्ताव मॉर्ले-मिण्टो सुधारोंके अनुसार नअी बनी हुअी दिल्लीकी धारासभामें गोखलेजीने सन् १९१२ में पेश किया था। परन्तु सरकारने अुस पर कोअी अमल नहीं किया था।

बारडोली जमीन महसूल जाँचके समय, १९२८

बाओं ओरसे बैठे हुओ : १. सरदार साहब, २. भूलाभाओी देसाओी, ३. महादेवभाओी

बाओं ओरसे खड़े हुओ : १. नरहरिभाओी, २. गुलाबभाओी जोशी, अेडवोकेट, ३. रामनारायण वि० पाठक

मार्च १९१६ में पंडित मालवीयजी केन्द्रीय धारासभामें फिर यह प्रस्ताव लाये। वाअिसरॉय लॉर्ड हार्डिंगने प्रस्तावको मंजूर करते हुअे कहा कि सरकार अिस प्रथाको समय आने पर (in due course) रद्द करनेका वचन देती है। बापूजीको अिससे सन्तोष नहीं हुआ और अुन्होंने सरकारके साथ पत्र-व्यवहार किया। 'समय आने पर' का अर्थ वाअिसरॉयने यह किया कि 'दूसरी व्यवस्था जारी कर सकनेके लिअे जितने अुचित समयकी ज़रूरत पड़े अुतने समयमें'। अिससे नेताओंको सन्तोष नहीं हुआ और फरवरी १९१७ में अिस प्रथाको तुरन्त बन्द करनेका बिल धारासभामें पेश करनेकी अनुमति माँगी गअी। अुस वक्त वाअिसरॉयके पद पर लॉर्ड चेम्सफर्ड आ गये थे। अुन्होंने अनुमति नहीं दी। बापूजीको लगा कि अिसके खिलाफ देशव्यापी आन्दोलन करना चाहिये और ज़रूरत पड़े तो सत्याग्रहके लिअे यह कारण अुचित होनेसे सत्याग्रह करना चाहिये। नेताओंके साथ सलाह-मशविरेमें अुन्होंने बताया कि 'तुरन्त बन्द किया जाय' अिन शब्दोंका भी हम अेक अर्थ करेंगे और सरकार दूसरा ही करेगी। अिसलिअे हमारा प्रस्ताव यह होना चाहिये कि '३० जुलाअी १९१७से पहले यह प्रथा बन्द होनी चाहिये।' अिस आन्दोलनके सिलसिलेमें बापूजीकी वाअिसरॉयके साथ और नेताओंके साथ जो बातें होतीं, अुनमें से जाहिर करने जैसी बातें वे आश्रमकी प्रार्थनाके बाद कहते थे। जब बापूजी अहमदाबादमें होते, तब पण्ड्याजी आश्रममें नित्य जाते और मैं भी अक्सर अुनके साथ जाता। आश्रममें मिलने आनेवालोंसे बापूजी यह भी पूछते कि सत्याग्रह हो तो जेलमें

जानेको तैयार हो? पण्ड्याजीने और मैंने अिकरार किया था। महादेव अुस समय बैंकके अिन्स्पेक्टरकी नौकरी पर ही थे। आश्रममें होनेवाली बापूजीकी सभी बातोंके बारेमें लम्बे लम्बे पत्र मैं महादेवको लिखता था और बम्बअीकी हमारी मित्र मंडलीमें वे दिलचस्पीसे पढ़े जाते थे। कहनेकी ज़रूरत नहीं कि देशव्यापी आन्दोलन और बापूजीके मजबूत रवैयेके परिणाम-स्वरूप वाअिसरॉयने गिरमिट प्रथा ३० जुलाअीसे पहिले अुठा देनेकी घोषणा कर दी।

१७

मैं आश्रममें शरीक हुआ

अिसी अर्सेमें अर्थात् अप्रैल १९१७में बापूजीने चम्पारनमें सत्याग्रहका प्रयोग किया। अुन्हें चम्पारन जिला छोड़कर चले जानेका नोटिस दिया गया था और अुसे भंग करनेके कारण अुन पर जिस तारीखको मुकदमा चलनेवाला था, अुससे अगली रात अुन्होंने बहुतसे मित्रोंको पत्र लिखे और अपने लोगोंको [illegible] हुअे काम-काज सुपुर्द किये। आश्रममें मगनलालभाअी गांधीको, [illegible] की सूचनाओंसे भरा हुआ पत्र लिखा, अुसमें मेरे बारेमें लिखा कि भाअी नरहरिको आश्रमके [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रहनेका विचार किया और अुसके लिअे बापूकी मंजूरी ले ली। मैं आश्रममें रहने गया अुस समय गुजरात कॉलेजके प्रोफेसर साँकलचंद शाह और काकासाहब आश्रममें थे। आश्रममें राष्ट्रीय पाठशाला स्थापित करनेका अुन्होंने बापूजीके साथ विचार कर रखा था और अुसके पाठ्यक्रमकी और दूसरी तमाम बातोंकी जो चर्चा वे करते अुसमें मैं भाग लेता था। अन्तमें अुन्होंने वैशाख सुदी १५ यानी बोधि जयन्ती (७ मअी)का दिन पाठशालाके मंगल-मुहूर्तके लिअे तय किया। मैंने दो दिन पहले ही अुनसे कहा कि बापूजीकी अनुमति मिल जाय, तो मैं भी पाठशालामें सम्मिलित होनेको तैयार हूँ। मगनलालभाअी गांधीने कहा कि आप यह मान लीजिये कि बापूजीकी अनुमति है।

मैंने यह निर्णय तत्काल ही कर लिया। अपने कुटुम्बियों या सगे-सम्बन्धियोंसे अिस बारेमें नहीं पूछा। मुझे भरोसा था कि पूछूँगा तो स्वीकृति नहीं मिलेगी। जब मेरे निर्णयकी जानकारी हुअी, तब मेरे परिवारमें बड़ी खलबली मची। स्नेहियों और कुछ वकीलोंको, जो बुजुर्गके नाते मुझमें दिलचस्पी लेते थे, भी लगा कि अिसने हमारी सलाह तक न ली! अेक सब-जजने तो मुझे मिलनेका सन्देश भी भेजा। वे मुझे समझाकर मेरा निर्णय पलटवाना चाहते थे। सिर्फ़ अेक दादा साहब मावलंकर यह बात सुनकर मुझे बधाअी देने आश्रममें आये। महादेव और मैं तो बहुत समयसे यह विचार रखते ही थे, परन्तु अन्तिम निर्णय मैंने अचानक ही कर डाला। अिसलिअे वे हर्षित हुअे और मौका मिलते ही मुझसे मिलने आश्रममें आये।

महादेवकी अंग्रेजीने बापूजीका ध्यान खींचा

वे आये अुस समय बापू भी आश्रममें थे। बापूजीने सत्याग्रहका स्वरूप समझानेवाली अेक पत्रिका गुजरातीमें लिखी थी, जिसका अंग्रेजी करनेका काम अुन्होंने हम शिक्षकोंको सौंपा। अंग्रेज़ी भाषाकी बापूजीकी परीक्षामें हममें से कोअी पास नहीं हो सकता, यह हम जानते थे। अिसलिअे हम जरा परेशानीमें पड़े। अुसी दिन महादेव आ पहुँचे अतः मैंने अुन्हींको अनुवादका काम सौंप दिया। शामको चार बजे अुसे लेकर हम बापूजीके पास पहुँचे। वह अनुवाद बापूजी सुधार रहे थे, अुस समय महादेवने बापूजीके साथ अुस बारेमें काफ़ी चर्चा की। महादेवके अिस अनुवादने और सुधारते समय अुनकी चर्चाने बापूजीके हृदयमें महादेवभाअीको विशेष स्थान दिलाया।

१८

बापूजीने महादेवको माँग लिया

अगस्त महीनेमें महादेवभाअीने बैंकके [illegible] नौकरी छोड़ दी। अुसके बाद अुनकी [illegible] आअी, [illegible] [illegible] था सुना है। अिस अवधिमें वे [illegible] बापूजीसे [illegible] है। बापूजीने [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] हूँ।

बम्बअी,

२ सितम्बर, १९१७

भाअी नरहरि,

यह पत्र बिल्कुल खानगी लिख रहा हूँ। अिसमें लिखी बात तुम्हारे सिवा और कोअी न जाने, अैसा पहलेसे कहकर ही यह पत्र तुम्हें लिख रहा हूँ। मैंने तुम्हें कहा है कि गांधीजीके पास हर रोज मैं नियमित रूपसे जाता हूँ। ता० ३१ अगस्तके दिन सवेरे बापूजीने मुझे कुछ अैसे वचन कहे, जिनसे मैं प्रेम, आश्चर्य और आनन्दमें डूब गया। अुस दिनकी संक्षिप्त परन्तु कागज़ पर न लिखी जा सकनेवाली बातचीत कागज़ पर लिखनेका प्रयत्न कर रहा हूँ: "तुम्हें हर रोज़ अुपस्थित होनेके लिअे जो कहता हूँ, अुसका कारण है। तुम्हें मेरे पास ही आकर रहना है। पिछले तीन दिनोंमें मैंने तुम्हारा जौहर देख लिया है। पिछले दो बरससे मैं जैसे युवककी तलाश कर रहा था, वह मुझे मिल गया है। अिसे तुम मानोगे? मुझे अैसे आदमीकी ज़रूरत थी, जिसे मैं किसी दिन अपना सारा कामकाज सौंपकर शान्तिसे बैठ सकूँ, जिसका सहारा लेकर मैं निश्चिन्त हो सकूँ। और वह आदमी तुम्हारे रूपमें मुझे मिल गया है। होमरूल लीग, जमनादास वग़ैरा सबको छोड़कर तुम्हें मेरे ही पास आनेकी तैयारी करनी है। अिस जिन्दगीमें अैसे शब्द मैंने बहुत कम लोगोंसे कहे हैं। सिर्फ़ तीन ही व्यक्तियोंको — पोलाक, मिस श्लेशिन और भाअी मगनलाल। आज तुमसे वे शब्द कहने पड़ रहे हैं और आनन्दसे कह रहा हूँ। क्योंकि तुममें तीन गुण मैं खास तौर पर देख सका हूँ: प्रामाणिकता, वफ़ादारी और साथ-साथ होशियारी। मगनलालको मैंने अेक दिन ले लिया,

तब बाहरसे देखने पर मगनलालमें कुछ नहीं था। परन्तु आज तो तुम मगनलालको देखकर चकित हो रहे हो न? वह कुछ सीखा हुआ नहीं था। मैंने अुसे प्रेसके लिअे पहले पहल तैयार किया। पहले अुसने गुजराती कम्पोज़ करना सीखा और बादमें अंग्रेज़ी, और फिर हिन्दी, तामिल वगैरा सभी टाअिप होशियारीसे जमाना सीख गया; और यह सब अुसने अितने कम समयमें पूरा कर लिया कि मैं देखता रह गया। अिसके बाद तो अुसने कई बड़े-बड़े काम कर दिखाये। परन्तु मगनलालकी बात तो दूर रही। तुममें जो होशियारी मैंने देखी है, वह मगनलालमें नहीं देखी। अपने गुणोंके कारण तुम मुझे अनेक कामोंमें अुपयोगी सिद्ध होगे, यह मुझे भरोसा है।" [यह सब मैं कुछ आस्चर्य, कुछ शरम और पूरी खामोशीसे सुनता रहा। बीचमें ही मेरे मुँहसे निकल गया कि 'मैंने अपना किया हुआ कोअी काम बताया नहीं।' अुसके अुत्तरमें आगे यह कहा।] "तुम्हें क्या पता लगे? मैं तो बहुत थोड़े समयमें आदमीको परख लेता हूँ। पोलाकको पाँच घण्टेमें पहचान लिया था। अखबारमें मेरा अेक पत्र पढ़कर पोलाकने मुझे अेक खत लिखा और मिलने आया, तभी मैंने अुसे परख लिया और फिर तो वह मेरा हो गया। अुसने शादी की और वकील बना, सो भी मेरे ही यहाँसे। विवाह करनेसे पहले मुझसे कहा कि मुझे थोड़ा कमा लेना चाहिये, बाल-बच्चोंके लिअे। मैंने अुसे स्पष्ट कह दिया कि अब तुम मेरे हो। तुम्हारी चिन्ता और तुम्हारे बाल-बच्चोंकी चिन्ता मुझे है। मैं तुम्हारा ब्याह कर रहा हूँ; और तुम ब्याह कर लो, अुसमें कोअी आपत्ति नहीं है। और फिर मेरे घर ही अुसकी शादी हुअी।

खैर, यह बात तो हो गअी। परन्तु अब मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम होमरूल और जमनादासकी बात छोड़ दो। हैदराबाद जाओ, अेक आध वर्ष खाओ-पीओ, दुनियाका मजा लो और तृप्त हो लो। हैदराबादमें जानेके बाद जिस दिन और जिस क्षण तुम्हें अपना आपा मिटता दिखाअी दे, अुसी क्षण त्यागपत्र देकर चल देना और मेरे पास आकर बैठ जाना।" [अिस पर मैंने कहा कि 'मैं तो आज भी आनेको तैयार हूँ।'] "तुम तैयार हो, मैं जानता हूँ। लेकिन अभी तुमसे मेरा आग्रह है कि तुम जरा जिन्दगी देखो, मौज-शौक करो और तृप्त हो जाओ। तुम्हारे कोऑपरेशनके ज्ञानकी भी मुझे ज़रूरत पड़ेगी। हमें तो अुस विभागकी बुराअियाँ दूर करनी हैं। बिलकुल निश्चिंत रहकर थोड़े समय मौज-मजा करके मेरे पास ही आ जाओ। मुझे आश्रमकी शालाके लिअे या दूसरे कामके लिअे नहीं, बल्कि खुद मेरे लिअे तुम्हारी ज़रूरत है। तुम अेक साल या छः महीने खा-पी लो, तब तक मैं अपना काम चला लूँगा।"

लगभग आध पौन घण्टे मैं यह अमृत पीता रहा। अितनेमें लोगोंकी भीड़ होने लगी और हमारी खानगी बात बन्द हो गअी। हाज़िरी तो मैं देता ही हूँ और आज रातको पालगढ़ तक अुनके साथ वापिस जानेका विचार है। शंकरभाअी* के लिअे फल — अुनके अितनी ममता बतानेके बाद अुनके साथ मेजनेमें मुझे कुछ भी बुरा नहीं लगता। आज सवेरे मैंने अुनसे कहा कि बैंकर मुझसे बहुत नाराज़ हुअे हैं। अिस पर पूछा : "क्यों भला?" मैंने जवाब दिया : "मैंने परसों जो निश्चय किया

* मेरे बड़े भाअी जो अुस समय बीमार थे।

अुसके कारण।" बापूने कहा : "तो अुनकी नाराजी सह लो। सह लेनी ही होगी।" अिस पर मैंने कहा : अुनका कहना यह है कि तुम हैदराबाद नहीं जा रहे हो और यहीं रहनेवाले हो, तब तो बैंककी अपेक्षा होमरूल लीगमें तुम्हें आने देनेमें गांधीजीको क्या अेतराज़ हो सकता है? अिस पर मैंने कहा कि 'मेरे बजाय संगठनका काम करनेवाला तुम्हें और कोअी मिल जायगा।' तब मुझसे बोले कि 'नहीं, दूसरा तुम्हारे जैसा नहीं मिलेगा।' मेरी स्थिति ज़रा विषम है। मैं अपना जितना मूल्य समझता हूँ, अुससे ये लोग ज्यादा समझते हैं। अिस पर बापूजीने थोड़ेमें निपटा दिया : "लोग हमारी जो कीमत लगायें, वह हम स्वीकार कर लें, तब तो मरनेकी ही नौबत आ जाय। वे भले ही अैसा कहें, अुसके साथ तुम्हारा सरोकार नहीं। जब तक तुम बम्बअी रहो, तब तक शामको दो घण्टे बिना वेतन लीगकी सेवा करते रहना काफी है।"

अैसी स्थिति है। पत्र लम्बा हो रहा है, परन्तु ये बातें तुमसे न कहूँ, तो किससे कहूँ? पत्र पढ़कर मुझे वापिस भेज देना, क्योंकि जो शब्द मैंने पत्रमें बापूजीके लिखे हैं, वे लगभग ज्यों के त्यों हैं। संभव है समय पाकर वे भुला दिये जायँ। अपने पिताजीको या और किसीको अपने होमरूलमें शामिल होनेका निश्चय बदलनेके कोअी कारण नहीं बताये हैं। यह बात अैसी है कि पत्रोंमें बताअी जाय तो बेवकूफ़ी होगी। किसी दिन यह पत्र पिताजी और गिन्नी*को शायद पढ़ाअूँगा।

---

* गृहिणीका बंगाली रूप।

हैदराबादमें ३०० रुपया दें तो आऊँ, अैसा तार दिया था। अुसका जवाब नहीं आया। हैदराबाद न गया, तो बापूजी कहेंगे तब तक यहाँ बैंकमें ही रहूँगा और थोड़े समयमें बम्बअीमें मकान लूँगा। बापूजी बुलावें अुस समय जानेकी अभीसे तैयारी करनी है। यह तैयारी बड़ी साधन-सम्पत्तिकी है। भगवान मुझे सामर्थ्य दे! गोखलेजीका अनुवाद* कलसे शुरू करूँगा। सिर्फ़ सवेरे ही थोड़ा-थोड़ा होगा, क्योंकि शामके दो घण्टे तो होमरूलके हैं। तुम्हारी गिन्नी अब अच्छी होगअी होगी।

तुम्हारा
महादेव

पुनश्च:

जिस जिन्दगीको निकम्मी मानकर कभी-कभी अूब जाता था, अुसे अब worth living (जीने लायक) माननेकी श्रद्धा मनमें आ

* १९ फरवरी १९१७ के दिन अहमदाबादमें गोखलेजीकी दूसरी बरसीकी सभा हुअी, अुस समय बापूजीने अपने भाषणमें बताया कि हम हर साल गोखलेजीकी केवल बरसी मनायें, तो अुसका कोअी अर्थ नहीं। कोअी गोखलेजीके सारे भाषणोंका गुजरातीमें अनुवाद कर देनेको तैयार हो जाय, तो मैं छपवानेका अिन्तजाम कर दूँ। अिस परसे मैंने अुनसे आश्रममें मिलकर यह काम करनेकी तैयारी बताअी और यह कहा कि जिसमें मैं महादेवकी भी मदद लूँगा। बापूने थोड़ेसे पन्नोंका अनुवाद करके बतानेको मुझसे कहा। यह अनुवाद अुन्होंने आनन्दशंकरभाअीको देखनेके लिअे दिया और अुन्होंने पास कर दिया, तब काम मुझे सौंपा। सारे भाषणोंमें से चरित्र कीर्तनके भाषणोंका महादेवका किया हुआ अनुवाद और दक्षिण अफ्रीका वगैरा औपनिवेशिक प्रश्न सम्बन्धी भाषणोंका मेरा अनुवाद —ये दो पुस्तकें प्रकाशित हुअी हैं।

गयी है; यद्यपि बापूजीने जो मुझे अितना सच कहकर शर्मसे दबा दिया है, अुसे तो मैं अपने लिअे माननेमें अभी तक असमर्थ हूँ। अितना ही है कि अैसा सर्टिफिकेट मुझे जीवनमें कभी मिला नहीं और कभी मिलेगा नहीं। भविष्यमें मैं किसी कामका निमित्त बन जाअूँ और संसार मेरी प्रशंसा करे, तो भी अंतके ये अुद्गार मेरे अंतरका और जिन्दगीभरका खजाना है।

१०

बापूजीके साथ चम्पारन गये

अूपरकी बातचीत हो जानेके बाद महादेवका चित्त और किसी काममें लगता ही नहीं था। नवम्बरके महीनेमें पहली गुजरात राजनीतिक परिषद गोधरामें हुआी। वहाँ वे दुर्गाबहनको लेकर बापूसे मिलने आये। बापूने कहा कि तुम दोनों कुछ समय मेरे साथ घूमो, पक्का निश्चय बादमें करना। अिसलिअे बापूजी गोधरासे सीधे चम्पारन जानेवाले थे, अुस सफरमें वे दोनों बापूके साथ हो लिये।

पिताजीकी दो आपत्तियाँ

महादेव बापूजीके साथ हो जायँ, अिसमें महादेवके पिताजीको दो आपत्तियाँ थीं। अेक तो अुनका खयाल था कि महादेवका शरीर बहुत नाजुक है। अुन्होंने कभी कोआी मेहनत-मजदूरीका काम किया नहीं। और गांधीजीके साथ तो बहुत मेहनती और कठोर जीवन बिताना पड़ेगा, अुसमें महादेवका शरीर कैसे टिकेगा? दूसरे, अुनका यह खयाल था कि समाजमें

कोओी प्रतिष्ठाका स्थान प्राप्त करनेके बाद अैसे काममें पड़नेकी ही कीमत है। जीवनके आरम्भमें अैसी बातोंमें पड़ने वालेको बादमें पछताना पड़ता है। वैसे कमाने और धन-संचय करनेकी अुन्हें बहुत लालसा नहीं थी। अेक दिन महादेवके घर हम सब बैठे-बैठे चाय पी रहे थे। महादेवके पिताजीके अेक मित्र भी मौजूद थे। घरमें हम जहाँ बैठे थे, वहाँसे अेक मिल-मालिककी कोठी दिखाओी देती थी। पिताजीके मित्रने महादेवसे कहा: "तुम कमाकर अैसी कोठी बनाओ, तब मेरे जीको शांति मिले।" पिताजीने कहा: "भाओी, हमें अैसी कोठी-वोठी कुछ नहीं चाहिये। हमारे मिट्टीके घर सलामत रहें। अिन कोठियोंमें रहनेवालोंके जीवन कैसे होते हैं, और ये लोग कितने सुखी या दुखी होते हैं, अिसका हमें क्या पता लगे? अिसलिअे अिसी स्थितिमें अिज्जतके साथ अपना जीवन बितानेमें मुझे तो पूरा संतोष है।" अिस प्रकार पिताजीकी आपत्ति धन सम्बन्धी नहीं, परन्तु दूसरे कारणोंसे थी। महादेव पिताजीको यह समझाते कि गांधीजीके पास जाकर मुझे कहाँ बड़ा नेता बनना है? मुझे तो छायाकी तरह ही रहना है। अुनके साथ घूमना है, तैयार होना है और शिक्षा लेना है। मुझे नेता बनना हो तो विचार करना पड़े। और गांधीजीको तो प्रतिष्ठा मिल ही गअी है, अतः मेरे लिअे विचार करनेकी बात ही नहीं है।

बापूजीके चरणोंमें बैठ गये

चम्पारनसे घूमकर आनेके बाद पिताजीका आशीर्वाद लेनेके लिअे महादेव अुनके साथ दिहेणमें रहे। अुस वक्त मैं बापूजीके साथ चम्पारनमें था। अेक दिन महादेवका तार

आया कि मैं और दुर्गा आ रहे हैं । मैं अुन्हें लेने स्टेशन पर गया, परन्तु वे नहीं आये । लौटा तो बापूजीने महादेवका तार बताया कि 'पिताजीका जी बहुत दुखता है, अिसलिअे खूब अिच्छा होते हुअे भी आपके साथ शरीक नहीं हो सकता ।' अिस प्रकार तार दे तो दिया, परन्तु तार भेजनेके बाद महादेवकी दुःखी हालत पिताजीसे देखी नहीं गअी। अिसलिअे अुन्होंने आशीर्वादके साथ अिजाजत दे दी। अिस प्रकार तीसरे दिन फिर तार आया कि पिताजीका आशीर्वाद मिल गया है और मैं आता हूँ । मैं अुन्हें स्टेशन पर लेने जा रहा था, तब बापूजीने मुझसे कहा : "नरहरि, फिर दुबारा तार आये कि नहीं आ रहा, तो कैसा मज़ा रहे?" मैंने जवाब दिया, नहीं, आज तो महादेव ज़रूर आयेंगे । अुस दिन महादेव और दुर्गाबहन आये और तबसे जब तक महादेवका देहान्त हुआ, तब तक वे बापूजीमें लीन होकर रहे । अुन्हें तो अिसमें अेक प्रकारके जीवन-साफल्यका आनन्द और संतोष मिलता था। परन्तु दुर्गाबहनका क्या हाल हुआ? यद्यपि अुन्हें दुनियाके अैश-आराम और वैभवकी लालसा नहीं थी। अिस नये जीवनमें भी हमेशा महादेवके साथ रहनेको मिले तो अिससे ज्यादा अुन्हें कुछ नहीं चाहिये था । परन्तु महादेवको तो सदा बापूके साथ घूमते रहना था । जहाँ साथ ले जा सकते हों, वहाँ तो बापूजी दुर्गाबहनको साथ ले जाते, परन्तु अैसा बहुत कम होता था। चम्पारनमें मोतीहारीमें हम सब थोड़े समय साथ रहे, बादमें महादेव बापूजीके साथ कलकत्ता कांग्रेसमें गये । मैं और मेरी पत्नी पूर्व निश्चयके अनुसार अेक गाँवमें पाठशाला चलाने

और ग्राम-सफाओीका काम करने गये। आनन्दीबाओी नामकी अेक कार्यकर्त्रीके साथ पाठशालाका और दूसरा काम करनेके लिअे दुर्गाबहन अेक दूसरे गाँवमें गओीं। तभीसे महादेवसे अलग रहना शुरू हुआ। सहयोग समितियोंके निरीक्षकका काम सतत घूमते रहने और गृह-जीवन न बिता सकनेके कारण अक्सर महादेवने छोड़ दिया था। यह काम दूसरी तरहका, बहुत अूँचे प्रकारका और जीवनको अनन्य और दुर्लभ लाभ पहुँचानेवाला था। परन्तु गृह-जीवन और दुर्गाबहनकी दृष्टिसे तो स्थिति पहले जैसी ही थी। चम्पारनसे साबरमती आये, तब भी जब बापू आश्रममें आते, तब महादेवभाओी भी आते। साथ ही जब आते, तब साथमें मेहमान तो होते ही। वे सब आये हों बापूके साथ, परन्तु अुन्हें रहना अच्छा लगे महादेवके साथ। अिस तरह गृहस्थाश्रमका आतिथ्य-धर्म पालन करनेका लाभ दुर्गाबहनको मिलना और अुसका वे सहर्ष बहुत अच्छे ढंगसे पालन करतीं। परन्तु पतिके साहचर्यसे तो अुन्हें वंचित ही रहना पड़ता। कवि नानालालके काव्यकी नीचेकी पंक्तियाँ अुन पर सचमुच लागू होतीं और दुर्गाबहन अुन्हें अकसर गाती भी थीं:

पानां प्रारब्धनां फेरवु ने
मांही आवे वियोगनी वात जो,
स्नेहधाम सूनां सूनां रे.*

अिस प्रकार अुनका दाम्पत्य जीवन कठोर तपस्यामय बन गया।

---

* भाग्यके पन्ने अुलटती हूँ, तो अन्दर वियोगकी बात ही आती है। मेरा स्नेहधाम सूना-सूना है।

बच्चोंको मत मारो। अेक दिन काकासाहबने महादेवभाअीसे कहा कि ये सब बच्चे कोअी जीनेवाले तो हैं नहीं। हम सबको तंग करेंगे और ये भी दुःखी होंगे। अिसलिअे तुम्हें अेक आध पालना हो तो पाल लो। तुम्हें आपत्ति न हो, तो दूसरोंको मैं मार डालूं। दुर्गाबहन यह बात सुन रही थीं। अुन्होंने काकासाहबसे कुछ कहा तो नहीं, परन्तु आँखोंमें आँसुओंके साथ दरवाजेमें खड़ी रहीं। काकासाहबने यह देख लिया, अिसलिअे चुपचाप चले गये और बच्चोंको मारनेकी बात फिर कभी निकाली ही नहीं।

आम तौर पर अैसा माना जाता है कि सेवा करनेवालेकी बीमार पर बड़ी ममता हो जाती है, परन्तु बीमार तो घरके सब आदमियों पर और सेवा करनेवाले पर हुकूमत ही चलाता है। परन्तु महादेव अिस नियमके अपवाद थे। रोगीकी हैसियतसे भी वे कितने मीठे और आनन्दित रह सकते थे, अिसका अनुभव सन् १९२०में जब वे छः सप्ताह मोतीझरेकी बीमारीमें रहे, अुस समय मुझे हुआ। अुन्हें कितना ही कष्ट क्यों न हो रहा हो, परन्तु अुस कष्टमें भी वे अपना विनोद खो नहीं बैठते थे और आसपासके सभी लोगोंको हमेशा हँसाते रहते थे। अेक दिन वैकुण्ठभाअी देखने आये, तो अुनसे कहने लगे: "बड़े बादशाहसे भी मेरी सेवा अधिक हो रही है। काकासाहब दो बार आकर शरीर दबा जाते हैं, और बरफके चूरेकी पोटली बनाकर अुसे अपने सिर पर दबाकर अुसकी सुन्दर पगड़ी बनाकर सतत मेरे सिर पर रखनेका ठेका नरहरिने ले लिया है। काकासाहब और नरहरि रोज मुझे बिस्तरमें ही गरम पानीमें डुबाये हुअे गीले

आगरा जेलमें, १९२२

बाओीं ओरसे : १. बेरिस्टर ख्वाजा साहब, अलीगढ़ नेशनल मुस्लिम युनिवर्सिटी, २. राजबहादुर साहब, अेटा, ३. महादेवभाअी, ४. श्री जार्ज जोसेफ

अँगोछेसे स्नान कराते हैं, अुस समय काकासाहब अपने आँगनमें अुगाये हुअे हॉलीहॉकके टकटकी लगाकर देखनेवाले फूलोंकी बात कहकर वहाँ जानेकी मेरी अुत्कंठा बढ़ाते हैं, संगीतशास्त्री पंडित खरे दो-तीन बार आकर अपना मधुर संगीत सुना जाते हैं, किशोरलालभाअी कुछ न कुछ बातें करके मुझे खुश कर जाते हैं, स्वामी और छगनलालभाअी सारे दिन 'नवजीवन' में काम करके रातको यहाँ आकर खड़े हो जाते हैं। पिताजी और ये डॉक्टर काका तो यहाँ बैठे ही रहते हैं। और अिन सबके अलावा पंजाबमें कितने ही काममें होते हुअे भी, रोज़ बापूका सुन्दर पत्र तो डाकमें आ ही जाता है। कहो, अितनी सेवा किसीकी होती होगी?" वैकुण्ठभाअीने जवाब दिया : "तुम सचमुच ही अिन सब चीज़ोंके अधिकारी हो, यह सब कुछ सुपात्रके लिअे ही हो रहा है।"

२१

युक्तप्रान्तकी जेलमें

जून या जुलाअी १९२१ में बापूजीने पंडित मोतीलालजीके कहनेसे महादेवको 'अिन्डिपेण्डेण्ट' पत्र चलानेके लिअे अलाहाबाद भेजा था। थोड़े समय बाद मोतीलालजी और जवाहरलालको सरकारने पकड़ लिया और अुसके बाद सरकारसे अुस अखबारके लेखोंका तेज सहन नहीं हुआ, अिसलिअे अुसके दूसरे सम्पादक जॉर्ज जोसेफको भी पकड़ लिया और जिस छापखानेमें अखबार छपता था, अुसे जब्त कर लिया। महादेवने 'I shall not die' (मैं मरनेवाला नहीं हूँ) शीर्षक लेख लिखकर 'माअिस्टो-

बापूजीने अुन्हें आश्वासनका पत्र लिखा। अुसमें बताया कि महादेवको सज़ा हुअी, यह अच्छा ही हुआ। अुन्हें आराम मिलेगा। नहीं तो वहाँ कामका बोझा अितना था कि वे बीमार पड़ जाते। जेलमें अभी कष्ट है, परन्तु मुझे विश्वास है कि थोड़े समयमें ये सब बातें सुधर जायँगी। महादेव तो अैसे हैं कि जहाँ जाते हैं, वहाँ मनुष्योंको अपना बना लेते हैं। मुझे भरोसा है कि मिठास और विनयशील बर्तावसे वे जेलके अनुचित दुःखोंका निवारण कर ही सकेंगे। अिसलिअे धीरज न छोड़िये और कोअी चिन्ता न कीजिये।

महादेवके प्रति किये जानेवाले अिस बर्तावके बारेमें यू० पी०में खूब शोर मचा। सर लल्लूभाअीने वाअिसरॉयको पत्र लिखा। अुसके परिणाम-स्वरूप अुन्हें तुरन्त विशेष कैदी मानकर तमाम सुविधाअें दे दी गअीं। कुल दसेक दिन महादेवको वह अमानुषिक कष्ट सहन करना पड़ा था।

बहनका विवाह

महादेव आगरा जेलमें थे, तब अुनकी बहनका विवाह करना पड़ा। अनाविल जातिमें लड़कीकी शादीमें खर्च बहुत होता है। महादेवको चिन्ता हुअी कि पिताजी अिसका क्या बन्दोबस्त करेंगे। पिताजीको लिखा: "मेरे पास बैंकमें 'फिक्स्ड डिपोज़िट' में २६०० रुपये हैं। अुनमें से अभी निकाला तो नहीं जा सकता, परन्तु आपको जितनी ज़रूरत हो अुतनेके लिअे आप मुझे लिखें, तो मैं मथुरादास त्रिकमजी या वैकुण्ठभाअी या किसी भी और मित्रसे लेकर भेज दूँगा। तकलीफ न अुठाअिये। मैं जेलके बाहर होता तो कुछ अुपयोगी होता।

अब तो आपको ही भार अुठाना पड़ेगा।" अिसी अर्सेमें छोटूभाअी जेलमें मिलने गये, अुनके साथ भी वही बात कहलवाअी। मुझे जो पत्र लिखा, अुसमें बताया कि तुम शादीके मौके पर दिहेण जानेसे न चूकना और मेरे पिताजीसे कहना कि जरा भी तकलीफ न अुठायें। महादेवके पिताजीने भी मुझे लिखा: "महादेव जेलमें है, अैसे समय विवाह करना पड रहा है। अिससे मुझे बड़ा दुःख होता है। परन्तु अुपाय नहीं है। तुम आओगे तो मुझे अुतना सन्तोष होगा।" मैं दिहेण गया और रुपयेकी बात कही, परन्तु अुन्होंने कहा: "खर्चकी सारी व्यवस्था मैंने कर रखी है।"

२२

पिताजीका देहान्त

चूँकि बापूजी जानते थे कि पिताजी अैसा मानते हैं कि महादेवका शरीर नाजुक है, अिसलिअे जब-जब बापूजी अुनसे मिलते तब-तब पूछते: क्यों, महादेवकी तबीयत कैसी है? आपने महादेवको मुझे सौंपा है, अिसलिअे अुसके स्वास्थ्यकी चिन्ता आपको करनी ही नहीं है। फिर भी पिताजीको अेक यह खटका था, अिसे महादेव अच्छी तरह जानते थे। पिता-पुत्रका अेक-दूसरेके प्रति कितना अलौकिक प्रेम था, यह पिताजीके देहान्तके अवसर पर मुझे लिखे हुअे नीचेके पत्रसे प्रगट होता है:

दिहेण (जि० सूरत)
६ जुलाओी, १९२३

प्यारे भाओी,

तुम्हारा आश्वासक पत्र मिला। मुझे मालूम है कि मेरे हृदयके साथ तुम्हारा हृदय भी रो रहा है। तुम्हारी कमी आश्रममें जब तार आया तभी मालूम हुआी थी।×

देहान्त अकल्पित संयोगोंमें हुआ। सूरत प्रान्तीय समितिकी बैठकके समय सौभाग्यसे घर आनेकी मेरे जीमें आ गआी। अुस समय जो मिल लिया, सो आखिरी मुलाकात थी। अुस वक्त अुनका स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा था। मरनेके चार-पाँच रोज पहले अेक पत्र आया था। अुसमें लिखा था कि स्वास्थ्य कमजोर हो गया है और छातीमें दर्द है। मैंने तुरन्त लिखा कि रविवारको मैं डॉक्टर वियाको सूरतसे लेकर आअूँगा। फिर रविवारको लिखा हुआ अुनका पत्र आया। अुसमें मुझे डॉक्टरके साथ आनेकी मनाही लिखी और नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी पुस्तकें मँगाओीं और देशी रंगकी किताब मँगाओी। अिससे मैं धोखेमें आ गया। मेरा खयाल हुआ कि तबीयत सुधर गआी होगी और पहलेकी तरह घबराहटकी ही कमजोरी होगी। सोमवारको यानी मरनेके दिन लिखा हुआ पत्र मुझे मृत्युके तारके बाद मिला। अुसमें लिखा था कि 'अैसा मालूम होता है कि अिस कमजोरीसे ही प्राण जायेंगे। अच्छा हो गया तो अहमदाबाद आ जाअूँगा।' अुसी दिन शामको 'नवजीवन' या और कुछ पढ़ रहे थे। दूसरे भाओी बैठे थे, अुन्होंने

× अिस वक्त मैं बारडोली ताल्लुकाके सरभण आश्रममें रहता था।

कहा : "आप पढ़ना छोड़ दीजिये, आपकी तबीयत कमजोर है, आराम लीजिये।" पिताजी बोले : "सच बात है भाअी।" ये शब्द पूरे हुअे और अुनका जीवन पूरा हो गया। अिन शब्दोंके साथ ही गर्दन झुक गअी और आँखें बन्द हो गअीं।

मैंने धीरज बहुत रखा, परन्तु बार-बार अुनका प्रेम, छोटी छोटी बातोंमें भी मेरे विषयकी चिन्ता, ये सब बातें जब याद आती हैं, तब आँसू रुकते ही नहीं। ये आँसू तो जब तक अुनका स्मरण रहेगा तब तक रहेंगे। जब आखिरी बार मिला था, तब कहते थे : "अिस बार तेरी छाती भर गअी है। यह नियमित जीवनका परिणाम है। परन्तु तू चप्पल पहनता है, यह ठीक नहीं। स्लीपर पहना कर। पैरोंके तलवे फट जायेंगे।" मैं बच्चा ही हूँ, यह भाव अुनके मनमें से गया ही नहीं था। 'नवजीवन'के मेरे निकम्मे लेखोंको अुनके जैसी ममतासे पढ़नेवाला अब कोअी रहा नहीं। 'महादेव'के हस्ताक्षरोंवाला लेख अुनके लिअे मानो कोअी चमत्कारी वस्तु हो। अुनकी परम अिच्छा अितनी ही थी कि मैं अुनके साथ लम्बे समय तक रहूँ। यह अिच्छा मैंने कभी पूरी नहीं की। अुन्होंने अेक दिन भी मेरी सेवा नहीं ली। जबसे मेरी माता मर गअी, तबसे अुम्रभरके लिअे वे मेरी माता और पिता दोनों ही बन गये थे। पिताका प्रेम कितना हो सकता है, अुसका अन्दाज मुझे अुनके प्रेमसे ही मिला था। आज तो वे ६२ वर्षके थे, परन्तु ८२ वर्षके होते तो भी मेरी आँखोंमें से जितने आँसू आज निकल रहे हैं, अुतने ही फूलझड़ानाके आँसू तब भी निकलते।

'नवजीवन' का अतिरिक्त अंक गुरुवारको न होता और डॉक्टरके साथ न आने और पुस्तकें मंगानेका अुनका पत्र न होता, तो मैं रविवारको ज़रूर अुनसे मिल लेता। मुझे यह खयाल आया ही करता है कि 'देशसेवा' की विचित्र कल्पनाके कारण मैं अन्त समयमें अुनके साथ रहकर अुनका कलेजा ठंढा नहीं कर सका। यह पश्चात्ताप मेरी जिन्दगीमें अेक स्थायी घाव रहेगा।

तुम मेरे पास होते तो तुम्हें बड़ा भाअी× मानकर तुम्हारी गोदमें सिर रखे हुअे रोकर अपना भार हल्का करता। मगर अब कुछ नहीं। अिस कारण तुम्हारे वहाँसे आनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। बरसात तो अिस तरफ अभी नहीं हुअी है, परन्तु अब अेक-आध रोजमें होनेवाली ही है। मैं १५-१६ तारीखको आश्रम जाअूँगा, अुससे पहले तुम्हें पत्र लिखूँगा। अुस समय हो सके तो सूरत आ जाना। परन्तु पत्र न लिखा जाये तो चिन्ता मत करना। अिसीके लिअे आश्रम तो हरगिज़ न आना। तुम मुझसे मिलकर अपनी भावना क्या अधिक दिखा सकोगे?

अभी दुर्गाको दिवाली तक यहीं रहना पड़ेगा। बरसातके बाद यहाँ वापिस अ[illegible] [illegible]यद ले जाअूँ। बरसात तुमसे हो सके तो [illegible] मिल [illegible] चाहिये। अुसने ब[illegible] [illegible]। प[illegible] पिताके तेजके कारण [illegible] अूँची सौतेली माँ है।

× मैं महादेवसे अुम[illegible]

* महादेवकी सौतेल[illegible]

मरनेके बाद हम लोगोंमें मृत्यु-भोज होता है। मुझे अिस चीज़की बुराअीके बारेमें अिच्छाको समझानेमें देर नहीं लगी। मेरे चचेरे भाअी छोटूभाअी और भीलाभाअी दोनों सहमत हो गये। अिसलिअे अेक भी दिन सगे-संबंधी या ब्राह्मण कोअी जिमाया नहीं गया। श्राद्ध तो करेंगे ही, क्योंकि अिसमें मेरी वृत्ति अज्ञानकी है। जो चीज़ समझ नहीं सकता, अुसे पाखण्ड समझकर फेंक नहीं सकता। परन्तु अैसा तय किया है कि श्राद्ध करानेके बाद ब्राह्मणके लिअे ब्रह्मभोज जैसी कोअी चीज़ ही नहीं रहेगी। ब्राह्मणको ज़रूरत हो तो अपने घर सीधा ले जाकर भोजन बना ले। और लोगोंको यह बात पसंद नहीं आअी, परन्तु मेरे लिअे तो अपने निश्चयों पर अमल करनेका यह पहला ही मौका था। मैं कैसे विचलित हो सकता था? मेरे 'कॉम्प्रोमाअिज़' के अनुवादका १००० रुपया आयेगा। अुसमें से पाँच सौ रुपये पूज्य पिताजीके निमित्त सवा सौ रुपयेकी चार छात्र-वृत्तियोंके लिअे निकालनेका निश्चय किया है। चार लड़के या लड़कियाँ सवा सौ रुपयेमें छः महीने आश्रममें रहकर वस्त्रकला-शास्त्र सीख सकती हैं। तुम्हें यह बात पसन्द है या नहीं, सो बताना।

अब मुझे बार-बार यानी दो-दो महीनेसे आ जाना पड़ेगा। छः महीने तक तो अिच्छासे बाहर नहीं निकला जायगा। और ज़मीन जब तक खेतीके लिअे दे न दी जाय, तब तक अुसका यहाँ रहना ज़रूरी है। यह बड़े दुःखकी बात है कि यहाँ घर पर अेक भी पुरुष नहीं रहा। अगर छोटूभाअीका अेकआध भाअी यहाँ रहे, तो अुसे रखनेका प्रयत्न करूँगा। अभी तो अितना ही।

स्नेहाधीन
महादेव

पिताजीका देहान्त हुआ, तब मैं बारडोलीमें सरभण गाँवमें रहता था। ये बरसातके दिन थे और कहीं बरसात आ जाय, तो सूरतसे दिहेणका रास्ता कठिन हो जाय। अिसलिअे अुन्होंने मुझे अुस समय दिहेण आनेकी मनाही लिखी थी। परन्तु पत्र मिलनेके बाद मैं तुरन्त दिहेण पहुँचा। स्त्रियाँ रोना-पीटना न करें, अिसके लिअे गरुड़ पुराणकी कथा करानेका रिवाज है। महादेवने कभी गरुड़ पुराण पढ़ा या सुना नहीं था। अुसके सुननेसे चित्तकी शान्ति होती होगी, यह मानकर आग्रहपूर्वक कथा करवाअी। परन्तु अुसमें तो यमकी मार और नरककी यातनाओंके घोर वर्णन सुनकर अुनका खयाल हुआ कि अैसी चीज़ किस लिअे पढ़वाते हैं? मणिशंकर मास्टर कहने लगे: "अिसमें जो अन्तिम अध्याय है, अुसमें ज्ञानकी बातें हैं। परन्तु ये लोग अुसे जान-बूझकर नहीं पढ़ते। अुसे अशुभ मानते हैं।" फिर तो मास्टरने संस्कृत गरुड़ पुराण मँगवा दिया और महादेवने अथसे अिति तक अुसे पढ़ डाला। अुसका अन्तिम अध्याय अुन्हें बहुत ही शान्तिप्रद मालूम हुआ। अुन्होंने कहा: "अिसमें तो पिछली सब बातों पर पानी फेर दिया गया है।" छोटूभाअी कहने लगे: "अिसे पढ़ें तो भूखों न मरें? हमारे पौराणिक समझदार और व्यावहारिक हैं, अिसीलिअे नहीं पढ़ते।"

महादेवभाअीने अिस विषय पर 'नवजीवन' में अेक लेख लिखा है और गरुड़ पुराणके अिस न पढ़े जानेवाले अध्यायके साररूप श्लोक अनुवादके साथ अुसमें दिये हैं। (देखिये 'नवजीवन' भाग चौथा, विशेषांक २१वाँ, २६ जुलाअी, १९२३।)

२३

महादेवभाअीकी संपद्

अब मैं यह लेख बन्द करूँगा। मुझे तो महादेवभाअीके जीवनका अुनके आश्रममें भरती होनेसे पहलेका वृत्तात देना था। अुनके पिताजीका देहान्त १९२३में हुआ, अिसलिअे अुनके विषयमें लिखते हुअे कुछ आगेकी बातें आ गअी हैं। वैसे अिस लेखमें तो यही बताना था कि महादेवभाअी कैसी और कितनी संपद् — चरित्रबल, भक्तिपूर्ण हृदय, बुद्धि, विद्याकला और होशियारी — लेकर आये थे। अुनका आगेका जीवनचरित्र तो हम अुनकी डायरियोंमें क्रमशः विकसित होता हुआ देखेंगे। और भाअी प्यारेलाल, जो सन् १९२० से ठेठ महादेवभाअीके देहान्त तक सब कार्योंमें अुनके साथ ही थे, अुनका विस्तृत जीवन-चरित्र लिखनेवाले ही हैं। अूपर बताअी हुअी संपद् लेकर महादेव बापूजीके पास आये और अुससे, जैसा किशोरलालभाअीने लिखा है, वे "अेक विद्वान तत्त्ववेत्ता, साहित्यिक, कवि, मधुर गायक और कला-रसिक होते हुअे भी केवल अपने स्वामीके लिअे ही नहीं परन्तु अपने मित्र, पत्नी तथा नौकरके लिअे भी और ज़रूरत पड़ने पर तो किसीके लिअे, अुसका मलमूत्र साफ करनेवाला भंगी; परिचर्या करनेवाली नर्स; कपड़े धोनेवाला धोबी; भोजन बनाकर खिलानेवाला रसोइया; साफ नकल कर देनेवाला कारकुन; लिखा हुआ सुधार देनेवाला शिक्षक; अधूरा काम पूरा कर देनेवाला सहयोगी; हमारे विचार समझकर अुन्हें

अच्छी तरह लेखबद्ध कर देनेवाला मंत्री; हमारी तरफसे किसी नाज़ुक कामको होशियारीसे पार लगा देनेवाला दूत; हमारे पक्षका अच्छी तरह अध्ययन करके हमारे लिअे लड़नेवाला वकील; अपने स्वामी और हमारे बीच कोई गलतफहमी पैदा हो गई हो तो अुसे दूर करानेवाला विष्टिकार; पितृ-भक्ति, स्वामी-भक्ति, मित्र-भक्ति पत्नी-प्रेम और पुत्र-प्रेम आदि सब संबंधोंको यथायोग्य सँभालनेमें पराकाष्ठाका प्रयत्न करनेवाला तुलाधार; करुणाजनक परिस्थितिमें पड़ जानेवाले स्त्री-पुरुषोंको आश्वासन और शरण देनेवाला बंधु और इन सब संबंधोंको सँभालते हुअे भी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा, धन, यश आदिका लोभ, कामादि विकार, कलासौन्दर्य वगैराके शौकके परिणामस्वरूप और स्वभाव-सिद्ध दाक्षिण्यके कारण पैदा होनेवाले मोह-माया वगैरा प्रलोभनोंके विरुद्ध अपने आपको बचाते रहनेवाले सावधान साधक बने।”